अभ्यास में शब्द और प्रकाश का अनुभव करती है। बड़े–२ गुरू और महात्मा कहलाने वाले जरूरी नहीं कि शब्द–प्रकाश का अनुभव करें। अब यह बात मैंने तेरे को बता दी है, तू अपना काम कर। दूसरे क्या करते हैं? क्या कहते हैं? उनका क्या साधन है? क्या अनुभव है? इस बात को कभी मत विचार कर। अपनी तरफ से सब बहुत बड़े सन्त हैं। शब्द और प्रकाश का तथा और भी कोई ऊँचा अनुभव है, तो करते होंगे। चुपचाप गुरू को हाथ जोड़कर, सिर झुका कर राधा– स्वामी बोलती रह। किसी भी तरह का काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार से बचती रहो। यह साधु के लिए रूकावट है साधन में। मीठी बोली, सहनशीलता को अपनाते हुए अपने से सबको भला और पवित्र समझो तथा कमल के फूल जैसी रहनी बनाओ, जो कीचड़ और पानी में रहकर हमेशा उससे ऊपर रहता है।

यह दुनिया गुरू की बनाई हुई है। बहुत सोच कर बनाई है। उसकी बनाई हुई वस्तु में हम यदि कमी निकालें या बुराई देखें, तो ठीक बात नहीं है। तू किसी में बुराई मत देखना। यह तो तेरे गुरू का बगीचा है। इसमें कांटे, फूल, फल सब कुछ हैं। इसमें भले, बुरे, ठग, झूठे, सन्त, दयालु अपनी–२ जगह सब कुछ है। तू सन्त बन। सन्त के गुण पुस्तक से पढ़ लेना। 'फकीर लक्षण'.....

पर उपकारी जन हितकारी, गुरू के आज्ञाकारी।
अवगुण त्यागी, गुण के ग्राही, दया भाव चितधारी।।
निज चित सोधें मन पर बोधें, जीव दोष नहीं दष्टि।
अपने भाव में बरतें निसदिन, करें दया की वष्टि।।
दुःख क्लेश सहे अपने सिर पर, जीव का करे सुधारा।
भव दुःख भंजन काम निकन्दन, जम से दें छुटकारा।।
कठिन नाम है कठिन काम है, कठिन फकीर कमाई।
जग के भव दुःख नासें पल में, जग फकीर जब आई।

कमल। अपने विचार मीठे बना, अपनी दष्टि सुन्दर बना। जो तू देखती है – सब तेरे गुरू का स्वरूप है। वही सबको खेल खिला रहा है। साधन बहुत ही सहज में, खुश मन से मुस्कराते हुए, मीठा बोलते हुए करती रहा कर। मैं अपनी कमल को बहुत ही निराली, मीठी, प्यारी साधवी देखना चाहता हूं।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O. Dandu
Distt. Churu
2.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम प्यार, आशीर्वाद व राधास्वामी। कल शाम को लगभग 4 बजे प्यारी बेटी दया का भिवानी से फोन आया था कि वह भिवानी पहुंच गई है। उसके गुरू ज्ञान की प्राप्ति में उसकी लड़की बड़ी रूकावट है। माया का जाल है, परन्तु करे भी तो क्या करे? लड़की बहुत सरल है, परन्तु यह बच्ची इसकी रूकावट है। खैर जीवों के भिन्न–२ तरह के माया के जाल हैं। यह इनके कर्मो का फल है।

तू अपना रास्ता तय कर, नियमित साधन–अभ्यास, प्रेमभाव, आश, विश्वास रख कर करो और सत्संग का पूरा लाभ उठाओ। संग तेरे अन्दर है और संग भी अन्दर ही करना है। जो बात बाहर के संग वाली थी, तेरे ही भाग्य व शुभ कर्म से तेरे को मिल गई है। जब मेरे से मिलने का समय मिले, बहुत ही ध्यान, श्रद्धाभाव, प्रेम भाव से संग करके मिलना। इससे जो भी छोटी मोटी कमी है, पूरी हो जायेगी।

मैं तेरी सेवा, प्रेम, श्रद्धा भाव की कदर करता हूँ। तन की सेवा, धन की सेवा – यह तेरे मन की लगन, प्रेम, विश्वास, भक्तिभाव व लगन के चिन्ह हैं। असली सेवा है –

दर्शन करे, वचन पुनः सुने।
सुन-२ कर, नित मन में गुने।।
गुन-२ काढ़ि लेय तिस सारा
काढ़ि सार तस करे आहारा
कर आहार पुष्ट हुआ भाई
भय भो-लाज सब गई नसाई
गुरू का रूप लगे अस प्यारा
कामिनी पति मीन जलधारा।।

यह बात तो मानते हैं कि शरीरधारी गुरू की बहुत कपा है, जो अपने प्यारे चेले, चेली को भेद बताता है, और हर तरह से सहारा देता है। परन्तु बात यह है कि तेरे अन्दर जो शब्द गूंज रहा है, उसके साथ सुरत को लगाए रखना। बस बात समझने और अनुभव की यही है।

यह बात बहुत बड़ी है। तू भाग्यशाली है, जो अपने साधन–

Capt. Lal Chand
V.&P.O. Dandu
Distt. Churu 33100
6.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। हर तरह से गुरू कपा है। तेरे लिए शुभ भावना व आशीर्वाद है। अब नया वर्ष शुरू हुआ है और शताब्दी भी बीसवीं से उल्टा दो हजार से शुरू हुआ है। कारण कुछ भी हो, यहां हमेशा समय–२ पर सब कुछ एक रस या एक जैसा नहीं रहता है। मेरा भाव यह है कि यह धर्म कर्म, जो हम समझते हैं, यह भी समय के अनुसार बदलते रहते हैं। इसी में भलाई है। धर्म का भाव, उसके साधन अभ्यास के तरीके, उसके टेकनिकल शब्द – ये सब समय के साथ बदल जाते हैं। पहले भी यह बदले हुए हैं। परन्तु अभी तक जो लकीर के फकीर हैं, यानी खुद अनुभव हीन हैं, वे लोग पुनः वही गीत गा रहे हैं।

मैंने पहले पत्र में तेरे को इस समय के साधु या साधवी की रहनी के विषय में कुछ ईशारा किया था कि तू इस समय की साधवी है। न तो भगवॉ वस्त्र वाली है और न सफेद वस्त्र वाली है। यह किसी समय की साधवियों के वस्त्र थे। मेरी बात समझो। मैं तेरे को साधु या साधवी की रहनी – जो इस समय के अनुसार है, बता रहा हूँ। साधना क्यों करते हैं? इस मन के अन्दर इस जन्म के तथा पूर्व जन्मों के बहुत से संस्कार भरे पड़े हैं, जिसके कारण मन से आदमी दुखी–सुखी होता रहता है। पहली बात मन को वश में करने के लिए, दूसरी बात नए संस्कार, अच्छे, सुन्दर सुखात्मक ही ग्रहण करें, घटिया न ग्रहण करें। यहां एक बात ओर है – जो अमर होना चाहे या मुक्ति चाहे, उनको चाहिये कि नये संस्कार ग्रहण ही न करें। उनके लिए कर्म तो जरूरी है, परन्तु वह निष्काम कर्म योग है।

अब यह साधना हिमालय की गुफाओं या जंगलों में करने का समय नहीं है। तू जितने लोग देखती है जो खुद अपनी आजीविका ना कमा कर – क्या नाथ? क्या गद्दीपति गुरू? क्या पीर? क्या ब्रह्मकुमारी? यह सब पुराने समय की बाते हैं। सांप चला गया हे – उसकी लीक पीट रहे हैं। यह बात तेरे को ही समझनी है कि तू आधुनिक समय की साधवी है। गुरू ने तेरे को यही बताना है कि सहज में साधन कैसे करना है? बैठ कर कैसे करना है? चलते फिरते कैसे करना है? साधन का मतलब हमेशा खुश मिजाज रहना है। खुश मिजाज हमेशा साधन, सुमिरन, ध्यान तथा भजनकरने से होगा, मुंह चढ़ा कर या त्यौरी चढ़ाकर नहीं। अपने साथियों के साथ हमेशा Smiling face रहो। मीठी बोलो, प्रेम–भाव से व्यवहार करो। तू जो व्यवहार अपने साथ चाहती है, वही दूसरे के साथ करो।

जैसे मैंने यहां गांव में तेरे को कुछ रूखी बातें की थी। तू अपने गुरू से मीठी बात सुनना चाहती थी। अभी तक तू उस व्यवहार को भूली नहीं है। तू मेरी रहनी को जानती है। परन्तु वह संस्कार अभी तक तेरे याद आते ही – सब कुछ भूल जाती है और मुझे उलाहना देती है।

मेरी बात समझ गई होगी कि साधवी के लिए रोज दीपावली होती है। गुरू अंग संग रहता है। जब भी कुछ खाती है, पीती है – गुरू का ध्यान करके। जिसे तू देखती है, मिलती है, सब में तेरे गुरू जी बैठे हैं। जो लोग काम कर रहे हैं, अपने–२ कर्म से मजबूर हैं। दया भाव रखो, किसी के वश की बात नहीं है। तू अपने आप में मस्त रहकर गुरू का नाम मन ही मन लेती रह। बाहर के गुरू ने यह समझाना है। असली गुरू शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल तेरे अंग संग है। शेष फिर।

तेरा फकीरमय लालचन्द

Capt. Lal Chand
Dandu
8.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

राधास्वामी। (नाम–दान)

आज तेरे को इस नाम के विषय में कुछ लिखना चाहता हूं। जब मैं तेरे पास आता हूं तो तेरे को शरीर की सेवा व दूसरे कामों से फुरसत ही नहीं मिलती और जहां सत्संग होता है, वहां संगत ही ऐसे दर्जे की होती है कि यह चर्चा ही नहीं होती है।

यह नाम का काम पूर्ण अनुभवी का है। नाम किसके लिए है – जो आदमी अशान्त होते हैं, उनको शान्ति दिलाई जाये। अब यह अशान्ति के भिन्न–२ कारण होते हैं। जो आदमी जिस कारण से अशान्त है, अनुभवी पुरूष उस कारण को जानकर उसकी प्रकति के अनुसार तरीका या ढंग अपनी जुबान या वचन से बताता है और उस आदमी को शान्ति मिल जाती है।

अब तू मेरे साथ रहती है और जो लोग तेरे से मिलते हैं लगभग अधिक गुरू के चेले होते हैं और वे अशान्त होते हैं। कोई धन से, कोई मन से, कोई साधन–अभ्यास से, तो कोई कई तरह के भ्रम–शंकाओं से, वैसे भेड़ चाल में इन सबका अपने गुरू से नाम लिया हुआ है और ये शाम–सुबह कानों में अंगुली डालकर बैठते भी होंगे, परन्तु होते अशान्त हैं। यह जो कानों में अंगुली डालकर जिस चीज़ का अनुभव करना होता है, वे तो बहुत ही कम लोग हैं, जो इस बात का अनुभव करने की अशान्ति के लिए गुरू से नाम लेने जाते हैं।

किसी को धन का अभाव होता है, तो अनुभवी गुरू उसको काम करने का ढंग बताता है और अपनी हस्ती के अनुसार खर्चा करना बताता है। किसी का मन चंचल होता है, तो उसका कारण जानकर उसको स्वस्थ बनाने का ढंग बताता है। किसी को सही

समझ या विवेक न होने से अशान्ति होती है तो उसको अपने सत्संग में समझ विवेक देता है। किसी का साधन–अभ्यास न बनता हो तो उसके कारण को जानकर सही ढंग बताता है या वह कारण समझा देता है, जिससे उसका साधन बन जाये। अब समझ गई होंगी कि नाम गुरू के अधीन है।

प्यारी बेटी, तेरे को एक दो साल का समय अनुभव होने में इसलिए लगा कि तुझे पूर्ण विश्वास नहीं बना था। तेरी लगन सच्ची थी, परन्तु विश्वास जब तक निश्चयात्मक हो, समय लगता है। अब अपने अन्दर ठहरने का समय सहज में बढाती जाओ।

मुझे उस परम शान्ति व परम आनन्द वाले नाम की लगन थी और केवल 20 मिनट या आधा घण्टा परम दयाल जी के दर्शन करे, बात सुनी और उसी ही समय वह नाम गूंज गया और अब तक खाते, पीते, बोलते तथा जीवन के सब खेल खेलते हुए नाम से जुड़ा रहता हूँ। हर आदमी इसपर विश्वास नहीं कर सकता है। वैसे वाणी में कबीर, गुरूनानक देव ने बहुत कुछ लिखा है।

'नानक नदरी नदर निहाल' सच्चे मन से किसी पूरे अनुभवी पुरूष का दर्शन करते ही मनुष्य निहाल हो जाता है। यानी वह वस्तु, जिसकी चाह हो वह मिल जाती है।

अब तू नाम की बात समझ गई होगी कि जो सबको एक ही दवाई देता है, वह अनुभवी डाक्टर नहीं है। रोग को जानकर, उसी के अनुसार दवाई देना, योग्य डाक्टर का काम है। यही बात पूरे और अनुभवी सतगुरू की है। जो सच्चे मन से उसकी शरण में जाता है, उसको लोक व परलोक के दुःखों को दूर करने की दवा देता है। इसका नाम ही अध्यात्म में नाम–दान है।

मैं नाम–दान देता हूं। जो मेरा सत्संग है, वही नाम है। सच्चे मन से जो मेरे सत्संग में इच्छा लेकर, विश्वास से मेरी बात सुनता है, उस पर अमल करता है, उसका काम बन जाता है। पत्र ध्यान से पढ़कर पास रखना।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
10.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम आशीर्वाद व राधास्वामी। तेरा गुरू भक्ति में विश्वास है। तू इस विषय को अच्छी तरह समझती है। कबीर साहब ने कहा है –

गुरू को मानुष जानते, ते नर कहिए अन्ध।
दुःखी होय संसार में, आगे यम का फन्द।
गुरू को मानुष जानते, चरणामत को पान।
ते नर नरके जायेंगे, जन्म-२ होय स्वान।।

दाता दयाल ने कहा है –

'गुरू पर डॉरू तन मन वार, गुरू पर जाऊं मैं बलिहार।'

तेरे प्रेम, विश्वास और सेवा की मैं कदर करता हूँ। यह गुरू भक्ति का मार्ग बहुत ही आसान, प्यारा, सहज का है। परन्तु जन्म–जन्मान्तरों के शुभ–२ कर्म हों, उनके भाग्य में यह मार्ग आता है। पहले किसी पत्र में तेरे को नाम के विषय में टूटे फूटे शब्दों में अपना विचार लिखा होगा।

गुरू सबसे ऊँचा ईष्ट, आदर्श या Ideal को कहते हैं। यह बात पढ़ते सब हैं। आजकल बहुत कम आदमी होंगे, जिन्होंने गुरू नहीं बनाया है, परन्तु जो बात ऊपर लिखी है, उस भाव में बहुत कम हैं। राधा–स्वामी वाणी के अनुसार गुरू की चार प्रकार की सेवा है। 1. तन की 2. धन की, 3. मन–बुद्धि की, 4. एकान्त में बैठकर साधन–अभ्यास करने की। अब यह तो कोई करता नहीं, केवल मुफ्त में गुरू महाराज से समझ, विवेक, अनुभव और ज्ञान चाहते हैं, जिससे जीव को शान्ति मिल जाये। अब संसार में देना तो कोई चाहता नहीं। यहां नियम है, इस हाथ से दो और दूसरे हाथ से लो। एक तो समझ, विवेक, अनुभव और ज्ञान नाम गुरू का है। यह जो खुद अनुभवी हो, वही बता सकता है। अब यह बात जानना कोई आसान

तो नहीं है कि कौन गुरू पूरा है या अनुभवी है, जो समय के अनुसार जीव को ज्ञान दे सके या उसकी अशान्ति को शान्ति में बदल दे। इसके लिए मेरा अनुभव है कि यदि जीव के मन में सच्चाई है – किसी चीज़ को जानने या पाने की तो मालिक या भगवान, जो जीव के अंगसंग है, उसको खुद ब खुद वहां ले जायेगा, जहां से उसकी इच्छा पूरी हो जायेगी। राधास्वामी वाणी में ईशारा किया हे –

गुरू चेला व्यवहार जगत में, झूठा बरत रहा।
का से कहूं समझ नहीं काऊ, धोखे धार बहा।।
गुरू तो मान प्रतिष्ठा चाहे, चेला स्वार्थ संग बंधा।
सच्चा मार्ग सुरत शब्द का, सो अब गुप्त भया।।

परन्तु यह मार्ग तो खास–२ के लिए है, जो अपने निज घर जाना चाहता है और जिसे संसार से वैराग्य हो गया हो। उनकी श्रेणी में तू आती है। यह सुरत–शब्द का मार्ग तेरे लिए है। आम लोगों के लिए संसार का जीवन घरेलु, सामाजिक, धार्मिक व सुख–शान्ति का है। उनके लिए दूसरी तरह की शिक्षा जरूरी है, जो पूरा अनुभवी गुरू जानता है कि क्या सत्संग या समझ उनको देनी है।

गुरू महिमा बहुत बड़ी है। जो ऊपर शब्द कहा है –''गुरू पर डांरू तन–मन वार, गुरू पर जाऊं मैं बलिहार।'' मेरे विचार के अनुसार कमल, वह बहुत ही भाग्यशाली मनुष्य है, जिसको जीवन में गुरू मिल गया है। उसका लोक और परलोक दोनों बन जाते हैं। तू यह समझ ले कि जिन्होंने गुरू तो बना रखा हैं, परन्तु शान्ति नहीं है, उनको गुरू मिला नहीं है। दूसरी बात, उनको गुरू की समझ नहीं आई है। वह तो गुरू को मनुष्य ही समझ कर व्यवहार करते हैं और इस संसार में दुःख–सुख का धक्का खाते हैं। उन्होंने गुरू का सहारा नहीं लिया है। तू कई बार कहती भी है कि गुरू के शरीर का भी सहारा है, जो मुझे अभी तक जरूरी है। यह बात ठीक है, क्योंकि समझ, विवेक, अनुभव और ज्ञान तो शरीरधारी पुरूष की कपा से ही मिलेगा। यह एक दिन की बात नहीं। हर काम के लिए समय जरूरी है। यानी जीव सहारा चाहता है।

तो आज का कबीर साहब का शब्द है कि गुरू स्वरूप को भूलकर भी मनुष्य नहीं समझना। उसको मालिके कुल मानकर, प्रेम–विश्वास–आश रखकर, माथे में रखो। तेरे सब इस लोक और परलोक के काम होंगे। कर्मो को भोगते हुए खुश मिजाज, हंसमुख रहकर अपना साधन–अभ्यास करती रहो। गुरू तेरे अंगसंग है, कमल। दूसरा दाता दयाल का शब्द कितना प्यारा और समर्पण का है – ''गुरू पर डारूं तन मन वार''। जिसने गुरू को मालिके कुल समझ कर, उस पर सब कुछ न्यौछावर कर दिया, बस उसके वह मालिक अंगसंग हैं और सच्चाई भी यही है कमल। हमारा यहां कुछ भी नहीं, सब कुछ उसी का दिया हुआ है। यह तन, मन, धन, बुद्धि यानी सब खेल उसका है और जीव अपना समझता है – यह अंहकार है। शेष कभी फिर।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
Dandu
12.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम आशीर्वाद व राधास्वामी। सुबह फोन आया। तूने देहली वालों का हाल बताया, अतः विचार आया कि तेरे को कुछ लिखूं।

मैंने पहले तेरे को लिखा होगा कि यह दुनियां गुरू महाराज (भगवान) ने सोच समझ कर बहुत ही सुन्दर बनाई है। यानी एक सुन्दर बाग है, जिसमें हर प्रकार के फूल, पौधे इसमें हैं। कांटे भी, फूल भी सब कुछ इस बाग में हैं।

तू साधवी है। तू अपने निज घर जाना चाहती है। तेरा रास्ता ओर है, दुनिया का कुछ ओर है। परन्तु रहना इसी ही दुनियां में है और जो दुनियादार हैं, उनके साथ मिलकर काम करना है और दुनियां के व्यवहार सब करने हैं। तू यहां शहद की मक्खी बन कर

अपना जीवन गुजार, जो फूल पर सहज में बैठकर उसका रस लेती हैं और फूल की तोड़ फोड़ भी नहीं करती।

यहां संसार में कांटेदार झाड़ी भी हैं । गोबर के भोंड भी हैं और तरह–२ के जीव अपने–२ स्वभाव के अनुसार कर्म कर रहे हैं, यानी अपना खेल सब कर रहे हैं। देखती जा सबको ऊपर मन से और किसी को भला बुरा मत कह। यह सब मजबूर हैं – अपना कर्म भोगने के लिए।

तू इस युग की साधवी बनकर साधना कर। पीछे जो साधु या साधवी हुए हैं, वो पुराने समय के या गए समय के थे। उनका लिबास भी ओर था। जैसे भगवा कपड़े, सफेद कपड़े, उदास रहना, अकेले, एकान्त वास करना तथा मांग कर निर्वाह करना। कुछ साधु, साधवी अभी भी पिछले समय की लीक पीटते हैं। भगवां पहनते हैं, सत्संगियों का खाते हैं। कमल, जो साधु–साधवी खुद अपनी रोटी कमा कर नहीं खाता, उसकी साधना कभी नहीं बन सकती। वह दूसरों को धोखा नहीं दे रहा, अपने आपको धोखा दे रहा है।

तेरे को यह कहना है – अच्छा खाओ, अच्छा पहनों, अच्छी तरह रहो, खुश रहो, हंसमुंख रहो। जब विचार करो, तो सुन्दर , नहीं तो सहज में नाम का मन ही मन सुमरिन और गुरू स्वरूप माथे में रहे। बात अपने मन की खुशी, उमंग, प्रेमभाव से मालिक में लगाने की है। साधना मन में करनी है। मन तरह–२ के विचारों में उलझता है, सो इसको मालिक के प्रेम की आदत डालनी है और उसका अटल विश्वास बनाना है, यह है साधना। बाकी जो शरीर, कपड़ों का सांग है, हो सकता है पहले समय में ठीक होगा, परन्तु अब तो यह एक दिखावे का ढंग है। इस समय का धर्म यह नहीं है। तू सहज में साधना करती जा। किसी को पता भी न चले कि तू साधना कर रही है। साधना तूने अपने मन से मन ही मन सहज में करनी है। जब भी कोई परिवार का या दूसरा तेरे से मदद चाहता है, तो मीठा उत्तर दे दिया करो कि गुरू महाराज आपको सद्मति दें – मेरी यही प्रार्थना है। यानी हमारा परिवार से लेना–देना है,

इसलिए उनसे भागकर कहां जाओगी? हंसते हुए खुश मन से, प्रेम भाव रखकर जो भी मदद कर सकती हो, करती जाओ। दुःखी मत होओ, चिन्ता भी मत करो। उनके कर्म तो वही भोगेंगे। ''तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी''। उनको मीठा सहारा दे – प्यार से। जो लिखे – प्यार से और जो बोले प्यार से। यह उनके लिए दवाई है।

अगर अभी भी समझ में नहीं आई तो अब सुन – भगवान् कष्ण गीता में अर्जुन को कहते हैं कि तू मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे सब पापों से बचा लूंगा। मैंने तेरे को जो लिखा है, उसके अनुसार व्यवहार कर। मैं तेरे को, तेरी बहनों को, बहनोइयों को, परिवार को, तेरे प्यारे रिश्तेदारों व तेरे भक्तों को हर कठिनाइयों में रक्षा करूंगा। तू बेफिकर रह कर अपना साधन अभ्यास करो। खुश रहने की आदत बना। तेरा सब काम मैं कर दूंगा।

जब भी साधना में बैठे, सब कुछ गुरू स्वरूप को सौंप दिया कर। वह मेरा हर समय रक्षक है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
Dandu
17.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। मैं एकान्त में बैठा अपनी मस्ती में धूप सेक रहा था कि अचानक ही एक गांव का आदमी आया, राम–राम करके बैठ गया। कुछ देर चुप रहा, फिर बोला कप्तान साहब। कोई ज्ञान की बात कहो। मैं अपनी हालत में मस्त था, दूसरा वह इस विचार का आदमी नहीं था। परन्तु मैंने उसको कहा – भाई। कुछ न कुछ काम करा करो, बेकार मत रहा करो। तू जानती है कि इस समय का आदमी काम नहीं करना चाहता। बहुत कम आदमी हैं जिनका मन

काम में लगता है और काम करने में आनन्द खुशी लेते हैं। जो काम नहीं करते, उनका मन छलांगें लगाता है और तेरी मेरी बातें करते रहते हैं।

यह जो भक्ति, ज्ञान, ध्यान के अधिकारी हैं, वे बहुत कम लोग हैं। जो हम गुरूओं के आश्रमों में सत्संगियों की भीड़ देखते हैं, इनको ज्यादा दुःख इस बात का है कि यह दुनियां में दुःखी हैं। न तो इनको नाम का दुःख है, न भक्ति–साधन का दुःख है, इनको जो दुःख है, वह अधिकतर दुनियां की जरूरतें पूरी न होने का है। इनको काम करने का सही ढंग नहीं आता। इनका अपने काम में मन नहीं लगता। जिसका काम में मन नहीं लगता, उसको न तो आनन्द है और न खुशी होती है। खुशी मन की एकाग्रता में आती है। जिस काम में मन एकाग्र नहीं होता, उस काम की कमाई में कुछ बरकत नहीं होती है। आदमी जो भी काम करे, पूरा मन लगाकर करे। चाहे नौकरी हो, चाहे व्यापार हो, मेहनत, ईमानदारी, सच्चाई से जो मन लगाकर काम करेगा, उसको बहुत आनन्द आयेगा। कमाई में बरकत होगी। मन में शान्ति और खुशी होगी। अच्छी नींद आयेगी। यह गीता में जो निष्काम कर्मयोग बताया है, यह आम आदमी का विषय नहीं है। यह तो अर्जुन, कष्ण यानी राजाओं की बात है, जो परम सुख और परम शान्ति चाहते हैं।

मेरी बात समझ रही होगी कि सिद्धि मन के एकाग्र करने में है। चाहे राधास्वामी – राधास्वामी जप कर मन इकट्ठा कर ले, चाहे काम में पूरा मन लगाकर इकट्ठा कर लें। हमें दुनियां में सफलता व हर काम में उन्नति चाहिए, यह तो पूरा मन लगाकर काम करने से हमें काम में आनन्द आये, तब हमारी दुनियां सुन्दर बन सकती है। जिसने इस दुनियां के जीवन में सफलता न प्राप्त की हो, वह अध्यात्म, ज्ञान, ध्यान, भक्ति की बातें क्यों करें?

मेरी बात समझती हो न कि यह भक्ति अनुभवी गुरू का काम है कि जो उसकी शरण में आये, उसका यह संसार सुन्दर बनाए, उसको समझ दें, विवेक दे, अनुभव कराये, ज्ञान दें। यानी जिस

चीज का अभाव देखें, वह उस जीव को समझा कर सीधा रास्ता बताये जिससे उसकी भटक मिट जाये और वह काम का आदमी बनकर अपना जीवन सुख–शान्ति से गुजारे। अब गुरू भक्ति कौन सी आसान बात है। हजारों में कोई एक होता है, जो गुरू–भक्ति करता है और गुरू आज्ञा मानता है।

असली बात यह है कमल। लोग पुरानी लीक पीटते हैं। हर समय का धर्म अलग होता है। हर आदमी के लिए गुरू आज्ञा, सेवा अलग–२ है, यह पूरा गुरू जानता है और जीव की प्रकति के अनुसार ही उसको साधन, सेवा, अभ्यास बताया जाता है जो कुछ किसी को मिलता है, उसके विश्वास, आश, नीयत का फल मिलता है। इसलिए गुरू उसको समझ दे कि तू अपनी नीयत साफ रख और जिसको तूने गुरू माना है, उसको पूर्ण मान। दुनियां का जीवन ठीक बना। जो कोई अधिकारी हो, उसको आगे की तरक्की वाली बात बताकर ज्ञान, ध्यान, भक्ति, प्रेम, सेवा यह सब अपनी रहनी अनुभव के आधार पर बताये। गुरू नानक देव ने कहा है –

'कोटिन में कोई एक, जे नारायण चित्त'।

तो आज का सत्संग है – इस लोक में सुखी रहने के लिए प्रारब्ध कर्म भोगते हुए हर आदमी अपनी योग्यता के अनुसार काम करे और काम में पूरा मन लगाये, जिससे उसको आनन्द आये।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
Dandu
20.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। भीलवाड़ा से सत्यनारायण व शीला का फोन आया था। वे कहते हैं कि चुरू में सर्दी अधिक है, अतः आप हमारे पास आ जाओ। मैंने कहा – भाई। मैं तो अकेला आ नहीं सकता हूँ और कमल की छुट्टी नहीं है। शीला ने कहा – मैं टैक्सी लेकर आपको गांव से खुद ले जाऊँगी, आप आज्ञा दें आने की। कमल, इसका श्रद्धाभाव है।

आज मैं तेरे लिए गुरू भक्ति के विषय में कुछ लिखना चाहता हूँ। मैंने पहले भी तेरे को लिखा होगा कि भक्ति का मतलब है – 'सहारा लेना'। वैसे तो जीवन में सहारे का ही जीवन है। परन्तु अध्यात्म में किसी जीवित पुरूष का, जिसमें विश्वास बन जाए, उसको ईष्ट मानकर सहारा लेना, उसकी संगत करना, दर्शन करना, वचन सुनना और उस पर अमल करना। फिर आती है साधन की बात। सो इस ईष्ट का ध्यान करना तथा जिस नाम का वह सुमिरन बताये और तरीका बताये, उस पर अपनी सुविधा के अनुसार अभ्यास करना। इसी ही साधन से अपनी योग्यतानुसार अन्दर कई तरह के नजारे, गुरू–पीर का स्वरूप तथा प्रकाश आदि कई प्रकार के अनुभव लोगों को होंगे। परन्तु तेरे लिए सफेद रंग का प्रकाश और शब्द है। तेरे लिए नीचे के शब्द नहीं हैं, क्योंकि तुमने मेरी संगत की है। इसलिए मेरी Radiation के अनुसार और तेरी निज घर जाने की चाह या कामना के अनुसार ही तेरे को अपने साधन में शब्द, जो सार शब्द है, निज घर, प्रारब्ध पूरा होने पर ले जाएगा।

अब तू सहज में समय और अपनी सुविधा के अनुसार यह अन्तर का साधन करती रहो और जब अवसर मिले, मेरा सत्संग ध्यान से सुना करो। सत्संग और साधन दोनों बातें जरूरी हैं। तेरे लिए भक्ति अपने अन्तर में शब्द और प्रकाश का सहारा है। गुरू

कौन? गुरू अन्तर में शब्द गूंज रहा है, उसका सहारा लो। परन्तु बाहर के गुरू का सत्संग और एहसान जरूरी है।

अब तेरे को रहनी, तरीका, साधन, अभ्यास का तथा एक इस समय की साधवी का कैसा आहार–व्यवहार इस संसार में रहते हुए होना चाहिए – यह बात जीवित अनुभवी पुरूष ही बताएगा। शब्द, प्रकाश तथा अन्दर जो गुरू का स्वरूप प्रकट होगा या राम, कष्ण, माता जी, बाला जी तथा जो भी ईष्ट जीवन में मान रखा है, वह तो उस भक्त का मन ही प्रकट होता है। यदि उसका मन पवित्र है तो जो बात वह इष्ट कहेगा, सही होगी और मन अभी तक पवित्र नहीं है तो जो बात वह गुरू या इष्ट का स्वरूप कहेगा, ठीक नहीं होगा।

अब बात तेरे को समझ में आ गई होगी कि भवसागर, एक तो बाहर तू देख रही है और एक तेरे अन्दर तरह–२ के जो विचार उठते हैं, गुरू या इष्ट का रूप या जितने भी नजारे आते हैं, अन्दर का भवसागर हैं। इस भवसागर से पार बाहर का गुरू ज्ञान, समझ, विवेक तथा अनुभव कराकर करा सकता है, दूसरा कोई मदद नहीं कर सकता है। कहा गया है कि –***''सदा दीवाली साध के और आठों पहर आनन्द''***।

हम साधन क्यों करते हैं? हमेशा खुश व आनन्द में रहने के लिए। तू इस युग की साधवी है। अपनी रोटी कमा कर खाती है। तू अफ्सर ग्रेड में है। अच्छे कपड़े पहनों, साफ–सुथरी रहो, स्त्री के जामे में हो, अतः बहुत ही मीठा और अदब से बोलो। अपनी क्लास से स्नेह और अपना छोटा बहन–भाई समझ कर व्यवहार करो। आप साधवी हो। आप एक को भगवान् या गुरू मान गई हो। यह बाकी जितने लोग हैं – सब उसी का अंश हैं। इसलिए नफरत कभी भी किसी से मत करो। याद रखो – जो नफरत करेगी, वह भी कर्म बन जाता है और जो प्रेम करेगी, वह भी कर्म बन जाता है। इसलिए हल्के फूल की तरह रहना, साधवी का स्वभाव है जैसे–

कबीरा खड़ा चौक में, सबकी मांगे खैर।
न काहू से दोस्ती और न काहू से बैर।।

गुस्सा किसी पर करना या कठोर बोलना – साधु का काम नहीं है। कहीं गिरावट आ भी जाये, तो फौरन सम्भल जाया कर। गुर है न गिरने का – सुमिरन, ध्यान और भजन। सहज साधन करती रहा कर। सत्संग के लिए पूछ लेना। यदि मौज हुई तो 13.2.2000 को करा दूंगा।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
20.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। आज सुबह एक हायर सैकेण्डरी स्कूल का Principal आया। उसने कहा – मैं 'अमर–ज्योति' कोई संस्था है, उससे जुड़ा हुआ हूँ, परन्तु ध्यान नहीं लगता है। अतः कोई तरीका बतायें। मैंने उसके चेहरे को देखा और उससे यम–नियम इत्यादि की बात की। उसने कहा आपने जो यह ब्रह्मचर्य की बात पर जोर दिया, ऐसा तो मुझे नहीं बताया गया है। मैंने कहा, भाई। मैं जो समझा हूं, आपको देखकर मैंने बता दिया है।

कमल, बेचैनी के बहुत से कारण हैं। जिसमें, कर्म फिलोस्फी तो है ही, यानी मां–बाप की तरफ से मिले हुए संस्कार मुख्य बात हैं या पूर्व जन्म का कह लो। साधन–अभ्यास में जिस मनुष्य को सफलता चाहिए, उसके लिए यम–नियम का ध्यान रखना जरूरी है।

यम - 1. अहिंसा – दिल न दुःखाना, 2. सत्य–झूठ न बोलना, 3. अस्तेय – चोरी न करना, 4. ब्रह्मचर्य – तन मन से पालन करना, 5.दान लेकर ना खाना। इसका सही तरीका अनुभवी पुरूष अलग–२ जीव की प्रकति के अनुसार बताएगा।

नियम - 1. शौच – तन–मन की पवित्रता, 2. सन्तोष – मौज पर रहना, 3. तप–सहनशीलता, 4. स्वाध्याय – साधन तथा सत्संग की

बातें, 5. ईश्वर प्रणिधान – गुरू स्वरूप यानी मालिक पर पूरा विश्वास होना। यह भी गुरू की संगत, सत्संग, सेवा, प्रेम, विश्वास से सहज में सब बातें बन जाती हैं।

यह यम–नियम, साधन, समझ, विवेक, अनुभव, ज्ञान सब कुछ किसी अनुभवी पुरूष की संगत से सहज में ही बन जाते हैं, मैं ऐसा समझा हूँ। यह सब जीव के भाग्य तथा शुभ कर्मो का ही खेल है। सब जीवों के अलग–२ संस्कार हैं। किसी में काम अंग अधिक हैं। किसी में क्रोध अंग अधिक हैं। किसी में मोह – अंग अधिक हैं, किसी में लोभ अंग तो किसी में अहंकार अंग अधिक हैं। गुरू संगत, दर्शन यानी उसकी Radiation का प्रभाव बहुत अधिक होता है। मुझे तो कुछ अनुभव, ज्ञान, समझ, विवेक सब परम दयाल जी की Radiation के प्रभाव से मिला है। मुझे यह दुःख है कि मुझे उनकी जो सेवा करनी थी, मैं नहीं कर सका, क्योंकि मुझे वह समझ नहीं थी कि गुरू मेरे जान–प्राण हैं। ''गुरू पर डालूं तन–मन वार, गुरू पर जाऊं मैं बलिहार''। यह बात बाद में समझ आई। इसलिए इस आयु में उनके ज्ञान का प्रचार करने को हमेशा तैयार हूँ। गुरू ऋण चुकाना चाहता हूं। कमल, तू बड़ी भाग्यशाली है, जो गुरू मत में आकर रास्ता पकड़ लिया है। अब इस रास्ते पर हंसते, खेलते, खाते, पीते, प्रेम, विश्वास, श्रद्धाभाव में चलती जाओ। तेरे लिए है – ''सदा दीवाली साध के, आठों पहर आनन्द''। मेरी बात समझती होगी कि निराश या फिकाई में साधु नहीं रहता है। यह जीवन तेरे लिए रोज दीवाली, होली यानी रोज उत्साह का होना चाहिए। मनुष्य शरीर में ही उत्साह, खुशी का जीवन जी सकते हैं। यह शब्द और प्रकाश का साधन करने वाला वापिस इस शरीर में नहीं आता है। वह तो उस मालिक में ही लीन हो जाता है।

कमल, कलयुग का साधन केवल नाम का आधार है। यह मिलता किसको है। बड़े शुभाशुभ कर्म हों, उनको यह मार्ग खाते–पीते, दुनियां में रहते हुए – ''गुरू का रूप बसाहिए में, आठ पहर गुरू संग रहाये।'' तेरे लिए यह जीवन रोज उत्साह का है। बाकी तू मेरे से

ज्यादा समझ, बुद्धि, विवेक, ज्ञान रखती है। मैं अपनी कमल को हजार साधुओं में निराले ढंग की साधवी देखना चाहता हूं। सुमिरन सहज में, ध्यान सहज में करती रहा कर। गुरू की मौज का सहारा रहे।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Churu (Raj)
23.1.2000

प्यारी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। सन्त मत का साधन शब्द योग है। यह सब तो तूने अच्छी तरह पढ़ा है और इसका अनुभव भी करती है। मुझे इस साधन से जो विशेष लाभ हुआ, वे तेरे को बताना चाहता हूँ। परम दयाल जी में मेरा विश्वास था और शब्द पहले दिन ही खुल गया था। असल में मेरी उमर उस समय शब्द योग की नहीं थी। मुझे न तो धर्म कर्म की समझ थी, न विवेक और ज्ञान की बात ही थी। केवल शब्द की सहज अनुभूति हो गई यह ऐसा कि जब ही थोड़ा ध्यान अन्तरमुख हो, शब्द सहज में प्रकट होता था।

गुरू स्वरूप में निश्चय यानी विश्वास होने से मेरे दुनियां के काम सहज ही बनते गए और नौकरी में बहुत जिम्मेवारी का काम करते हुए मुझे सिद्धियां मिलती गई। यानी जीवन हंसते, खेलते सहज गुजरता गया। यह समझ लो कि गुरू रक्षा हमेशा अंग संग रही। सब तरह की चिन्ता, फिकर,डर, भय से मुक्त रहा। जीवन में झमेले खूब रहे, परन्तु सब काम मेरे हक में होता गया और विश्वास पक्का होने से चिन्ता, फिकर, परेशानी महसूस ही नहीं हुई। यानी कुल बात यह है कि मेरी दुनियां सुन्दर बनी रही।

यह जो मुझे कुछ कष्ट हुआ, यह मेरठ से ही चल रहा था,

परन्तु साधन से सम अवस्था होती रही। रात को 9 बजे से सुबह 4 बजे तक जितनी देर ईलाज चला, में सहज समाधि में रहा। कभी–२ थोड़ी देर के लिए मन के तथा शरीर के मण्डल में आया फिर फौरन मेरी सुरत ऊपर शब्द में टिक गई। मुझे पूरी चेतनता थी, परन्तु शरीर और मन का कोई ज्ञान नहीं रहा।

कुछ वर्ष पहले मैं ऊंट से गिर गया था। मेरी रीढ़ की हड्डी में चोट आई थी। बहुत कष्ट महसूस किया। मैंने यत्न किया कि समाधि में जांऊ। शब्द भी बहुत जोर से प्रकट हुआ, परन्तु उस समय मेरा ध्यान बार–२ दर्द की तरफ आता रहा और आधा घण्टा या एक घण्टे के बाद ही यह समाधि बहुत मुश्किल से लगी थी। इस शब्द के साधन से अब मुझे शान्ति, एक खास तरह का आनन्द और हर तरह से बेफिकरी बनी रहती है।

आगे का तो अनुमान और विश्वास ही किया जा सकता है कि यदि अन्त समय यह साधन जैसा अब बना रहता है, ऐसा रहा तो वापिस नहीं आऊंगा। परन्तु खेल सब उसकी मौज का है। अगर सच पूछो तो मुझे वापिस आने न आने की कोई चिन्ता ही नहीं है। सब खेल कमल, उसकी मौज का है। मैं तो रोज उत्सव मनाता हूँ। रात–दिन खुशी का होता है।

इस शब्द का साधन और गुरू महाराज जी के ज्ञान से अब यह हालात हैं कि यह जीवन उत्सव मानकर अपना साधन, अभ्यास सहज में हो रहा है। तेरे को काफी गुरू ने मौका दिया है – संगत और Radiation के लाभ का। और भी जब तक शरीर है, पूरा लाभ उठाओ। यह सब तरे शुभ कर्म हैं, जो तेरे को इतना सुन्दर अवसर मिला है।

पहले, जीवन में नियम का होना जरूरी है। कम बोलना, कम खाना, सुमिरन ध्यान की आदत डालना। किसी से नफरत न करना। दुनियां गुरू की बनाई हुई है। इसमें सब भले बुरे हैं। वो मजबूर हैं – अपने–२ कर्म भोगने को। तू तो शहद की मक्खी बनकर अपने मतलब का रस फूल से लेकर चल। फूल को भी बिगाड़ मत।

यथायोग्य लोगों से व्यवहार कर। मीठी बोल, खुश मिजाज रहो। किसी के ऐब मत देखो। सब अपने–२ स्थान पर सुन्दर हैं। खुद सुन्दर बन, तेरी सारी दुनियां सुन्दर बन जायेगी। साधन–अभ्यास से सब कमी दूर होती जायेगी।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
25.1.2000

कमल,

सप्रेम राधा–स्वामी। सुबह तेरा फोन मिला, प्रसन्नता हुई। मैं आज तेरे को एक ऐतिहासिक कहानी लिखता हूं।

चीन देश का एक महात्मा लोओत्से नाम का था, जो बुद्ध, महाबीर और सुकरात का समकालीन हुआ है। महात्मा भी अपना साधन, ध्यान करता था। बूढ़ा हो गया तो उस के पास रहने वाले चेलों ने प्रार्थना की कि आपने जो ज्ञान प्राप्त किया है, कुछ हमको प्रवचन दो या पुस्तक में लिखो। तो महात्मा हंस कर टाल देता था कि क्या बताऊं। परन्तु न तो वह कभी प्रवचन देता था और न उसने कुछ लिखा। यह बात देश के राजा तक पहुंच गई। राजा ने भी महात्मा से प्रार्थना की कि आपने जो कुछ अनुभव या ज्ञान प्राप्त किया है – बताओ या पुस्तक में लिखो, जिससे आगे आने वाली पीढी को लाभ हो।

महात्मा जी कुछ लिखना नहीं चाहते थे। परन्तु चेलों का तथा राजा का बहुत दबाव हो गया। एक रात को वह उठ कर अपनी कुटिया से निकल गया। वह चीन देश छोड़कर कहीं बाहर दूसरे देश में जाना चाहता था, भाग कर। सुबह जब चेलों ने कुटिया खाली

पाई, तो यह समाचार राजा को भी दिया कि महात्मा लोओत्से कहीं भाग गए हैं।

राजा ने अपने देश से बाहर निकलने के जो रास्ते पर चुंगी पोस्ट या स्थान थे, उनको हुक्म दे दिया कि महात्मा जी को रोको और उसको कहो कि आप चुंगी चुका कर ही देश से बाहर जा सकते हो। अतः महात्मा किसी देश से बाहर जाने वाले रास्ते की चुंगी पर पहुंचा तो उसको रोका गया और राजा का आदेश बताया गया। महात्मा लोओत्से बोला भाई मेरे पास तो कुछ नहीं है, मैं क्या चुंगी दूं। उन्होंने जैसा राजा की आज्ञा थी कि आपने पूरी आयु जो अध्यात्म की कमाई की है और क्या अनुभव किया है – वह लिख दो।

महात्मा लोओत्से ने जो 90 वर्ष के बूढ़े थे, पुलिस के पहरे के अन्दर बैठ कर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम ''ताओ तेह किंग'' है। यह बहुत छोटी पुस्तक है। उसको शुरू उसने यह लिखकर किया है – ''सत्य कहा नहीं जा सकता और जो कहा जा सकता है, वह सत्य नहीं''। जो उस महात्मा ने कहा वही बात कबीर ने भी कही है:

कहां कहे अनकही भली है, वहां तो वेद शास्त्र कुछ नाहीं
वहां अकथ यह कथा चली है, कहे कबीर सुनो भाई साधो,
सोहं हंसा सर्वमयी है।

अब तूं सुबह साधन अभ्यास करती है और उस थोड़े से समय में तेरे को जो अनुभव होता है या आनन्द, खुशी व शान्ति का जो अनुभव होता है, उसको लिखा नहीं जा सकता है। यह तो कोई इच्छा, चाह या सोख हो तो किसी अनुभवी की संगत में जाकर खुद अनुभव कर सकता है।

आपने मेरे से भी सत्संग सुना होगा कि मैं अब उससे नेट हूं। अब इसे कोई क्या समझेगा। कुछ भी नहीं समझ सकता, छोड़ कर हजारों करोड़ों में एक आदमी जो खुद उसका कुछ अनुभव करता है।

अब इस कहानी के ज्ञान पर आते हैं। किसी ने भी आज तक यह नहीं बताया कि लोओत्से ने क्या प्राप्त किया था, जो बताना नहीं चाहते थे और बताने में वह बात आती नहीं। वह तो

उनको ही मालूम होगा। परन्तु मैं क्या समझा हूं, वह तेरे को बताता हूं, ताकि मेरे पर तेरा कर्जा न रहे या गुरू बनने के कर्जे से मुक्त हो जाऊं।

कमल, लोओत्से महात्मा को सदा रहने वाली शान्ति मिल गई थी। अब शान्ति को कोई क्या बताये। उसका तो अनुभव वही कर सकता है, जिसको अब ओर किसी वस्तु की चाह ही न रहे। जिसको कोई अनुभवी सज्जन मिल जाये, उसको इसी ही जीवन में सहज में हंसते, खेलते, खाते पीते, इस मनुष्य जीवन का आनन्द लेते हुए सहज में मिल जाती है और उसको भाग्य से गुरू न मिले तो कठिनता से यह मिलती है।

अब रास्ता तेरे को मिला हुआ है। कुछ अशुभ संस्कारों के कारण गिरावट आती है, सोच समझ कर सम्भलती जा।

चलते-२ जो गिरे, ताहि न लागे दोष।
कहे कबीर जो बैठे रहे ता सिर करड़े कोस।।
सम्भल कर रहो। मेरा आशीर्वाद साथ है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
26.1.2000

कमल,

सप्रेम राधा–स्वामी। यह पत्र जो कल 25.1.2000 को लिखा था, जिसमें चीन देश के सन्त लोओत्से की कहानी लिखी थी, उसी ही विषय में है।

कमल, समय के साथ–२ सब बातें, उनका ढंग, भाव बदलता रहता है। जहां भी आप धर्म का प्रचार देखोगी या सुनोगी, अधिकतर

लोगों को पुरानी लीक पीटते हुए महसूस करोगी इस समय में हर जीव को उसकी प्रकति के अनुसार क्या चाहिए, यह बात तो इस समय में कोई अनुभवी पुरूष, निस्वार्थी या जीव का हितैषी हो, वह सीधा मार्ग बता सकता है। जिस पर चल कर जीव को शान्ति मिल जाये या जिस वस्तु का अभाव हो, उसकी पूर्ति हो जाए।

हम गहस्थी लोग हैं। हमारा धर्म गुफाओं में रहने वाले तथा प्राचीन समय के साधुओं से एकदम अलग है। हम संसार में रहते हुए कैसे धर्मात्मा बन सकते हैं? कैसे हमको खुशी मिल सकती है? जो पुस्तक लिखी हुई है, यह सब मन के मण्डल पर बैठकर अपना अनुभव या दूसरों की सूनी, पढ़ी बातें या उस समय के लोगों के लिए ठीक हो सकती है। परन्तु आज के आदमी को यह सन्तुष्टि या तसल्ली तथा ज्ञान नहीं दे सकती है। जो बात परम दयाल जी ने कही थी, बहुत यथार्थ नहीं है। परन्तु इन पुस्तकों के पढ़ने से किसी हद तक शंका भ्रम दूर हो सकते हैं। परन्तु पूरी तरह तो किसी अनुभवी की संगत, सत्संग से ही काम बन सकता है। जो सत्संग उन्होंने दिए थे, उस समय उनके सामने कोई आदमी बैठे थे, उनकी आवश्यकता थी, उनके लिए वह बात थी। अब हम उन बातों को सब अपने ऊपर लागू करें, तो ठीक नहीं हो सकती सब बातें। मेरी बात समझ गई होगी कि धर्म समय–२ पर हर आदमी का, आयु का, स्वभाव या प्रकति के अनुसार अलग–२ होता है। एक ही लाठी से सबको नहीं हांका जा सकता है।

दूसरी बात है, आज के आदमी को बात साफ चाहिए। वह ईशारों को या पहेलियों को नहीं समझ सकता है। परम दयाल जी ने बहुत साफ कहा है। परन्तु कोई यह समझ ले कि उनकी पुस्तक पढ़ने से ज्ञान हो जायेगा या सब शंका दूर हो जायेगी, तो ठीक नहीं है।

मैं अब तेरे को लिख रहा हूं। यह पत्र तेरे और दूसरों के बहुत लाभ के हैं। परन्तु जिन्होंने मेरे साथ रह कर मेरे सत्संग सुने हों, मिले हों, दर्शन करें हों, उनको जो लाभ हो सकता है, इतना केवल पढ़ने से नहीं हो सकता है। अब जिसको शान्ति चाहिए, मेरे

संग से लाभ उठा सकता है बात समझ गई होगी कि आज के आदमी को क्या दिक्कत है? उसका क्या कारण है? और उसका क्या इलाज है? तथा तरीका क्या किया जाए? यह बात इस समय का अनुभवी महापुरूष बेहतर जानता है। पुस्तकें सहारा हैं। कुछ बातें उनकी ठीक हो सकती हैं, सब ठीक नहीं हो सकती हैं। पुस्तकों में रोचक, भयानक, समाज कल्याण, स्वास्थ्य की बातें समय के अनुसार शामिल की हुई हैं, जो धर्म के नाम से सब बातें उस समय के लोगों के लिए ठीक थी।

आज का आदमी समाज में संसार का सब काम करते हुए, परिवार के साथ रहते हुए, खूब अच्छा खाते, पीते, अच्छा पहनते हुए, अच्छे मकान में रहते हुए आध्यात्मिक है, तो आत्मज्ञान चाहता है और दुनियां में दुःखी है तो अपना दुःख दूर करना गुरू जी से चाहता है। अब खुद ही सोच तू सन्त ताराचन्द जी या दूसरे महात्मा जी से ज्ञान नहीं ले सकी, क्योंकि वे पुराने ढंग से तेरे को रहते हुए ज्ञान दे सकते थे।

अब तू सब बात समझ गई है कि गुरू नाम है – समझ का, विवेक का, अनुभव का और ज्ञान का। दूसरा गुरू नाम इष्ट या आदर्श का है। और सबकी जड़ विश्वास में है। अब आज के आदमी को विश्वास दिलाना खाला का घर नहीं है। यह बाल की खाल निकालता है। यह विज्ञान का युग है। वैज्ञानिक ढंग से जो बात उसकी समझ में आये, तब उसका विश्वास बन सकता है।

मैं तेरे को यह लिखना चाहता हूँ कि तेरा साधन ठीक है। जिस बात का अनुभव कर लिया और लाभ की नहीं है, उसको त्यागती चल। जो भी भोग नहीं भोगा, उसको भोग कर त्यागते जाओ। तेरा साधन ठीक है। संसार में जो सुख है, तू सब देख ही रही है। परन्तु नफरत न हो, विवेक होना चाहिए। अपने स्वास्थ्य को ठीक रखो और मन को हमेशा सम स्थिति में रखो। साधन की पूरी सोख रखो और मन में खुशी, उमंग, रोज दीवाली का सा त्यौहार बना रहे। आशा ही जीवन, निराशा ही मत्यु। कुल बात है प्रसन्नता, खुशी, आश, विश्वास में मस्त रहो और नाम से प्रेम रखो।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
28.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। आजकल हमारे यहां पंचायतों के चुनाव का प्रचार चल रहा है। लोग तरह–२ की समस्याओं में उलझन महसूस कर रहे हैं। सोचता हूं क्या है यह जीवन? कितना उलझा हुआ है। तेरे को मैंने बता ही दिया था कि यदि किसी की पूरी रूचि हो तो बता देना, नहीं तो भीड़ मत करना। कोई ज्ञान का इच्छुक हो और तेरा साथ दे तो उसको बुला सकती है। दया ठीक है। वह योग्य है और उसको बहुत जरूरी है यह सहारा परन्तु उसकी रूकावट तेरे को बता दी थी। सो तू देख लेना। जो अधिकारी हो, उसको ही तैयार किया जाए। मैं 9.2.2000 को यहां से तेरे पास आने की सोच रहा हूं। सोनी को पूछ लेना। परन्तु पूरा प्रबन्ध करें, तब नहीं तो कभी फिर देख लेना। बाकी मेरे पहुंचने पर जरूरी होगा, वहां बात कर लेंगे।

तेरे लिए यह है कि सहज में अपना काम करती हुई, यथायोग्य व्यवहार करती हुई जो गुरू कपा से साधन मिला है, यह सहज में हंसते, खेलते, खाते, पीते जीवन के हर व्यवहार में करती रहो। यह जीवन तेरे को गुरू (मालिक) ने दिया है। इसको उत्सव या त्यौहार यानी होली, दीपावली, तीज जैसा समझ कर नित उमंग लेकर उठ कर और रात को उमंग लेकर सो। तेरे कुछ संस्कार ऐसे पड़े हुए हैं जो निराशाजनक हैं। इनको छोड़ना है और सुन्दर, खुशी का, उमंग का संस्कार पकड़ो और तेरे को मालिक ने कुछ कसर नहीं छोड़ी है देने की। जो भी तूने चाहा, वैसा ही होता गया। लोग तरसते हैं गुरू की संगत या दर्शन को। उनके बन्धन ऐसे हैं कि वे बंधे बैठे हैं। तू दया की ही हालत देख और भी तू चारों तरफ देख रही है। इन लोगों के बन्धन देखकर तू सोच कि तू कितनी आजाद

है, आध्यात्मिक कमाई करने को। साधवी के लिए बहुत जरूरी है कि वह खुश रहे। बेफिकर रहे। साधन सहज में करे। गुरू की मौज पर रहे। यह साधन हम क्यों करते हैं? ताकि काल और कर्म का हमारे मन पर असर न पड़े। काल कहते हैं समय को, जो हमेशा बदलता रहता है। कर्म कहते हैं गति को, जो देखकर, सुनकर विचार उठते रहते हैं। इससे प्रभावित नहीं होना चाहिए। जो होता है, उसकी मौज का खेल है। तेरा वह रक्षक है। हर घड़ी, हर पल तेरे साथ है। अशुभ कर्म का, जो सामने आता है, उसको भी सहज में भोग लो। नए कर्म मत बनाओ। निष्काम भाव से देखते जाओ। न तो उसमें मन लगाओ न नफरत करो। यह साधन सहज बनाती रहो और अपने मन में हमेशा खुश रहो। निराश और उदास जो साधु रहते थे, उनका समय गया। हमारे यहां पुराने समय की बातों को पकड़ा हुआ है। तुझे मेरी रहनी और जीवन को देखकर अनुभव होना चाहिए कि कैसे रहता हूं? कमल, तेरी रहनी ऐसे फूल की तरह हल्की, मीठी हो। बोली मीठी, उमंग, हौंसले, प्रेमभाव का जीवन हो। हमें मनुष्य जीवन मिला है और वह भी अच्छे सभ्य मनुष्य का।

कई प्रकार का योग है और साधन की भी नई विधि है। अब जो साधन तू कर रही है, सबसे आसान, सीधा, सहज और परम शान्ति व परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए इससे अच्छा ओर कोई भी साधन नहीं है। मेरा आशीर्वाद और शुभ भावना हमेशा तेरे साथ है। गुरू की मौज पर रहते हुए अपना काम करो। साधन से पहले सब विचारों को छोड़ दो। यह विचार ही अन्दर का भव या दुनिया है। अतः यह संस्कार है, जो सामने आते हैं। इनमें कुछ भी सच्चाई नहीं है। जब विचारों को पार किया तो आगे शब्द और प्रकाश जो तेरा जीवन है या Self है, उसमें ठहरती जाओ। रोज के सहज–२ अभ्यास से बहुत ही आसान हो जाएगा।

तेरा फकीरमय -लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
30.1.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। जो परम दयाल जी की कपा से मैंने आध्यात्मिक अनुभव किया है, उसमें लोक और परलोक में सुख–शान्ति वाला ज्ञान है। राधास्वामी वाणी की विनती में भी यही बात है। विनती के अन्त में लिखा है –

लोक अलोक पाऊं सुखधामा, चरण शरण दीजे विश्रामा।

भारत में यह आध्यात्मिक, संस्कार बहुत पहले से हैं। जिसने जैसा अनुभव किया, जिस ढंग से किया, उसने वैसा ही सत्य समझकर ग्रन्थ के ग्रन्थ लिख दिए। अब जैसा संस्कार किसी ने लिया, वह पक्का हो गया। अगर कोई अपना नया अनुभव बताये तो लोग सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। पुरानी लकीर के फकीर हैं। अधिक तो उनकी संख्या हो गई है, जो पहले की गाथा को या दूसरे के अनुभव या लिखी बातों को ही सुनना या सुनाना चाहते हैं।

जो मैंने समझा या अनुभव किया है, वह लोक में सुख–शान्ति का जीवन पहले है और जब यह लोक में रहना या जीवन सुख–शान्ति का बन जाये तो परलोक अपने आप बन जाता है। मेरी बात को तू समझ कि जो साधन सुबह–शाम तू दो घण्टा या ढाई घण्टा करती है, यह समझ कि जितनी देर ऊपर विचारों को छोड़कर तू शब्द और प्रकाश के आनन्द या अनुभव में रहती है, वह तेरा परलोक का जीवन समझ लो। बाकी गहरी नींद भी चलो हम परलोक के जीवन में शामिल कर लेते हैं। स्वप्न परलोक में नहीं है। अब बाकी समय जो है, सब लोक का समझो। अगर हमारा यह जीवन डर, भय, चिन्ता, फिकर तथा किसी भी तरह के विचारों में सुख का नहीं, तो ठीक नहीं है। इसलिये हमें ऐसी रहनी बनानी है कि गुरू कपा से हमारे जीवन का अधिक समय उमंग, खुशी, उत्सव में बीते। यह गुरू की

संगत, सेवा, सत्संग, साधन, अभ्यास का क्या मतलब है। सहज में सब काम करते हुए हमारे अन्दर खुशी, मस्ती, आनन्द का अनुभव बना रहे। यह सम अवस्था है। यह आधुनिक साधु साधवीकी रहनी होनी चाहिए।

इस दुनियां में तो खेंचातानी, हेर फेर, चोरी बदमाशी, अन्याय और जितनी बातें नहीं होनी चाहिए, वही देखने, सुनने में आती रहेंगी। अब बाहर जाकर एकान्त जगह पर जाकर साधन करने का समय नहीं रहा। इस दुनियां के अन्दर ही रहना और यहां ही जीवन गुजारना होगा। अपना सहज साधन, अभ्यास करके अपनी सम अवस्था बना लो। हम अकेले रह भी नहीं सकते। हमें इन सब साथियों की मदद चाहिए। यह दुनियां गुरू की है। उसने सोच समझ कर बनाई है। बहुत सुन्दर है। जो लोग हमको देखने में गलत लगते हैं, वे मजबूर हैं। उनके कर्म ही ऐसे पड़े हैं। कोई झूठ बोलता है, कोई चोरी करता है, कोई ठगी मारता है। यानी सब अपने कर्मो के मारे हैं और दया के योग्य हैं।

अपने को बहुत सुन्दर समय और मौका मिला है। सब साधन व खाने, पीने का प्रबन्ध हैं। गुरू मिला, जिसने समझ, विवेक, अनुभव दिया और ज्ञान का रास्ता खोल दिया है। इसलिए बार–२ उस मालिक का धन्यवाद करती हुई रोज तीज़ मनाती जा। दिन में होली का उत्सव और रात को दीपावली का उत्सव मनाती जाओ। यह जीवन कमल, एक बहुत बड़ा उत्सव है। परन्तु है उस साधु के लिए जो साक्षी बन कर देखता है और काल व माया में बहता नहीं है।

जब हम गुरू ज्ञान को भूल जाते है, तब गिर जाते हैं। गिरने का भाव काम, क्रोध, मोह, लोभ व अहंकार के भाव में बह जाना है। खुशी या गमी महसूस करना, चिन्ता या डर के भाव यह सब साधन, अभ्यास, विवेक व समझ से आहिस्ता–२ दूर होकर सम अवस्था आती जायेगी। चलती रहो। गुरू कपा से सब काम तेरा हंसते–खेलते हो जायेगा। मैं क्या कहता हूं, मेरे भाव को समझो।

रेणु खन्ना का फोन आया था। कहा है – इस बार जब आप वैशाखी पर आयें तो मेरे घर पर रहना है। ऐसा ही फोन भीलवाड़ा से विमला अग्रवाल का आया है। कमल, बेटियों का बहुत प्रेम है, परन्तु बन्धन बहुत है। इनको इस जीवन का भी आनन्द नहीं मिल रहा है। किसी के पास कुछ है नहीं और किसी के पास सब कुछ है, फिर भी दुःखी जीवन है। मनुष्य जीवन ही एक बड़ा उत्सव है, परन्तु नरक बना हुआ है। सब कर्म का खेल है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
2.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। आज सुबह हिमाचल से कमल का फोन आया था। कहता था आपसे मिलना है। मैंने कहा भाई मैं यहां से फोन पर ही आपको आशीर्वाद व शुभ भावना देता हूं।

कमल, जो गुरू करने का लाभ जैसा मैंने समझा है – इन्सान को जीवन का सही ढंग बताना है। सबको अध्यात्म की जरूरत नहीं है। अध्यात्म तो मनुष्य के अन्दर ही है। इसको अनुभव करने का समय होता है। इस जीवन में बहुत बड़ा (Charm) चार्म यानी बहुत खुशी और आनन्द है। पहले मनुष्य सब भोग भोग के उसके बाद जब इन भोगों का अनुभव हो जाये, तब त्याग अपने आप होता जायेगा। हमारे हिन्दू धर्म में जो चार आश्रम बताये हैं, इसका भी यही अर्थ था कि पहले शरीर बनाते हुए शिक्षा या कोई भी काम सीखें। फिर गहस्थ को भोगते हुए वानप्रस्थ यानी गुरू से सत्संग सुनकर जीवन का ढंग सीखें। यानी समझ, विवेक, अनुभव, ज्ञान ले। गुरू उसकी योग्यता के अनुसार उसको साधन अभ्यास से पहले

बताये कि भाई तेरे लिए क्या जरूरी है? यह साधन भी कमल, सबके लिए एक नहीं है। यह भेड़चाल है, जो बिना योग्यता के ही नाम दान दिया जा रहा है।

यह 'कमल' मुझे होशियारपुर बैशाखी के अवसर पर मिला था। इसने अपने कहानी बताई। मैंने सलाह दी थी कि भाई तुम अब कोई काम करो। कर्जा लेकर गुरूओं की सेवा करने से कुछ नहीं मिलेगा। यह जो बातें तुमने रट रखी हैं, तुम्हारे लिए नहीं हैं, तब यह इराक गया था। मतलब यह है कि यह जो गुरू चेला व्यवहार हो रहा है, गलत तरीका है। परन्तु दोनों पक्ष एक ही चाल के हैं। जैसा कहा है –– ''लोभी गुरू लालची चेला, दोनों नरक कुण्ड में खेला''। यह शब्द राधास्वामी वाणी का है।

गुरू चेला व्यवहार जगत में झूठा बरत रहा,
का से कहूं, समझ नहीं काहू, धोखे धार वहा,
सच्चा मार्ग सुरत शब्द का, सो अब गुप्त वहा।

सन्त मत में सबसे पहली शर्त यह है कि जो भी साधन–अभ्यास करके परम शान्ति, परम आनन्द को चाहता है या निज घर जाना चाहता है, वह अपनी खुद रोजी रोटी कमा कर खाये। जो रोजी रोटी नहीं कमा सकता और जिसने चेलों के भेंट चढ़ावे को जीविका का जरिया या साधन बना लिया है, वह हवा खाये। अध्यात्म की कमाई वह नहीं कर सकता। सन्त, साधु का भेष बना कर लोगों को धोखा दे सकता है।

पहले इस संसार का जीवन है। उसके बाद जब सब यहां के भोग भोग कर अनुभव कर ले, तब आगे बात त्याग की है। आँख बन्द करके बैठने से तो मन शान्त नहीं होता। जब यह बात पूरी अनुभव में आ जाये कि संसार के भोगों में क्षणिक आनन्द है और दुःख बहुत ज्यादा है तो कोई ऐसा स्थान जहां सदा रहने वाला आनन्द शान्ति मिले और उसकी पूरी लगन, चाह, सोख जिसको लगी हो, उसके लिए अध्यात्म की शिक्षा है। खास–खास आदमी जिनमें पूर्व जन्मों के संस्कार हों, उनके लिए यह शब्द और प्रकाश का साधन है, बाकी

तो दुनियां चाहते हैं। और उनको समझ, विवेक, जीवन का ढंग , काम करने का ढंग तथा इस लोक में जिस चीज का अभाव जीव अनुभव करता हो, उसमें सफलता का तरीका आदि कोई अनुभवी पुरूष जिसको जीवन के सब अंगों का अनुभव हो, बता सकता है। अब तू ही देख ले, दया को बहुत जरूरत है इस ज्ञान की, मगर उसका अशुभ कर्म भी साथ है। इसी का नाम माया कह सकते हैं। तू अपना साधन प्रेम, श्रद्धा, भक्ति भाव से करती जा। तू लाखों में एक है। अपने को संवारती जा। समय पर तेरा सब काम गुरू कपा से होगा।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
2.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। कल तेरे को पत्र ज्ञान के सिलसिले में लिखा था। रात को तेरा पत्र आया और तेरे पत्र से भी बहुत लम्बे–२ पत्र एक सूद साहब का देहली से और एक डा० गर्ग की लड़की पूजा का मिला। कहानी वही है कि इस जीवन में मनुष्य दुःखी है। किसी को तो ज्ञान नहीं, इसलिए वह गलती करता है। किसी के पास खाने–पीने का अभाव है और किसी के पास सब कुछ है, परन्तु हाजमा बिगड़ गया है। किसी के पास सब कुछ है, परन्तु घर परिवार में अनबन या कलह है। किसी के सास–ससुर कलह का कारण हैं, तो किसी के पति–पत्नि में अनबन हो गई है और भी बहुत तरह का मन तथा आत्मा के अज्ञान के दुःख हैं, जिनका हिसाब नहीं है।

अब तुमसे कुछ भूल हो गई, जो उनके लिए तूने लिखा है। तेरी आज तक की सब भूल माफ कर दी जा रही है और इनका कोई पश्चाताप मत करना। आगे के लिए सावधान और जागरूक रहना।

कल के पत्र में ही शायद लिखा था कि पहले भोग लो, उसका अनुभव करो और जब अनुभव हो जाये, फिर त्याग दो। जब अनुभव कर लिया कि इसमें कुछ दम नहीं है। यह तो रोग पैदा करेगा और खुशी व सदा रहने वाले परम आनन्द से दूर ले जाएगा तो बार–२ उसी ही रोग का शिकार होना कोई समझदारी या अक्ल वाली बात नहीं है।

कमल, गुरू नाम समझ, विवेक, अनुभव तथा ज्ञान का है। दूसरा गुरू ईष्ट, या आदर्श को कहते हैं। तेरे को सब बातें मालूम हैं। भाई, सोते हुए आदमी को तो जगा सकते हैं, परन्तु जागते को क्या जगाता है? तू खुद समझदार है। तुझे जो कुछ मिला है या मिलना है, तेरी ही श्रद्धा, भाव, विश्वास, आश तथा नीयत का फल मिलना है। तेरा अपना ही भाव है। गुरू बना कर पूज लो, उससे प्रेम कर लो, उसकी सेवा कर लो, उसको अच्छे–२ कपड़े पहना दो। यानी जो तेरे मन के जज़बे हैं, वह निकाल लो।

मैंने तेरे को जो बात थी, सच्चाई से बता दी और उसका अनुभव तू कर रही है। समझ तेरे को है। विवेक तेरे को है। साधन करती जा। परम शान्ति तथा परम आनन्द का अनुभव होगा। अपने अन्दर शब्द को सुनो, प्रकाश को देखो। नई बात, जो तेरे को मिलेगी, वह इसी ही शब्द के सुनते–२ मिलेगी, जो तू ही अनुभव कर सकेगी। उस का ब्यान (वर्णन) न तो कोई आजतक कर सका है और न कर सकता है। अन्दर ठहरती जा। सब कमजोरी अपने आप मिट जायेगी।

अब तेरी मर्जी है। मुझे गुरू बनने का कोई दोष नहीं है। तेरा जी चाहे, जितनी सेवा कर लो। हम तो जिमाकड़ हैं। ''करो गुरूवां दी सेवा, जे कुछ चाहंदे हो'' वाली बात है।

भावुकता को छोड़, गुरू तेरे अंग संग है।
गुरू शब्द को कीजिए, बहुतक गुरू लबार।
अपने-२ स्वाद में ठोर-२ बठ मार।।

गुरू महाराज जी की मौज हुई तो 9.2.2000 को 2 या 3 बजे तक आऊँगा। शेष सब मिलने पर।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
3.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। मैं जो यह पत्र आपको लिख रहा हूँ, इन सबको अपने पास रखना। अपने हाथ से साफ हिन्दी में इनकी नकल कर लो। इनकी फोटोस्टेट भी हो सकती है और छापने के काम भी आ सकती है। मेरी लिखाई केवल तेरे लिए है। तू ही समझ सकती है। न तो यह छापे में साफ आयेगी और न यह दूसरे को समझ में आ सकती है। मैं यह जो पत्र भेज रहा हूं, केवल तेरे लिए है। परम दयाल जी का साहित्य सबके लिए है। बहुत ऊंची बात है, परन्तु समय के साथ तथा आदमी के साथ वह सब बातें लागू नहीं होती। तू एक ही बात से समझ कि जिस तरीके से आपने मेरे पर विश्वास किया है, परम दयाल जी ने यह तरीका ज्ञान देने के लिये प्रयोग में नहीं लिया होगा। क्योंकि मनुष्य की प्रकति, स्वभाव, हालात, समय के अनुसार यह सिलसिला जारी किया जाता है। उसको किस तरह शान्ति मिल सकती है? यह समय का गुरू बेहतर जानता है। एक ही बात सब पर लागू नहीं हो सकती है।

मैंने तेरे को एक चीन के महात्मा 'लोओत्से' की कहानी लिखी थी जिसमें उसने एक किताब चुंगी नाके पर चुंगी कर के रूप में पुलिस के पहरे में लिखी थी, जिसका नाम है –'ताओ तेह किंग'। उस पुस्तक में उसने सबसे पहले यह लिखा था कि ''सत्य कहा नहीं जा सकता और जो कहा जा सकता है, वह सत्य नहीं है।'' उस महात्मा लोओत्से को क्या मिला होगा, यह बात तो वही जानता होगा, परन्तु मैंने क्या समझा कि उसको क्या मिला था, जो बताना नहीं चाहता था या बता नहीं सकता था। उसको कमल, शान्ति मिल गई थी।

आध्यात्मिक पुस्तकों में जिस नाम की या गुरू की बड़ाई, रोचकता भयानक तरीके से लिखी हुई है, वह उस समय के अनुसार ठीक थी और किसी हद तक अब भी ठीक है। यथार्थ की कदर नहीं

है। और लोग सच्चाई की कदर नहीं जानते हैं। परम दयाल जी ने कितनी सच्ची और यथार्थ बात कही है। उनकी किसने कदर करी। मेरा भाव यह है कि तू अपना काम कर। बात को समझ और जो इस ज्ञान का अधिकारी हो, जिसको इसकी चाह हो – उसको जैसा तू ठीक समझे, उस तरीके से समझा कर साधन में लगा देना। साधन करते–२ जब उसका काल कर्म का कर्जा चूक जायेगा, तो सहज में ही अपनी मंजिल पर पहुंच जायेगा। मैं चाहता हूं मेरी हाजरी (उपस्थिति) में ही कोई अधिकारी बेटी हो तो तेरी संगत बना सकूं। तू जो यह ज्ञान दे, केवल महिलाओं तक ही सीमित रखना। बाद में यदि उचित समझो तो पुरूषों को भी, जिनको बहुत ही अधिकारी समझो, शामिल कर लेना।

इस सन्त मत की सबसे पहली शर्त यह है कि मनुष्य अपनी रोजी–रोटी कमा कर खाता हो। जो रोजी नहीं कमा सकता, वह सन्त मत के मार्ग पर नहीं चल सकता है। महिलाओं के लिए यह बात आ जाती है कि शायद ही कोई पति होगा, जो यह चाहे कि मेरी स्त्री (पत्नी) मुक्ति को प्राप्त करे। यह भारी बन्धन है और महिलायें भी पति का सहारा या बन्धन चाहती हैं। यानी सहारा जरूरी है। इस जीव को, चाहे स्त्री हो, चाहे पुरूष, किसी ने बांध नहीं रखा है। यह खुद ही अपने को बन्धन में बांधे बैठा है। कोई खुद मुक्त गुरू मिले तो इसको बात समझा दे और जीने का ढंग बता दें कि इसको नरक मत बनाओ। इस जीवन को स्वर्ग बना लो। यह जीवन उदास, निराश रहने के लिए नहीं है। मनुष्य की सुन्दर योनि मिली है। इसको उत्सव, त्यौहार या पर्व में बदलो। रोज का जीवन ही त्यौहार बना लो। हम अपने चारों तरफ दुःखी, निराश, चिन्ता और फिकर से घिरे हुए लोगों से घिरे हुए हैं। गुरू जो हमारी तरह ही रहता है, वह जीव को यदि खुद अनुभवी है तो जीवन का ढंग बता कर शिष्य को हौंसला, हिम्मत देकर इस दुःखों की दलदल में से जीव को निकाल सकता है। यह सब कुछ जीव के शुभ कर्मो का फल होगा। तेरे बहुत ही शुभ कर्म हैं। तू सावधान होकर अपना सफर कर।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
19.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। सुबह तेरा फोन मिला। आपने सुचित्रा के लिए सहानुभूति प्रकट की। मैंने भी सोचा, परन्तु फिर कर्म गति का विचार आया कि अपना ही शुभ और अशुभ कर्म का फल भोगने के लिए जीव मजबूर है। इसी लिए सन्तों ने यह कहा है कि भाई इस लोक में तो जीव सदा खुश या शान्त रह नहीं सकता है। अतः हमेशा के लिए यह लोक जिसमें हम मन माया के चक्कर में फंसे हैं, इससे साधन–अभ्यास करके तथा नाम का सहारा लेकर अपने निज धाम लौट चलें।

एक सुचित्रा को ही हम क्यों लें? हम भी इसमें शामिल हैं। तू खुद बुद्धिमान है, फिर भी मन माया के चक्कर में आकर अपनी शान्ति को खो बैठती है। तेरे को पता है कि बहुत ही सादा और सात्विक भोजन साधु को करना चाहिए, फिर भी खान–पान में कुछ अनियमितता हो जाती है और कर्म का चक्कर रास्ते में रूकावट डालता है।

तेरे पर गुरू की अपार कपा है। समझ–बूझ भी है और रास्ता भी बहुत उत्तम, शब्द–प्रकाश का साधन गुरू कपा से हाथ लग गया है। अब केवल सहज में सुमिरन ध्यान करती रहो। भजन अपने आप ही बन जायेगा। यानी मन पर नियन्त्रण सुमिरन, ध्यान और भजन से कर सकती हैं। इसके साथ किसी शब्द–अभ्यासी और अनुभवी पुरूष का सत्संग जरूरी है, जिससे विवेक हो जाये।

तेरे को दुनियां के आनन्द और भोगों का भी ज्ञान है। और बहुत अच्छी समझ है कि यह जितने भोग हैं, यह कुछ नहीं हैं, यह आखिर में रोग यानी दुःख का कारण बन जाते हैं। जैसा तेरे को खाने–पीने का विशेष शौक था यानी जीभ का स्वाद था और मीठा या तला हुआ भोजन करने से नियमितता का ध्यान नहीं रखा। इसलिए पेट की खराबी से हाजमा बिगड़ गया। अतः सब भोग जिसमें अति होती है, अन्त में रोग उसका परिणाम होता है।

इसलिए समता होना जरूरी है।

संसार में हम आये हैं। भोग भोगों और उसका त्याग करो। जब हम त्याग नहीं करते तो शान्ति दूर होती जाती है। आनन्द और शान्ति कहीं बाहर नहीं। सब कुछ तेरे अन्दर भरा है। परम दयाल जी को तूने बहुत पढ़ा है। मैं अधिक नहीं लिखूंगा।

कमल, तेरे को मेरी संगत का विशेष लाभ होना चाहिये। मैंने इस ज्ञान का अनुभव बहुत ही सहज में हंसते, खेलते किया है और वही संस्कार तेरे को दिया है कि इस जीवन को बहुत ही आनन्द, खुशी, बेफिकरी और कमल के फूल की तरह व्यतीत कर। इस संसार में सबके संग और सबसे अलग रहो। तेरे चेहरे पर खुशी मस्ती और मुस्कराहट बनी रहे। तू कई बार जब मेरे हित के लिए कहती है, तब मुझे तेरे को देखकर बहुत दया आती है कि कहां गई तेरी खुशी? क्योंकि तू सब कुछ भूल जाती है और नाम से दूर हो जाती है। मैं पूरा साधु तो नहीं बन सका। परन्तु, 80, 85% साध गति में रहने का यत्न करता हूं। मैं तेरे को 100% सन्त गति में देखना चाहता हूँ। मुझे यह विश्वास है कि तुम अवश्य मेरी इच्छा पूरी करोगी। परम दयाल जी की यह इच्छा थी कि उनके ज्ञान का प्रचार हो। हमारे देश और मानव जाति को सुख, खुशी, समद्धि, शान्ति मिले। उन्होंने यह कहा था कि हमारे देश और मानव जाति का सुधार प्यारी बेटियां कर सकेंगी। यह नेता तथा धार्मिक गुरूओं के बस की बात नहीं है।

बेटियों को यह ज्ञान दिया जाये कि अच्छी, प्यारी, होनहार सन्तान किस तरह से पैदा की जाये, तब ही मानव जाति का हर तरह सुधार हो सकेगा। बेटियों को सन्तान पैदा करने से पहले यह चाह या उमंग हो कि मेरी सन्तान वैज्ञानिक, बहुत बड़े सुधारक, अवतार हो, जो मानव जाति का मार्ग दर्शन करे। नई–२ खोज करके मानव जाति को सुख सुविधा दे और इस लोक का जीवन स्वर्ग बनाए। इस प्रकार के विचार रखकर जब बेटियां सन्तान उत्पन्न करेंगी, तब भारत देश की क्या बात है? पूरे विश्व में ही हर तरह से सुख, शान्ति और तरक्की का सुधार हो सकेगा।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
21.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधा–स्वामी। अभी नहा धोकर आनन्द में बैठा था। विचार आया पत्र लिख दूं। दो–तीन जगह लिखना था। परन्तु तेरी तरफ ही अधिक झुकाव हुआ। असल यह जीवन प्रेम, विश्वास का है। जहां प्रेम है, वही स्वर्ग है। यानी बहुत ही गजब की वस्तु है यह प्रेम। गुरू भक्ति तो बहुत बड़ी वस्तु है। गुरू प्रेम का तो वार या पार ही नहीं है। साधारण जिस घर में मां, बेटे का प्रेम, सास–बहु का प्रेम, पति–पत्नि का प्रेम यानी जिस घर में आपस में प्रेम है, गुरू या भगवान उस घर में रहते हैं।

यदि कोई अनुभवी पुरूष है तो जीव में यह प्रेम की धार छोड़ता है। यानी जीव की रहनी बनाता है, विश्वास उत्पन्न करता है। यह कई तरीके से जीव को इस जीवन में जीने का ढंग बताता है। सबके लिए एक ही बात नहीं हो सकती। अब मैंने पत्र लिखने का विचार किया। जिनको पत्र लिखने थे, सबकी शक्लें मेरे सामने आई। तुमने तो मुझे कोई पत्र भी नहीं लिखा था। परन्तु तेरे को पत्र लिखने में पहला नम्बर क्यो दिया। वही बात हे कि तेरा प्रेम, विश्वास, श्रद्धाभाव का कारण है। दूसरे लोगों ने बहुत प्रश्न भी पूछे हैं और उत्तर भी जल्दी चाहते हैं। मेरे भाव को समझ रही होगी कि

प्रेम न बाडी उपजे, प्रेम न हाट बिकाए।
राजा प्रजा जिही रचे, शीश दे ले जाए।

यह तो जन्म–जन्मान्तरों के शुभाशुभ कर्मो का फल है। भक्ति क्या है? एक सहारा है। गुरू भक्ति गुरू का सहारा पहले शरीर का, फिर अन्दर स्वरूप का, आगे प्रकाश का, फिर शब्द का। दाता दयाल का शब्द है –

''गुरू पर डारूं तन मन वार, गुरू पर जाऊं मैं बलिहार''।

अब तू हीं सोच क्या कोई गुरू पर तन मन वार सकता है? कहना आसान है? परन्तु रहना बहुत कठिन है। और जिसने गुरू आज्ञा को मानकर अपनी रहनी बना ली, फिर बाकी क्या रह गया?

तेरे बहुत ही शुभाशुभ कर्म हैं, जो तूने गुरू भक्ति का सहारा लिया है। यह बहुत बड़ी बात है। यह संसार एक बहुत गहरा सागर है। गुरू स्वरूप में आश विश्वास रखकर इस संसार के जीवन में सहज में तैरती चल। तेरे को पार जाने का साधन भी मिला है। शब्द को सहज में पकड़े रहो। यह निज घर ले जाने वाली जहाज है। साधन, उमंग, खुशी से कर। यदि शरीर या मन की असमता के कारण किसी दिन न बने, तो दूसरे समय प्रेम भाव से करो। अपने मन और कमजोरियों पर नियन्त्रण रखो। कुछ दिन सुमरिन, ध्यान की आदत बना लोगी, तो फिर सब काम सहज में होते जायेंगें।

मैंने तेरे को जीवन त्यौहार की तरह उत्सव मनाते हुए जीने की बात बताई है। ''सदा दीवाली साध के और आठों पहर आनन्द।'' निराशा में कभी मत जीओ। आश, विश्वास, उमंग, प्रेम–भाव में मस्त रहकर जीओ। मैंने तेरे को बताया है कि यह दुनिया गुरू महाराज का ही एक सुन्दर बाग है, जिसमें कांटे और फूल सब कुछ है। इसको देखकर घबराओ मत। गुरू स्वरूप को शब्द–स्वरूपी मानकर हमेशा खुश रहने की आदत बनाओ। कभी भी मन से दुःखी मत होओ। यदि कोई कठिनाई या समस्या आ जाए तो उसको उचित तरीके से सुलझाने की कोशिश करो और गुरू मौज पर छोड़ दो। जो होगा, तेरे भले में होगा। गुरू तेरे अंग–संग रहता है। उसको दूर मत समझो। ज्यादा पढ़ने की भी जरूरत नहीं है। तू सहज में साधन कर। भोजन और अपने शरीर का ध्यान रख। मन के विचारों या संकल्पों में मत फंसो। सुमिरन, ध्यान व समझ–विवेक से रहो।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
22.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम आशीर्वाद व राधास्वामी। सुबह ही तेरा फोन मिला था। तुमने जो पेट की खराबी या हाजमा की शिकायत की है, यह ठीक है। यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं तो साधन वगैरा कुछ नहीं बन सकता है। परम दयाल जी ने कई बार अपने सत्संगों में बताया है कि जो साधक शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करता और साधन–अभ्यास करेगा, उसका हाजमा खराब हो जाएगा। वह अपनी खुद की हालत लिखते हैं कि एक बार वह स्वाद के रस में फंस कर ब्रह्मचर्य को नष्ट कर बैठे थे। उनका हाजमाखराब हो गया था और बेचैनी बहुत बढ़ गई थी।

एक रोज उस बेचैनी में साधन कर रहे थे तो अन्दर से आवाज आई

'जहां काम, तहां नाम नहीं - जहां नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोऊं ना मिले, एक ठोड़ एक ठाम।।''

यह चेतावनी उनको अन्दर से मिली और वह सम्भल गए। उन्होंने ऐसा कहा है ।

साधकों को काम–वासना की अधिक रूकावट है। असली वस्तु इन्सान में वीर्य की शक्ति है। साधन, अभ्यास, खुशी, प्रसन्नता सबकी जड़ है। सैक्स सम्बन्धी बातें सुनने, देखने , पढ़ने व छूने से ही ब्रह्मचर्य का पतन होता है। साधक को बहुत सावधानी की आवश्यकता है।

आप योग वालों से या किसी अच्छे वैद्य हकीम से सलाह करके अपने भोजन तथा पेट की शिकायत का इलाज करें। सो दवा से खाने–पीने का परहेज आपके लिए ठीक होगा। विवाह–शादियों या दावतों में कुछ न खायें। केवल नींबू पानी ले सकती हैं। अब

जैसे व्यास के सत्संगी कहते हैं, वैसा आप भी करो। परन्तु आपका भाव केवल परहेज की बात है कि हाजमा खराब होने के कारण वैद्य ने मना किया है।

चिकनाहट यानी घी वगैरा gressy वस्तु आपके हाजमें में हानिकारक है। आप सब बातें मेरे से ज्यादा जानती हैं। तरीका, समझ, विवेक और सुमिरन, ध्यान, भजन है। आपके भोजन के लिए मुझे एक ही बात कहनी है कि यह सात्विक, राजसिक, तामसिक यानी हल्का भोजन करना। इन सब बातों की आपको मेरे से अधिक समझ है। एक बात यह है – ''खाने के लिए मत जीओ, जीने के लिए खाओ।'' यह काम वैद्य या डाक्टर ने या गुरू पीर ने नहीं करना है। आप खुद समझ–विवेक से काम लो। मेरा आशीर्वाद व शुभ भावना हमेशा तेरे साथ है।

गुरू महाराज जी की मौज हुई तो मैं तेरे पास 9.3.2000 को पहुंच जांऊगा। आगे का प्रोग्राम फिर देख लेंगें। यह सब स्वास्थ्य पर है। यह जो नींद वगैरा की शिकायत है, सब अनियमितता का कारण है। आपको कोई ऐसा काम नहीं है। रात को ठीक 9 बजे सोओ तो अपने आप समय पर जाग जाओगी। गुरू महाराज जी की तरफ से आपको सब सुविधा मिली है। यदि आप इनका सदुपयोग न करो तो आप जानो।

कमल, एक सौदा जो लेकर चलता है, सफल होता है। मैंने गुरू कपा से जीवन में एक ही लगन रखी है और मैं अब अपनी इस पिछली आयु में बहुत ही खुश हूँ। मैं चाहता हूँ कि तू इस अध्यात्म यानी आत्म ज्ञान विषय में पूरी सफलता प्राप्त करो। तेरे को हर तरह से गुरू ने मौका दिया है। अपना जीवन सुन्दर बनाओ। सहज में रहते हुए अपना काम करते हुए, जीवन को एक त्यौहार या उत्सव मनाते हुए, सहज में चलते–फिरते, अच्छे स्वभाव में रहते हुए अपना साधन करती रहो। अपने पेट को ठीक रखना आप के हाथ की बात है। जैसे यह ठीक रहे, वही खाना खाओ। यानी स्वाद की बात छोड़ो। अब तो पेट को तथा हाजमें को ठीक रखने वाली बात है।

आपका फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
25.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। अब कुछ मौसम बदला है। वैसे जो यह बदलाव है, आनन्द इसी ही में आता है। जहां बदलाव नहीं है और एक सा है या सम अवस्था है, वहां शान्ति है। सत्संगों में लोग जाते हैं और कहते भी हैं कि हमें शान्ति चाहिए, परन्तु यह बात नहीं है। लोग आनन्द या सिद्धि–शक्ति चाहते हैं, यह कोई छोटी बात नहीं। जब हमने आनन्द ले लिया और शक्ति का भी लाभ उठा लिया। यानी आनन्द से जी भर गया, तब शान्ति का नम्बर आता है। हम खाने, पीने, पहनने, ओढने तथा घूमने में यानी जीवन के बदलाव में आनन्द का अनुभव करते हैं।

यह हमारा मन बहुत ही नवीन प्रिय है। हर जीव इस बदलाव में आनन्द अनुभव करता है। मेरा भाव तू अच्छी तरह समझ गई होगी कि आदमी यह सिद्धि–शक्ति तथा इस संसार के आनन्द का अनुभव करके वैराग्य को प्राप्त हो। बात यह है कि समझदार आदमी इस बात को बहुत जल्दी समझ जाता है कि यह संसार के सुख और आनन्द हमेशा नहीं रहते। इसलिए हमेशा परम आनन्द में या शान्ति में रहने वाले आदमी बहुत कम होते हैं। हजारों करोड़ों में कोई एक होता है।

यह वस्तु आदमी के अन्दर है। असल में यह हमारा जीवन जो है, बहुत बड़ा उत्सव है। मनुष्य जो सच्चे मन से इच्छा या चाह करता है और लगन सच्ची हो, वही वस्तु इसको मिल जाती है। मनुष्य के मन में बहुत बड़ी शक्ति है। यह जो आज का युग है, इतना अच्छा है कि मनुष्य सब तरह के भोग का सहज में अनुभव करके इसी ही जन्म में मुक्ति का जो अनुभव है, उसको सहज में इस संसार में रहते हुए, जीवन के खेल खेलते हुए बहुत ही आसानी

से कर सकता है।

कमल, इस लोक का जीवन आनन्द, खुशी, उत्सव का है। लोगों को ज्ञान, समझ, विवेक नहीं है, इसलिए जीवन को नरक बना रखा है। लोग सिद्धि–शक्ति मांगते हैं और उनको जरूरत है सिद्धि, शक्ति तथा आनन्द की। यह बात कोई अनुभवी गुरू मिले तो काम बने। अब अनुभवी गुरू तो तब मिले जब जीव के जन्म जन्मान्तरों के शुभाशुभ कर्म हों। यदि उसके शुभ कर्म न हों तो जीव उसकी बात या तो समझेगा नहीं और यदि समझ भी गया तो अक्ल से मानेगा नहीं। यानी रहनी नहीं बना सकता है।

तेरे यह शुभ कर्म हैं जो तू गुरू की महिमा जान गई और अपने अन्दर ही सतगुरू का अनुभव कर लिया है। यानी तेरे को अन्दर और बाहर सतगुरू मिल गया है। अब तो यह रूकावटें आती हैं, यह अशुभ कर्म का फल भोगना होता है। तूं उसका विश्वास, आश रख और सहज में हंसते, खेलते, जीवन को एक बहुत बड़ा पर्व मानते हुए अपने अन्दर सुख साधन करती रहो और साथ ही जब मौका मिले, गुरू के वचन सुनती रहो। तेरे लिए खास वचन होते हैं, उनको ध्यान से सुनकर अपनी रहनी बनाती जा। मेरे पास कमल, शुभ भावना या अपना अनुभव है, जो तेरे को बांटता हूं।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
27.2.2000

प्यारी बेटी कमल,

सप्रेम राधास्वामी। कल तेरे को पत्र लिखा था, परन्तु मालूम नहीं हो रहा वह क्या बात है? जो तेरे को लिखी नहीं है, जो लिखना चाहता हूँ। मेरे विचार में वही एक बात है जो कि चीनी महात्मा

लोओत्से लिखना नहीं चाहता था। उसके शिष्यों व राजा का दबाव था, परन्तु वह यह कहकर टाल देते थे कि आज तक कौन उस बात को लिख पाया है। जो उस विषय में लिखा गया है वह सत्य नहीं हो सकता है। तेरे को उस सत्य की अनुभूति करने का अपने अन्दर जो साधन शब्द व प्रकाश का बताया है, सहज में अनुभव बढ़ती जा। जो रास्ते में रूकावटें आयें, उनको समझ बूझ से सुलझाती जाओ। उचित समय पर उस सच्चाई का अनुभव हो जायेगा।

साथ ही मैंने तेरे को इस समय का धर्म तथा ढंग भी समय के अनुसार बता दिया है कि अपने मन को काबू रखकर इस मानव जीवन का सुख व आनन्द अपना काम करती हुई, रोज उत्सव मनाती हुई जीवन खुशी, आनन्द, बिना चिन्ता फिकर के सहज में रहनी बनाती जाओ। हाजमे की खराबी का कारण तू जानती है। अब आगे के लिए समझ विवेक से काम लो। असल में बीज रूप में तथा कुछ हमारे पूर्व के संस्कार ही कमजोर हैं, परन्तु कोई बात नहीं है। समझ, विवेक, ज्ञान तथा अभ्यास से सुधार हो जायेगा। यह सब गुरू कपा समझो या हमारे शुभ कर्म हैं, जो हम लोग ज्ञान, ध्यान तथा इस विशेष विषय अध्यात्म की ओर झुके हैं। आप अपना प्रेम भाव से साधन करो और स्वास्थ्य को ठीक रखने का प्रयत्न करती रहो। साथ ही मन को उमंग, उत्साह व खुशी की तरफ रखते हुए सुन्दर रहनी बनाओ। किसी भी तरह का वजन या भारापन मन में मत रखो। यह संसार सब गुरू की वाटिका है, ऐसा मान कर चलो। यहां जो भी भला बुरा हो रहा है, उसका खेल मानो। तुम केवल अपने सुधार की तरफ ध्यान रखो। तेरा सुधार क्या है? पहला अपना स्वास्थ्य, दूसरा तेरे विचार, तीसरा काम विचारों को छोड़कर शब्द प्रकाश का अनुभव करना। तीन बातें तेरी निजी हैं। उसके बाद अपनी डयूटी और लोगों के साथ मीठा व्यवहार आता है। रहना इस दुनिया में है। चाहे रिश्तेदार, परिवार हो या चाहे जिनसे भी तालुक होता है, अपना व्यवहार मीठा और मधुर हो। गुरू भक्ति अपने लिए है।

दुनियां के लिए दुनियां है। परन्तु हम एक दम दुनियां से कट कर नहीं रह सकते हैं।

आज का जीवन ऐसा है कि हम एक दूसरे के सहारे या योग बिना अच्छी तरह नहीं जी सकते हैं। इसलिए साधवी तूं है। बहुत सच्ची, पवित्र साधवी बन। गुरू भक्त बनो। उस मालिक या सतगुरू को श्वास–ग्रास याद करती हुई उसके त्यार, विश्वास, आश में खुश रहती हुई अपना यह जीवन तीन–त्यौहार की तरह मनाती जा। कमल, यह रहनी का मार्ग है। रहनी ऐसी सहज और त्यारी बना लो कि जीवन का आनन्द आये। संसार का मार्ग बहुत उलझा हुआ है। संसार लोगों का मन कभी काम, कभी क्रोध, कभी मोह, लोभ तथा अहंकार में फंसा रहता है और समझ विवेक न होने से यह संसार जो बहुत ही सुन्दर व प्यारा है बहुत भार की तरह मालूम होता है। तू साधवी है। तेरे लिए यह जीवन स्वर्ग जैसा है। फिर तो यहां आना नहीं। इसलिए इस जीवन को बहुत ही हल्का फूल की तरह समझ कर जीओ। सब तरह की चिन्ता हटाओ। बेफिकर, मस्ती में गुरू के शब्द स्वरूपी रूप में अन्तर में प्यार बढ़ाओ। मेरा हित व शुभ भावना हमेशा तेरे अंग संग है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
23.3.2000

प्यारी बेटी कमल,

प्यार, सम्मान व आशीर्वाद। आज मैं आपको आध्यात्मिक जीवन के विषय में कुछ लिखना चाहूंगा। वैसे तो हर आदमी आध यात्मिक जीवन जीने का अधिकार रखता है। परन्तु बहुत कम लोग हैं, जिनको इस विषय का ज्ञान है। इसी ही के समझाने बुझाने यानी

आध्यात्मिकता का उत्तराधिकारी बनाने और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत के पूर्ण प्रयत्न का नाम, ज्ञान, ध्यान, भक्ति, सेवा, वैराग्य और अभ्यास है।

अब आध्यात्म्किता क्या है? यह शरीर, मन तथा आत्मा के आपसी मेल जोल का नाम ही आध्यात्मिकता है। जिसने इस बात को समझ लिया, वह आदमी आध्यात्मिक हो गया। केवल एक बार ठीक से समझ लो। बार–बार समझने की जरूरत नहीं। समझ लेने का मतलब है कि मनुष्य का जीवन क्रियात्मक रूप से ज्ञान, बुद्धि और खुशी के सच्चे मार्ग पर आ जाये।

शरीर का सम्बन्ध कर्म से है। मन का सम्बन्ध संकल्प, विकल्प, चिन्ता और ज्ञान से है। आत्मा का सम्बन्ध प्रसन्नता, सरूर तथा आनन्द से है। इसका विधि यह है कि शरीर, मन और आत्मा में आपसी एकता रखो। यानी समस्थिति बनाए रखो।

अब आध्यात्मिकता का सच्चा मार्ग तो एक ही है। परन्तु हम दोपने की दुनियां में रहते हैं। इसलिए हमारे ऋषियों ने आम लोगों के लिए दो मार्ग कायम किए हैं। एक है श्रेय मार्ग और दूसरे का नाम है प्रेय मार्ग। बस इन दोनों को अब ठीक समझ लो। यह दोनों ही अध्यात्म के मार्ग हमारे देश में बहुत पहले से चले आए हैं। कोई नई बात नहीं है। परन्तु इनको ठीक न समझने से साधन–अभ्यास करने वालों को कई तरह के भ्रम या शंका हो जाती है।

अब श्रेय मार्ग को ठीक से समझो। श्रेय मार्ग गुरू मत है और प्रेय मार्ग मन मत है। अब तू गुरू आज्ञा से साधन–अभ्यास करती हो, मन को नियन्त्रण में रखती हो और आत्मिक आनन्द का अनुभव करती हो यानी शब्द प्रकाश का अनुभव जब आपकी सुरत करती है, तब आप श्रेय मार्ग पर चल रही हो। किसी दिन आपका मन टी.वी. के सीन देखने को करे और आप वह अपना साधन अभ्यास न करके मन के आनन्द लेने में लग जाओ, उस समय आप प्रेय मार्ग पर हैं।

श्रेय मार्ग श्रेष्ठ तथा उच्चतम है, क्योंकि यह सीधा आध्यात्मिकता की तरफ ले जाता है और उसमें गिरने का डर नहीं रहता

और यह सीधा मंजिल पर ही पहुंचाता है। पहले इसमें मन को एकाग्र करने में कुछ रूकावटें आती हैं। जैसे तू खुद अनुभव भी कर रही है। परन्तु प्रेय मार्ग में यह कठिनाई नहीं आती, क्योंकि मन ने जो चाहा, करवा लिया। यह मार्ग शुरू में तो बड़ा सुहावना या अच्छा लगता है, परन्तु इच्छाओं की पूर्ति करते जाने में अन्त में इसका परिणाम बुरा ही निकलता है। इसलिए सन्त सदा श्रेय मार्ग को ही अपनाने की शिक्षा देते हैं। तू समझ गई होगी कि प्रेय मार्ग में इच्छाओं की पूर्ति करते–२ जब इच्छाएं पूरी नहीं होती, तब दुःख होता है। और सन्त मत या श्रेयमार्ग में गुरू की मौज पर रहने की बात है। इस विषय में ओर अगले पत्र में लिखूंगा।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O. Dandu
Distt. Churu (Raj.)
24.3.2000

प्यारी बेटी कमल,

प्यार, सम्मान व आशीर्वाद। कल तेरे को जो आध्यात्मिक जीवन के विषय में कुछ लिखा था, जिसमें दो मार्ग की चर्चा थी – श्रेयमार्ग और प्रेय मार्ग। सन्तों ने या ऋषियों ने श्रेय मार्ग को अधिक ठीक बताया, परन्तु आदमी की प्रकति की बात है कि किस मार्ग को अपनाता है?

श्रेय मार्ग गुरू मत है। प्रेय मार्ग मन मत है। श्रेय मार्ग की शिक्षा मन्त्र है और प्रेय मार्ग की शिक्षा तन्त्र है। श्रेय मार्ग का अर्थ नेक या अच्छा है, जो बिना किसी प्रकार की हानि के आहिस्ता–२ अभ्यास करते हुए अपनी मंजिल तक ले जाए। आदमी जिस वस्तु को देखकर बहुत हैरान हो जाये या होश खो बैठे, वह प्रेय मार्ग है।

भक्ति, सच्चा ज्ञान, योग सब श्रेय मार्ग हैं। परन्तु मारण, मोहन, उच्चाटन, मैसेरिजम, हिपनोनाटिज, टैलीपैथी और दूसरे अभ्यास

यह सब प्रेय मार्ग हैं, जिनका उद्देश्य इन्द्रियों सम्बन्धी इच्छाओं की पूर्ति, मन का अहंभाव, नेक नामी, दिखावा या सांसारिक स्वार्थो की पूर्ति है। अब तेरे बात समझ में आ गई होगी कि श्रेय मार्ग हर बात में गुरू की मौज पर रहते हुए काम करना, अन्तर का साधन करना और होए वही जो राम रचि राखा'' वाली बात का सहारा। फिर समझो कि श्रेय मार्ग गुरू मत है और प्रेय मार्ग मन मत है। श्रेय मार्ग की शिक्षा मन्त्र है, प्रेय की तन्त्र है। वैसे दोनो ही मार्ग आध्यात्मिकता के हैं। केवल बात समझ कर जीवन को अपने साधन का अनुभव करते हुए, एक सम अवस्था में रखते हुए, खुशी, आनन्द, बेफिकरी से मालिक का सहारा लेकर ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, प्रेम से जीया जाए।

जो भी आज तक ब्राह्मण, साधु, सन्त, सिद्ध, नाथ, योगी, भक्त हुए हैं, उन्होंने जो भी गाया है, लिखा है अथवा अपना–२ अनुभव, ढंग, साधन या तरीका बताया है, वह अपने–२ समय के अनुसार अनुभव की बात कही या लिखी है। हमको गुरू कपा से सार वस्तु का ज्ञान परम दयाल जी की कपा से हाथ आया है। अनुभव से अब अपने रास्ते पर प्रेम, विश्वास, आश रखकर चलती जा। उचित समय पर मंजिल पर पहुंच जाओगी। गुरू का गुण गाती जाओ।

हर भक्त, सन्त तथा साधु का उसके संस्कारों के अनुसार अनुभव है सबकी बात एक नहीं हो सकती है। किसी का मन्त्र का मार्ग यानी श्रेय है, किसी का तन्त्र का मार्ग तो किसी का मिलाजुला। किसी का अपना अनुभव हो सकता है, किसी का ज्ञान दूसरों की कही बातों को दोहरना या हर बात में पिछलों का ही उदाहरण देते रहना वे अपना सत्संग समझते हैं।

तुम शरीर, मन, आत्मा को सम अवस्था में रखकर सुरत शब्द योग का सहज में साधन करती रहो। तेरा रास्ता सीधा, सच्चा और बहुत ही उत्तम है। यह मेरे पत्र और कैसिट पास रखना। तेरे और दूसरे, जो इस मार्ग पर चलेंगे, काम आयेंगे।

अब तेरे को शंका नहीं होनी चाहिए कि तू गुरू मत में हैं और तेरे को मन्त्र की शिक्षा मिली है। तन्त्र का मार्ग तेरे लिए ठीक नहीं

था। उसमें गिरने का भय था। तू ने इसका अनुभव भी कर लिया है। टी.वी. इत्यादि देखने से मन काबू से बाहर हो जाता है और मन की इच्छा कभी खत्म नहीं होने वाली है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
29.3.2000

प्यारी बेटी कमल,

प्यार, सम्मान व आशीर्वाद। मैंने पहले पत्रों में तेरे को आध्यात्मिक जीवन के विषय में लिखा था कि शरीर, मन और आत्मा के मेल जोल को ही आध्यात्मिकता कहते हैं।

अब नाम के विषय में कुछ और लिखना चाहता हूँ। नाम लोग इसलिए देते हैं कि उनको शरीर का कष्ट न हो,मन की बेचैनी न हो और शान्ति मिले। निज घर जाने के लिए तो कोई हजारों में एक हो सकता है।

शारीरिक सुख – शरीर भोजन से बनता है, अतः भोजन सही और भूख से कुछ कम खाने से स्वास्थ्य या शरीर ठीक रहता है। यदि स्वास्थ्य बिगड़ जाए तेा डा० या हकीम से सलाह लेकर खान–पान का परहेज आवश्यक हो जाता है।

मानसिक सुख–सुन्दर विचार रखे जायें। परन्तु किसी कारण से सुन्दर विचार न रहने से बेचैनी होने पर गुरू या अनुभवी महापुरूष अजपा जाप और गुरू स्वरूप का ध्यान बताता है, जिससे मन कन्ट्रोल (वश) में रहे और उटपटांग विचारों में न उलझे। शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए बहुत जरूरी हैं। यही शक्ति है, जिसको बिना कारण नष्ट करने वालों को शरीर और मन के रोग घेर लेते हैं और उनको नाम की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

हर आदमी की प्रकति अलग–२ होती है और उसके शरीर व मन के दुःखों के भी कई कारण हो सकते हैं, परन्तु यह बहुत ही जरूरी है कि नाम की प्राप्ति या समाधि के लगाने के लिए शरीर व मन स्वस्थ हो।

जब तू साधन करती है और शब्द व प्रकाश का अनुभव करती है, तो इतनी देर तेरी समाधि लगती है। फिर जब संकल्प, विकल्प आते हैं, नीचे आ जाती है। यह एक दिन की बात नहीं है। प्रेम, उमंग, श्रद्धाभाव से नियमित साधन करती जाओ।

शरीर को ठीक रखने के लिए बहुत ही सादा भोजन करो, जो जल्दी हजम हो जाये और थोड़ा काम भी करो। जीभ के स्वाद को छोड़ो। जीवित रहने के लिए भोजन करो। मन के आनन्द को छोड़ो। इसको सुमिरन, ध्यान से वश में रखो या सत्संग तथा धार्मिक विषय में लगाओ। जब कुछ काम न हो तो सहज में सुमिरन, मन ही मन और गुरू स्वरूप को कुछ मानकर माथे में रखो।

जब तुम शरीर और मन से ऊपर उठ जाती हो यानी शब्द और प्रकाश का अनुभव करती हो, तब नाम में रहती हो। यह साधान ही तेरे को निज घर में पहुंचा देगा। यहां दिन या सालों का हिसाब नहीं है। सहज में साधन करती चलो। इसके आगे जो भी अनुभव किसी को हुआ, बता नहीं सका। चुप्पी और परम शान्ति बताते हैं, तो खुद अनुभव कर लेना। गुरू को हमेशा मन में रखकर उसकी दया, मेहर का गीत गाती रहना, ताकि किसी तरह का अहंभाव मन में न आये। गुरू नाम ईश्वर, परमात्मा या मालिक का है और यह सब खेल उसी ही शक्ति का है, जिसका कोई रूप नहीं है। एक को मान ले और अन्दर जो साधन में शब्द तथा प्रकाश है, उनका अनुभव करती रहो। विश्वास रखो। तेरे सब काम गुरू कपा से बनते जायेंगे।

मैं 7.4.2000 को यहां से हिसार आऊंगा। रात को भूपसिंह के यहां रहूंगा। सुबह दवाई लेकर फिर जैसा तेरी छुट्टी

होगी, होशियारपुर चलेंगे। वहां चल कर दो दिन आराम कर लेंगे और जैसा मौका होगा, देख लेंगे। भूप सिंह व कमला से बात कर लेना, नहीं तो रेल से देख लेना और फोन पर बात कर लेना। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। साधन सहज में करती रहना, तेरा यही धन है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
19.4.2000

प्यारी बेटी कमला,

प्यार, सम्मान व आशीर्वाद। जहां तक सत्संग की बात थी, आपको गुरू कपा से पूरा अवसर मिला है – संग करने का, समझने का, विवेक का, अनुभूति का। अब केवल अपने अन्दर साधन के समय को बढ़ाना है और अपना काम करते हुए समस्थिति में रहने का अभ्यास पक्का करना है।

यह अभ्यास एक दो दिन की बात नहीं है। सहज में जीवन को आनन्द, खुशी, बेफिकरी, मस्ती में बनाना है। जहां भी जाती है, जो भी करती है, सब कुछ गुरू के नाम पर और गुरू की मौज और उसी ही के लिए करती रहो। बात बहुत आसान है। यह काम सुमिरन, ध्यान से, आश, विश्वास, खुशी, उमंग का हो। जो भी कुछ भला बुरा हो रहा है, सब जीव के अपने ही शुभ और अशुभ कर्म का फल है किसी के वश की कोई बात नहीं। यह बात समझ कर किसी के दोष मत देखो। अपना काम बनाओ और खुशी, उमंग का जीवन जीओ। गुरू के घर किसी बात की कमी नहीं है। जो कुछ भी चाहोगी, वही तैयार है।

तू हजारों में से एक है, लाखों में एक है। तू अपना काम

कर, परन्तु खुद सुन्दर, आनन्द, मस्ती, बेफिकरी का जीवन जी और जो भी तेरे सम्पर्क में आए, उसको मन के चक्कर से निकाल कर, प्यार, हौंसला, विश्वास और आश से जीना सिखा।

खुशी कहीं बाहर से नहीं आनी है। वह तो तेरे तन में, तेरे मन में, तेरे श्वासों श्वास हैं। मैंने तेरे को पहले भी लिखा था कि यह आध्यात्मिकता क्या है? शरीर, मन और आत्मा के मेल जोल का ही नाम है। शरीर, मन और आत्मा का आनन्द लेते हुए सुख, आनन्द, प्रेम, आश, विश्वास से जीवन चलता रहे।

प्रोग्राम सत्संग का ऐसा सोचा है। तू 7.5.2000 को चुरू आ जाना मदन के घर। यहां से जयपुर, भीलवाड़ा, दिल्ली, फिर देहली से अलवर फिर दादरी, उसके बाद भादरा और फिर गांव आकर आराम करेंगे। बाकी तेरे आने पर सोच लेंगे। जैसा ठीक होगा, वैसी बात कर लेंगे। बम्बई का विचार बदल दिया है। फिर ही सोचा जायेगा।

तू अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना। फोन पर बात कर लेना। मैं अपनी हालात में मस्त हूँ। हर तरह से शान्त हूँ।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

Capt. Lal Chand
V.&P.O.Dandu
Distt.Churu (Raj)
20.4.2000

प्यारी बेटी कमल,

प्यार, सम्मान व आशीर्वाद। मैं अपनी समस्थिति में हर तरह से सन्तुष्ट हूँ और तेरे लिए गुरू महाराज जी से यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम इसी ही समस्थिति में रहते हुए जीवन का सफर करो। एक बहुत ही आनन्द, खुशी, प्रसन्नता का जीवन जीयो। लोगों को प्यार से जीना सिखाओ।

तुम कोई चिन्ता या विचार मत करो कि तुम कैसे यह ज्ञान दोगी? जिसने तेरे द्वारा ज्ञान दिलाना है, वह सब प्रबन्ध आप करेगा। तेरा भी कल्याण हो जायेगा और दूसरों का भी कल्याण हो जायेगा।

अभी साधना और जयपुर वाली कामना के पत्र आये हैं, दोनों दुःखों से भरे हुए हैं। दुःख सब मन के हैं और अज्ञान के हैं। इसके लिए गुरू का सत्संग चाहिए, जो मिलना बहुत ही भाग्य की बात है। प्यारी बेटी कमल, दुनिया निबल, अबल और अज्ञानी है। इनको किसी पूर्ण अनुभवी पुरूष का सत्संग चाहिए। यह गुरू का सहारा बहुत बड़ी बात है, परन्तु यह भी भाग्य से ही मिलता है।

मैं चाहता हूँ कि मेरी प्यारी बेटी कमला प्यार से जीने का ढंग बताये। बेटियां बहुत दुःखी हैं, इनको प्यार नहीं मिलता है और जीवन का आनन्द नहीं मिलता है। सतगुरू का सहारा, उस पर श्रद्धा, विश्वास, साधन से जीवन में रस, प्रेम, आनन्द और खुशी मिलेगी।

प्यारी बेटी, कमल यह दुनियां सीधी नहीं होगी। हम खुद सीधे हो जायें और काम सतगुरू ने समझाना है। उसके दर्शन, प्रेमभाव से काम सहज बनता है और उसकी Radiation से बहुत ही सहज में जीवन सुख में बदल जाता है। परन्तु बदलता उनका है, जिनमें श्रद्धा, विश्वास और प्यार होता है। यह भगवान की देन समझो या शुभ कर्म का फल होता है। अब तेरे को केवल सहज साधन करना है। सत्संग की समझ, विवेक और अनुभव वाली बात तूं जानती है। चलते, फिरते, खाते, पीते सहज में नाम का सुमिरन और श्रद्धा भाव से गुरू स्वरूप का ध्यान करती रहो। गुरू की मौज में रहते हुए अपना काम करो। गुरू तेरा रक्षक है। जहां बात व्यवहार की है, सबसे उचित व्यवहार करती रहो। खुश रहने की आदत बनाओ। गुरू को अंग संग समझो। वह हरदम तेरे पास है। प्रेम विश्वास की बात है। हमेशा आशावादी विचार रखो। सब खेल तेरे विचारों और विश्वास का है।

तेरा फकीरमय - लालचन्द

संदेश व आशीर्वाद

(आचार्य कप्तान लाल चन्द जी, दाँन्दू, चुरू) Sep.2001

प्यारे भाई प्रकाशक एवं सम्पादक श्री उमेश चन्द्र वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

''शिव–समाधि सन्देश मिला अति प्रसन्ता हुई पढ़कर। यह अति शुभ कर्म है जो दाता दयाल के ज्ञान का प्रचार करने की आपको उमंग मन में उठी है।

मैं परदयाल पंडित फकीर चन्द जी महाराज का शिष्य हूँ। मैं 1956 में उनकी शरण में गया था। जाने का कारण मैं सेना में सूबेदार के पद पर था। मेरी कंपनी में एक सूबेदार धर्म सिंह थे वह रात को कम्बल ओढ़ कर बैठे रहते थे। मुझे उनकी शिकायत आई कि यह रात को सोते नहीं हैं। मैंने उनको बुलाकर रात को बैठे रहने और न सोने का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि मैं रात को भजन करता हूँ। वह ब्यास के सत्संगी थे। मैंने उन से जानना चाहा कि भजन क्या होता है, मुझे बताइये। उन्होंने कहा कि गुरू जी बता सकते हैं मुझे बताने का हुक्म नहीं है।

मुझे यह लगन लग गई कि भजन क्या है? मैंने महेश योगी को पूछा मऊ में। पूना राम टेकड़ी में एक योगी से पूछा। आखिर ब्यास में पूज्य चरण सिंह जी महाराज से पूछा। उन्होंने कहा पहले आप सन्तों का सतसंग कुछ दिन करो फिर आना। मैंने लगभग एक माह अम्बाले में एक व्यास के सतसंगी बाबा जी थे, उन के सत्संग सुने परन्तु कुछ समझ नहीं आई। एक बात वह कहते थे कि इन्सान की खोपड़ी में 36 राग राग बज रहे हैं, परन्तु ठीक समझ नहीं आई।

फिर मैं चरणसिंह जी महाराज के पास व्यास गया। 10 दिन की छुट्टी लेकर। वहां बहुत संगत थी। मैं चाहता था उनसे मिलना परन्तु किसी ने नहीं मिलने दिया।

अम्बाला में मेरे पास एक ईश्वर सहाय नाम के पोस्ट मास्टर होते थे अलीगढ़ के रहने वाले। उन्होंने परम दयाल जी महाराज की

कई बार चर्चा की थी। उनके संस्कार के कारण मैं ब्यास से सीधा होशियारपुर गया। स्टेशन पर पूछताछ की और परम दयाल जी महाराज के घर 18, रेलवे मण्डी, होशियारपुर पहुंचा उन्होंने पूछा तुम कौन हो? क्या चाहते हो? मैंने अपना हाल कहा। उन्होंने पूछा तुम ब्यास गये थे, वहां यह भजन की बात क्यों नहीं पूछी? आखिर उन्होंने फरमाया कि अब 6 बजे हैं सुबह के, तुम 10 बजे मेरे पास आना।

मैं 10 बजे उनके पास गया। वह अपनी चारपाई पर बैठे थे। उस पर कुछ पत्र पड़े थे और सामने दाता दयाल जी की मूर्ति, जो आजकल होशियारपुर मन्दिर में है वह उनके कमर में थी। कुछ बात चीत हुई। फिर महाराज जी बोले कि भाई यह सामने जो मूर्ति देख रहे हो, जब यह शरीर मे थे मैंने इनको कुल मालिक मानकर इनकी सेवा करी और जो काम दुनिया या घर नौकरी का था, इन की सलाह लेकर किया, अब जब मैं समाधि में जाता हूँ तो मालिक का ही रूप बन जाता हूँ। जब शरीर में आता हूँ, तब साधारण आदमी बनकर काम करता हूँ।

यदि तुम इस मूर्ति पर कूड़ा करकट डाल दो या कोई अपशब्द कह दो तो तुम्हारा यह कोई नुकसान नहीं करेगी। क्या समझे?

मैंने कहा ''मैं कुछ नहीं समझा''। तब फरमाया कि धर्म विश्वास का विषय है। मेरा विश्वास था यह कुल मालिक, परम तत्व है। आपका विश्वास नहीं होगा तो कुछ नहीं।

इतना कह कर हुक्का पीना बन्द किया और समाधि में चले गये। मैंने दो चार मिन्ट में सोचा कि बात यह ठीक कह रहे हैं। इनको ही मालिक मान लेता हूँ। मैं आँख बन्द करके बैठ गया। कुछ ही मिनट में मेरे सिर के अगले भाग जहाँ छोटे बच्चों का तालवा होता है, माथे से थोड़ा ऊपर एक आनन्द सा हुआ और शब्द गूँजने लगा। मुझे खास प्रकार के आनन्द का अनुभव हुआ। तब परम दयाल जी ने हुक्के की आवाज की यानी हुक्का पीया। मैंने खड़े होकर पूछा, ''क्या यही भजन है?'' उन्होंने कहा, ''भजन तो यही है, परन्तु आप ज्यादा नहीं आधा घन्टा या 20 मिनट कर लिया करो।'' वह दिन और

आज का दिन ऐसा है कि जिन्दगी सहज ही दिनभर, सहज ही इस मस्ती में गुजर गई। ''सहजे ही धुन होत है, हरदम घट के माहि। सुरत–शब्द मेला भया मुँह की हाजत नाहि।'' अगले पत्र में बताऊँगा कि इस शब्द अभ्यास से मुझे जीवन में क्या लाभ हुआ है और क्या ऐसा इतना जल्दी शब्द खुलने का और भी उदाहरण है?

कप्तान लालचन्द

पत्र आचार्य कप्तान लाल चन्द जी

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैंने आपकी सेवा में पहले पत्र में लिखा था कि 1956 में जब मैं पहले दिन परमदयाल जी महाराज के घर मिला तो थोड़े समय में ही दाता दयाल की मूर्ति के सामने बैठे हुये परम दयाल जी की अपार कपा से वह पवित्र नाम, सार शब्द, या उल्टा नाम कुछ भी कहो, प्रकट हो गया था।

उस समय नाम प्रकट हो गया था और आज भी वही नाम गूँज रहा है, परन्तु उस समय और आज इस समय के दौरान की बीती हुई तो मैं बाद में मौज हुई तो लिखूंगा, परन्तु अब जो मुझे अनुभव है और मेरे साथ क्या गुजर रही है यह आज टूटे – फूटे शब्दों में लिख रहा हूँ।

परमदयाल जी ने किसी समय कहा था कि लाल चन्द मेरी असली सेवा है, जो मैं कहता हूँ इसका खुद अनुभव कर के, दुःखी लोगों को मेरा यह अनुभव या ज्ञान सच्चाई से प्रचार करना।

दूसरा, जब प्यारे मानवदयाल जी गुरू – गद्दी पर बैठे तो मैं पहली बार उनके दर्शन करने होशियारपुर बैसाखी पर गया था। शायद उनको किसी ने मेरे विषय में कुछ कहा होगा। मुझे पता नहीं है परन्तु उन्होंने हुक्म दिया था कि कैप्टन साहब सत्संग दो। मैं

चाहता नहीं था कि वहां गुरू के सामने मैं सत्संग दूँ परन्तु गुरू आज्ञा को मान कर मैंने कुछ कहा। जब मैं कह चुका तब उन्होंने फरमाया कि असली सत्संग यह है परन्तु न तो आप यह सुनने आते हो और हम भी जो आप चाहते हो वही कहते हैं।

उन्होंने मुझे तिलक किया, 201 रूपये दिये, एक बादाम की थैली, एक नारियल और एक कुर्ता – पजामा देकर कहा कि आप नाम दान दो और सत्संग में केवल अपना अनुभव बताया करो।

उसके बाद जहाँ प्यारे महाराज जी का हुक्म होता, मैं टूटे–फूटे शब्दों में जो मेरे साथ गुजरती यानी अपना अनुभव बांटता रहा। मैंने नाम दान देने की गुस्ताखी, अपने गुरूओं के होते हुये नहीं की और न अब करता हूँ। नाम दान तो गुरूओं से ही दिलाता रहा और अब भी प्यारे जरनैल साहब (श्री नेगी जी महाराज) से, दिनोद कँवर सिंह जी महाराज से। इसके बाद जिसका जहाँ विश्वास बने, धन–धन सतगुरू या ब्यास, आगरा, आशाराम बापू, यानी किसी गुरू पर विश्वास हो, वहाँ से ले लो। सभी गुरू मैं अपने समझता हूँ। गुरू नाम समझ, विवेक, अनुभव तथा ज्ञान का है जिसको जहां से यह वस्तु मिले वहीं से ले ले।

सत्संग मैं करा देता हूँ और किसी भाई को कोई शंका हो, उसका समाधान कर देता हूँ।

वैसे मैं तो घर में रहता हूँ। साधारण गहस्थ का जीवन है। बैसाखी पर होशियारपुर दर्शन कर आता हूँ। दशहरा देहली और साल में दो बार नवम्बर और मार्च में तारा चन्द जी महाराज के सत्संग भिवानी में जाता हूँ।

वैसे परमदयाल जी, दातादयाल जी ने सत्संग करा कर, लिख कर किसी चीज की कमी नहीं रखी। अब मेरे साथ ऐसा हो रहा है कि लोगों में जो श्रद्धालु भाई–बहन हैं उनके अंदर मेरा स्वरूप जगह–जगह प्रकट हो कर उनकी सहायता करता है, परन्तु मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं है। मैंने तो नामदान दिया ही नहीं।

सत्संग सुन लेते हैं, उनका विश्वास बन जाता है। जब वह कोई कठिनाई में होते हैं या प्रेमवश किसी वस्तु की इच्छा करते हैं तब मेरा स्वरूप या तो सामने नंगी आँखों के सामने आकर या साधना में या स्वप्न रूप में उनकी मदद करता है। जब रूप उनकी मदद करता है तब वे मेरे से मिलकर मेरी सेवा तन, मन, धन से करना चाहते हैं। मैं कहीं जाता आता नहीं, न मुझे पता होता है इसलिये मैं साफ कहता हूँ कि भाई तुम ठीक हो आप का विश्वास था इसलिये मेरे रूप में आप कि मदद हो गई है। सभी भक्तों की रक्षा होती आई है, परन्तु मुझे कोई ज्ञान नहीं और न आप की मदद करने मैं गया था।

सैन–बैन में तो सभी सन्तों ने यह बात कही है। जैसा ––''जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मुरति देखी तिन तैसी'' (गोस्वामी जी)। साफ बात परमदयाल जी ने कही और वही बात अब मैं कह रहा हूँ कि जगह–जगह मेरा स्वरूप प्रकट हो कर पमदयाल जी के शिष्यों में, प्यारे मानव दयाल जी के शिष्यों में, प्यारे जरनैल साहब (नेगी जी महाराज) के शिष्यों में तारा चंद जी, आशाराम, साँई बाबा जी, व्यास, धन–धन सतगुरू इन महापुरूषों के विश्वासियों में प्रकट हो कर उनकी मदद करता है और मुझे कोई मालूम नहीं है और मैंने धन–धन सतगुरू, पूज्य आशाराम जी और कई महापुरूषों को पत्र लिखकर पूछा है कि महाराज मैं तो कहीं जाता नहीं, मदद करने लोग कहते हैं किसी को कुछ और किसी को मेरा स्वरूप प्रकट हो कर मदद करता है। कई महापुरूषों ने कहा आप ठीक कहते हैं और कइयों ने उत्तर नहीं दिया।

एक दिन मैंने भिवानी में एक सत्संग दिया कि भाई मेरा रूप आप कई सज्जनों के अन्दर प्रकट हो कर मदद करता हैं, परन्तु यह आप का विश्वास व संस्कार था जो आप ने लिया हुआ है। मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं है। इसी ही को सन्तों ने काल या माया कहा है। मेरे सत्संग के बाद वहां के यानी (दिनोद राधास्वामी) महाराज

कँवर सिंह जी ने सत्संग दिया। उन्होंने कहा कि कैप्टन साहब यह बात कह सकते हैं परन्तु, हमारे आश्रम की मर्यादा है इसलिये यह बात नहीं कह सकते हैं।

मैं तो शुरू से ही शब्द अभ्यासी हूँ। न कोई यत्न न कोई साधान किया है सहज में ही दातादयाल व परमदयाल जी की दया से सार शब्द प्रकट हो गया और सहज में ही साधन अपने आप होता रहता है।

''सहजे ही धुन होत है, हर दम घट के माहि।''

''सुरत-शब्द मेला भया, मुँह की हाजत नाहि''

परन्तु हर आदमी की प्रकति भिन्न है। साधन के आन्तरिक अनुभव भी भिन्न–भिन्न होते हैं। मैंने प्यारे जरनैल साहब को मौखिक और लिखकर अर्ज की है कि, समय बदल गया है। यह इक्कीसवीं शताब्दी है, इसलिये समय के अनुसार ज्ञान दिया जाये। आज के मानव को जिस ज्ञान की आवश्यकता है, उस ढंग से सहज में ज्ञान देकर जीव को सुख–शान्ति का मार्ग बताया जाये।

प्यारे उमेश चन्द्र वर्मा जी, मैंने इस लम्बे समय के शब्द–योग से जो समझा है तथा निज अनुभव व प्यारे सत्संगियों के अनुभव तथा गुरूज्ञान से जो समझ आई है, वह हो सकता है गलत हो, मेरा कोई दावा नहीं है कि जो मैंने समझा है वही सही है परन्तु जब मैं जीता–जागता अभी मनुष्य शरीर में हूँ जगह–जगह और अलग–अलग गुरूओं के प्रेमी भाई, बहन, बेटियों के अन्दर मेरा रूप प्रकट हो हो कर उनकी मदद करता है और मुझे कुछ मालूम नहीं है। इसलिये मैं समझता हूँ कि हर मनुष्य के मन में बहुत शक्ति है और मानव चाहे तो कोई भी उस मालिक का रूप मान कर उससे मदद ले सकता है। भगवान को न तो आज तक किसी ने देखा है और न उसकी लीला किसी ने समझी है। उसका रूप मान लो और उस पर विश्वास करके जो चाहो मांगों, मिलेगा और हर कठिनाई में मदद होगी। यदि कोई साकार को न मान कर निराकार को ही मान कर उससे प्रार्थना करेगा तब भी काम होगा। यह मार्ग थोड़ा शुरू में कठिन है, जीव को सहारा चाहिये। आज विज्ञान का युग, बुद्धि–युग कहो। आज के

आदमी को प्रमाण चाहिए। इसलिये गुरू–ज्ञान के लिए किसी पूर्ण अनुभवी की संगत, सत्संग जरूरी है।

आप मेरा भाव अब समझ गये होंगे कि बाहर से संस्कार लेकर ही सब काम होते हैं। गुरू आदमी की प्रकति देखकर ऐसे संस्कार देता है कि उसकी बुद्धि निश्चयात्मक हो जाती है।

तो मैंने यह अनुभव किया है कि न तो बाहर से देवी आती है, न भूत आता है और न गुरू आता है। इन्सान का जैसा विश्वास बन गया है, जैसा संस्कार मन पर जम गया है। (इसको कर्म कह लो) जब इन्सान ध्यान करता है, तब वे संस्कार की शक्ल बनाकर सामने आते हैं। जो भी नजारे अंदर प्रकट होते हैं, सब भासते हैं, वास्तव में नहीं हैं। यही माया है।

जो मैंने लिखा है यह मेरा अनुभव है कोई दावा नहीं है। हो सकता है यह गलत हो परन्तु मैंने ऐसा अनुभव किया है। इस शब्द–योग के सहज साधन और सहज समाधि से मेरे अनुभव, सत्संगों के आडियो, विडियो कैसेट डाक्टर कमला देवी, संस्कत की व्याख्याता, फतेहाबाद के पास है, यदि जरूरी समझें तो दशहरा देहली में बात कर लेंवें।

फकीयमय, मानवमय

लालचन्द

पत्र : - आचार्य कप्तान लालचन्द जी

नवम्बर,2001

प्यारे उमेश चन्द जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

''शिव–समाधि सन्देश'' माह अगस्त का मिला। पढ़ा, जो समझा लिख रहा हूँ।

मैंने दाता दयाल का साहित्य पहले ''देवी चरण जी मित्तल''

की ''शिव'' पत्रिका से, नन्दू भाई जी की लेखनी से और परमदयाल जी के नाम से दाता ने जो पत्र लिखे थे वह लगभग 40 वर्षो से पढ़ता आ रहा हूँ। ''साहित्य समाज का दर्पण होता है।'' जो महापुरूष लिखता है, वह उस समय की राजनीति, सामाजिक व्यवस्था तथा धार्मिक हालात और अपना अनुभव लिखता है।

उसके पढ़ने से हमे यह समझ में आता है कि उस समय क्या हालात थे। दूसरा महापुरूष अपने अनुभव बताता है। जो आदमी उस समय उसकी संगत करता है, उसी ही को धर्म का अनुभव हो सकता है और उस सच्चाई का अनुभव करने से उसको परमशान्ति या परम आनन्द का अनुभव हो सकता है।

मेरी समझ के अनुसार दाता दयाल जी ने जिस सच्चाई का अपने अन्त समय में या पिछले जीवन में अनुभव किया था उसका ज्ञान परम दयाल जी को हुआ और किसी हद तक भाई नन्दू सिंह जी को हुआ। दूसरों का मुझे ज्ञान नहीं है।

परमदयाल जी को उन्होंने (दाता दयाल जी ने) कई सत्संगों में यह आदेश दिया था कि :–

''फकीर समय बदल रहा है, अतः मेरे तर्जे – बयाँ भी लोग पसन्द नहीं करेंगे, आप तालीम को यानी इस शिक्षा को बदल जाना। क्योंकि समय के साथ सब कुछ बदलता रहता है। ''

जमीं बदलती है, आसमाँ बदलता है।
मुकीं, मुकां जो बदले, समां बदलता है।।
नहीं है, एक बतीरे पे, यह जहां कायम।
बदलते रहते है सब, जब सारा जहां बदलता है।।

इसका मतलब हुआ जो भी महापुरूषों ने कहा है सब सच है, परन्तु उस समय के अनुसार ठीक था और जिन लोगों ने उनका संग किया, उनके बताये हुये मार्ग पर चले, वे सफल हुये और परम आनन्द व परम शान्ति का अनुभव किया। जैसे, जो बुद्ध भगवान, महाबीर, राम, कष्ण, मुहम्मद साहब, ईसामसीह तथा जितने भी पीछे हमारे महापुरूष हुये हैं और अपने समय में शान्ति तथा परम सुख

प्राप्त करने का ढंग, तरीका अपने–अपने अनुभव के अनुसार बताया वह सब ठीक था, और उन लोगों के लिये जो उनके जमाने में थे।

यदि आज हम उनकी बात दोहराते हैं तो लकीर पीटने वाली बात है जैसे साँप चला गया और उसकी लीक पीटने से वह नहीं मरेगा। मैं कोई सन्त महात्मा नहीं हूँ, न कोई चेले हैं, न कोई आश्रम है, गहस्थी हूँ, परन्तु मैंने परमदयाल जी महाराज की संगत में रहकर धर्म की जो अनुभूति की है उसके अनुसार इस समय जो भी महापुरूष धर्म का काम कर रहे हैं, अधिकतर लकीर पीट रहे हैं, पुरानी बातें जो महापुरूषों ने कहीं हैं, दोहरा रहे हैं। अपना तो कुछ कहते नहीं कि उन्होंने क्या नई खोज की है कि इस समय के इन्सान को सुख–शान्ति मिले। अब रामायण, गीता, महाभारत, बुद्ध, महाबीर जो भी महापुरूषों ने कहा था वह समय नहीं है। आज इक्कीसवीं शताब्दी चल रही है? और लोग Cash Religion चाहते हैं, Credit नहीं। यानी विज्ञान का समय है, उसी के तरीके से धर्म को भी समझना चाहते हैं और अनुभव भी विज्ञान की सुविधाओं का लाभ उठाते हुये करना चाहते हैं। अब जंगलों तथा गुफाओं में जाकर तत्व ज्ञान, आत्म–ज्ञान का लाभ नहीं उठाया जा सकता है। भाई! अब तो सब चुनौतियों का सामना करते हुये सहज में हमको इस तत्व–ज्ञान प्राप्त करने का ढंग जो महापुरूष हमारी प्रकति, हालात के अनुसार बताये इसकी आवश्यकता है। अब मेरी समझ तथा अनुभव के अनुसार, समय के अनुसार, हर आदमी की प्रकति तथा वातावरण के अनुसार ही महापुरूष और आचार्य लोग अपना स्वयं (खुद) का अनुभव सच्चाई से अपने अनुयायियों को बतायें और अपने ढंग से कहें तो लाभ की बात होगी।

जैसा मैने पहले लिखा है ऐसी बातें दातादयाल (महर्षि शिव) जी या अन्य महापुरूषों ने साफ नहीं कही हैं और न ही लिखी हैं। हाँ। इशारों में सबने कहीं हैं। उस समय यह दस्तूर नहीं था। परमदयाल जी ने अपने सत्संगों तथा प्रवचनों में साफ कहा है कि – ''मैं तो कहीं जाता नहीं, लोग अपने आश, विश्वास से मेरा रूप

बनाकर अपना काम बना लेते हैं।

इस समय के गुरू तथा आचार्य पुरूष भी अपने सत्संगों में यह सच्चाई बयान नहीं कर रहे हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं। यही कारण है कि सत्संगों में बहुत भीड़ देखने को आती है। परन्तु सत्संगी भाई–बहिन बजाय परम आनन्द व परम–शान्ति को प्राप्त हो, कट्टरपंथी अधिक हो रहे हैं। एक गुरू के शिष्य तथा दूसरे गुरू के शिष्यों में प्रेम–भाव के बजाय नफरत बढ़ रही है। यदि जीव को सत्संग में सच्चाई बताई जाये तो वह उदारचित्त और भ्रम शंकाओं से मुक्त हो सकता है और अपने जीवन को सुख, शान्तिमय व मुक्त बना सकता है। यह काम पूज्य आचार्य तथा गुरूदेवों का है कि पहले वे खुद अपने आपकी रहनी व साधन अभ्यास करके अपना जीवन सुख, आनन्द का बनायें, और फिर सत्संग में जीव की प्रकति के अनुसार अपने अनुभव का दान दें।

प्राचीन समय के महापुरूषों ने रोचक और भयानक तरीके से अपना अनुभव या पिछले महापुरूषों का ज्ञान पुस्तकों में पढ़कर दिया था वह समय कुछ और था, अब समय बदल गया है। जहाँ भी सत्संग सुनते हैं, सब वही पुरानी लीक पीटते हैं। राम ने यह कहा, बुद्ध ने यह कहा, तुलसीदास ने यह कहा – सब जगह पुरानी बात उस समय की बात को दोहरा रहे हैं।

जो उन्होंने अपने समय में कहा था, वह उस समय तथा उन लोगों के लिये ठीक था। यदि उनकी सलाह पर चल कर, उनकी संगत करके उस ज्ञान का खुद अनुभव किया हो, तब ठीक था।

अब घर–घर में गीता, रामायण, गुरूग्रन्थ साहब, कुरान शरीफ, बाइबिल और महापुरूषों के शब्द–वाणी हैं, और लोग पूजा–पाठ करते तथा पढ़ते भी हैं, परन्तु फिर भी बेचैन हैं।

इसलिये कहा है –''वक्त गुरू की संगत करो जो खुद मुक्त हों। आपको जो चाहते हो उसका सहज तरीका आपकी प्रकति के अनुसार बता देगा, और आप जो चाहते हो नसीब होगा।''

दाता दयाल जी ने जब यह सिलसिला जारी किया उस

समय किस्सा कहानियों द्वारा इस ज्ञान का प्रचार किया था। अन्त में उन्होंने अपना अनुभव पूरी मुक्ति या मोक्ष Detachment के लिये कहा है –

''नहीं कोई नाम रखना, नहीं कोई निशान रखना।
''नहीं की जब गई आदत तो, क्यों जबाँ पर हाँ रखना।।''

उन्होंने बहुत कुछ कहा और लिखा परन्तु आखिर, परमदयाल जी के सत्संगों में जबानी और लिखकर कहा कि :–

''फकीर, समय बदल जायेगा, मेरे तर्जे बयाँ भी लोग पसन्द नहीं करेंगे, शिक्षा को बदल जाना।

अब मैंने प्यारे जरनैल साहब (श्री नेगी साहब) को इस ''बैसाखी पर प्रार्थना की थी कि – ''जरनैल साहब पुरानी लकीर पीटने वालों में शामिल मत होना, खुद अनुभव करो और समय के अनुसार उस सच्चाई को लोगों के अधिकार, संस्कार तथा प्रकति के अनुसार अपने ढंग, तरीके से, सहज तरीके से परम–शान्ति तथा परम–आनन्द प्राप्त करके जीव इस ही जीवन में सुख आनन्द का जीवन बिता सके, ऐसा ज्ञान देने की कपा करे।''

जो मुक्ति का आनन्द है, इसी ही जीवन में जीव भोग सके। मरने के बाद वाली बात आज के आदमी को नहीं जँचती है –

''जीवत मुक्त सो ही मुक्ता है''।

प्यारे उमेश चन्द्र जी, मैंने जो अनुभव किया है आपकी सेवा में लिखा है और मौज हुई तो आगे भी लिखूँगा। मेरा कोई दावा नहीं कि यह ही सच्चाई है, हो सकता है गलत हो। न मैं यह चाहता हूँ कि आप मेरे लेख प्रकाशित करें। आप दाता दयाल के विश्वासी हैं इसलिये मुझे आप से प्यार है।

दशहरा पर प्यारे नेगी जी, जज साहब, सभी आचार्य सज्जनों, आप तथा सभी भाई बहनों के दर्शन गुरू की मौज हुई तो करूँगा।

आपका भाई लालचन्द

पत्र : - आचार्य कप्तान साहब जी

Dec. 2001

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैंने आपको पहले पत्र लिखा था कि मुझे यह राधास्वामी नाम, राम नाम या उल्टा नाम, शब्द या सार शब्द के साधन से क्या प्राप्त हुआ? दूसरे पत्र में इस नाम से मुझे क्या मिला। एक तो दुनियांके विचारों से किसी बात अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष की प्राप्ति इसी ही जीवन में अनुभव कर रहा हूँ। मेरा स्वरूप सत्संगियों में प्रकट होता है और मुझे कुछ मालूम नहीं कि कौन मेरा ध्यान कर रहा है? मैंने कोई चेला नहीं बनाया है। जहाँ मैं सत्संग देता हूँ, लगभग सभी गुरूओं के चेले आते हैं। खासकर परमदयाल जी, मानवदयाल जी, जरनैल साहब, ताराचन्द जी महाराज और सभी राधास्वामी पंथ वाले।

बम्बई के एक सेना के कर्नल आर०एस० नागर साहब की पत्नी जो पहले परमदयाल जी का ध्यान करती थी, बाद में जरनैल साहब का ध्यान करने लगी। एक दिन सुबह अभ्यास कर रही थी, बम्बई कोलाबा में मेरा रूप प्रकट हुआ और एक दीपक जलाया और उसको कहा कि इसकी रोशनी का ध्यान करो। उसके बाद रूप गायब हो गया। उसने पूछा कि, मैं तो अपने गुरू जी का ध्यान कर रही थी। आप का रूप कैसे प्रकट हुआ? यह दीपक जलाकर यह कहना कि प्रकाश का ध्यान करो, वह क्या बात है? मैंने उनको लिख दिया कि पत्र में यह रहस्य नहीं समझोगी कभी बैसाखी या दशहरा पर देहली में मिलेंगे, तब बात होगी। उन्होंने लिखा कि हम यह रहस्य जल्दी जानना चाहते हैं, हमें इतनी सब्र नहीं कि आप बाद में बतायें।

खैर मुझे बुम्बई बुलाया गया। वहां प्यारे आचार्य जवाहर लाल चौधरी व निर्मला पण्डित ने सत्संग का प्रबन्ध किया। सभी बुद्धिमान सज्जन थे मैंने क्या कहा, वह तो मुझे ठीक याद नहीं परन्तु यह कहा कि मुझे इस बात का कोई मालूम नहीं कि मैं आपके अन्दर प्रकट हुआ और आपसे दीपक की बात कही हो। परन्तु इसका रहस्य यह

है जहां तक कि मेरा अनुभव है। इसका प्रश्न था कि मेरे गुरू जी का रूप प्रकट ना होकर आपका रूप क्यों प्रकट हुआ? इस रहस्य का भी उसको मतलब समझाए।

उस सत्संग में प्यारी आचार्या निर्मला पण्डित का एक लड़का जो बम्बई में ही Custom Officer है। उसने एक प्रश्न किया कि परमदयाल जी यहाँ आते थे। वह भी यही बात कहते थे कि मैं कहीं नहीं जाता, लोग अपने आश विश्वास से मेरा रूप प्रकट करके सहायता ले लते हैं। और यही बात आप कहते हैं कि आप कहीं नहीं जाते सब विश्वास का खेल है। उसने कहा कि उनकी पत्नी साँई बाबा का विश्वास रखती है। साँई बाबा जो उनके स्वप्न में आकर कहते हैं, वह बात ठीक होती है। इसलिये उन्होंने साँई बाबा से पूछा कि क्या आप जाकर अपने भक्त को बताते हो? साँई बाबा ने कहा ––''हाँ मैं जाकर भक्त को बताता हूँ।'' फिर बम्बई में कोई और महापुरूष सत्संग दे रहे थे। सत्संग के बाद वह कहते थे कि वह उस महापुरूष से मिला और पूछा कि –''महाराज जी आप अपने भगत में प्रकट होकर जब उसकी मदद को जाते हो तो आपको मालूम होता है क्या ?'' तब उस महापुरूष ने उत्तर दिया हम जाते भी हैं और नहीं भी जाते हैं।

मैंने उस Custom Officer से कहा कि हो सकता है किसी महापुरूष में ऐसी शक्ति हो परन्तु जहाँ तक मेरा अनुभव है मेरे में यह योग्यता नहीं है। जो विश्वास करते हैं, उन्हीं ही में शक्ति होती है। यही बात मेरे गुरू परमदयाल जी ने अपने सत्संगों में साफ कही है। यही बात मेरे साथ गुजर रही है कि लोगों में मेरा रूप प्रकट होकर उनकी मदद करता है परन्तु मुझे कुछ पता नहीं होता है।

सन्तों का पंथ इससे आगे है। यह रंग–रूप, ऋद्धि–सिद्धि मन का खेल है और यही कालमत है। इस दुनियां में जिस किसी को सिद्धि, सफलता चाहिये उनके लिये यह ठीक है कि किसी महापुरूष का विश्वास करके उस रूप का ध्यान करे। जिसका ध्यान बन जायेगा, जो भी इच्छा होगी, सफलता मिलेगी, परन्तु इसके साथ

सत्संग, किसी अनुभवी का जरूरी है। शिव संकल्प होना जरूरी है। यह लोक संकल्प का है जैसा ख्याल होगा, जैसा विचार होगा, वैसा ही होगा। साधन करने वाले को कभी भी निराशा यानी घटिया विचार नहीं रखना चाहिये।

शेष फिर कभी।

आपका भाई लालचन्द

पत्र - आचार्य कप्तान लालचन्द जी

Jan. 2002

प्यारे सम्पादक श्री उमेशचन्द्र वर्मा जी,

सप्रेम राधास्वामी।

आपकी सेवा में मैंने इस समय के अपने अनुभव और समझ के विषय में आपको जो लिखा था उसे आपने माह अक्टूबर २००१ में छपवाया है, इसके लिये धन्यवाद। इसके आगे जो मैं आपको लिखना चाहता हूँ वह लगभग आपने 24-25 ता० के सत्संग में प्यारे जरनैल साहब (विजय नरेश नेगी जी) और लगभग सभी आचार्यो ने अपने भाव व्यक्त किये हैं, वही हैं।

इसका आशय यह है कि परम सुख और परम शान्ति के लिए जिस समझ, विवेक, अनुभव तथा ज्ञान की आवश्यकता है, वह इस समय के किसी अनुभवी महापुरूष के दर्शन, सेवा, सत्संग को सुनकर, उसके पास बैठकर अनुभूति की जा सकती है, बात यह है कि जिस वक्त ऐसा महापुरूष हमारे बीच में आता है, उस समय उसको लोग समझ नहीं पाते। उसके चले जाने के बाद लोग उसके लेख, उसकी चर्चा, उसकी प्रशंसा करते हैं। उससे परम सुख और परम शान्ति देने वाला लाभ लोगों को नहीं होता।

यह समझिए कि हर घर में गीता, रामायण, महाभारत, गुरूग्रन्थ–साहिब, बाईबिल, कुरान–शरीफ और भी जैसा जिसका विश्वास है, उसके अनुसार ग्रन्थ रखे हुए हैं। लोग पढ़ते हैं परन्तु

शान्ति तो किसी को नहीं है। इसका यह मतलब नहीं कि जो हमारे ऋषि–मुनियों ने, अवतारों ने, सन्तों ने जो आज से पहले कहा है, वह गलत है। जो कुछ उन्होंने कहा है तथा लिखा है, वह सब उस समय के लोगों के लिए और हालातों के अनुसार बिल्कुल सही है और हमारे पास इन ग्रन्थों का प्रमाण है कि हमारे पूर्वज जो महापुरूष हुए हैं, उन्होंने अपनी योग्यता, अपने साधन व अनुभूति के अनुसार जो कहा है, वह हमारे लिए प्रमाणस्वरूप है।

परन्तु आज के मनुष्य के लिए इस समय में जो अनुभवी तथा वीतराग पुरूष अब हाजिर होगा, वही सही मार्ग–दर्शन कर सकता है, क्योंकि यह इक्कीसवीं शताब्दी है। विज्ञान और बुद्धि का युग है। आज के मानव की समस्या ओर तरह की है और उनकी समस्याओं के समाधान के ढंग भी ओर हैं। समय बदल गया है। मेरे प्यारे पूज्य मानव दयाल जी महाराज कहा करते थे –

जमीं बदलती है, आसमा बदलता है
मकी मकां जो बदले, समय बदलता है
नहीं है एक बतिरे पे ये जहां कायम
सभी बदलते रहते हैं, जब सारा जहां बदलता है।

मेरा भाव यह है कि इस समय में परम शान्ति और परम आनन्द को प्राप्त करने वाला ज्ञान हाजिर कोई अनुभवी महापुरूष जो वीतराग अवस्था में है, उसीसे मिल सकता है यह समझिए कि जलते हुए चिराग से ही दूसरा चिराग जलाया जा सकता है। बुझे हुए दीपक के साथ यदि दूसरा दीपक लगाकर जलाना चाहें तो दीपक नहीं जलेगा।

मैंने इसका प्रमाण आपको अपना स्वयं का दिया है कि मैं परम दयाल जी के सामने बैठा। वो उस समय समाधि में थे। उनके Radiation से बिना बोले, सहज में ही वो सार–शब्द मेरे अन्दर प्रकट हो गया और अभी लगभग हर समय उसकी अनुभूति बनी रहती है।

दूसरा, सत्संगी भाई–बहन, बेटियां मेरे स्वरूप को जगह–जगह अपने अन्दर प्रकट करके जैसी आवश्यकता है, सहायता लेते हैं परन्तु

मेरे को इस विषय में बिल्कुल ज्ञान नहीं है। इससे जाहिर है कि हर आदमी के मन में बहुत बड़ी शक्ति है। जो भी सच्चे मन से जो इच्छा करता है, जल्दी उसको प्राप्त हो जाता है। बाहर का गुरू या महापुरूष केवल संस्कार देता है और उसकी Radiation काम करती है।

मैं अगले पत्रों में आपको यदि मौज हुई तो लिखूंगा कि मेरे साथ क्या गुजरी? और जिन सत्संगी भाई–बहनों ने विश्वास किया, उनके साथ क्या गुजरी? मैंने आपको पहले भी लिखा था कि यह मेरे अपने अनुभव हैं। हो सकता है ये गलत हों। मेरा कोई दावा नहीं है कि जो मैंने अनुभव किया है वही सच है। मैं चाहता हूँ यदि मेरा कोई भ्रम हो तो मुझे मार्गदर्शन किया जाये।

आपका भाई - लालचन्द

पत्र - आचार्य कप्तान लालचन्द जी

Feb.2002

प्यारे उमेशचन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

आपकी सेवा में मैंने अक्टूबर में पत्र लिखा था। उस में लगभग अपना अनुभव उस सच्चाई को प्राप्त करने के विषय में लिखा था। वैसे दशहरा सत्संग में प्यारे जरनैल साहब (नेगी जी) और सभी आचार्य गुरूओं ने वही बात अपने अपने ढंग या तरीके से कही थी। यह सच्चाई जिसका अनुभव होने पर परम सुख व परम शान्ति मानव को मिल जाती है, न तो यह लिखी जा सकती है और न बताई जा सकती है। इसका अनुभव किसी वीतराग, पूर्ण अनुभवी पुरूष की संगत–दर्शन–सेवा से अनुभव में आ सकता है, यह मेरा खुद का अनुभव रहा है और पिछले महापुरूषों ने भी सैन–बौन में यही बात की है। जैसा –

''नानक नदरी नदर निहाल''
तथा कबीर के शब्दों में

कहा कहे अनकही भली है
वहाँ तो वेद शास्त्र कुछ नाहीं,
वहाँ अकथ यहाँ कथा चली है।
कहे कबीर सुनों भई साधो,
सोहम् हंसा सरब मयी है।

एक चीन के महापुरूष लाओत्से ने भी अपने ग्रन्थ में लिखा है कि सच्चाई बताई या लिखी नहीं जा सकती और जो बताया जाता है, लिखा जाता है सच्चाई नहीं हो सकती है। भाव यह कि इस सच्चाई की जिसको लगन हो, इच्छा हो या चाह हो किसी पूर्ण समझदार विवेकी अनुभवी व ज्ञानी महापुरूष की संगत सेवा दर्शन करके अनुभव कर सकता है। विज्ञान के विचार से यह "Law of radiation" है। मैंने परम दयाल जी की संगत से ऐसा समझा है और अनुभव कर रहा हूँ मेरा कोई दावा नहीं है कि यह जो मैंने समझा है, यह सच्चाई है। मैंने पहले पत्रों में जो अपना अनुभव लिखा है उसको पढ़कर कोई यह विचार न करे कि पहले हमारे ऋषियों ने अवतारों ने या सन्तों ने जो लिखा है या कहा है वे गलत है। उन्होंने शोधकर साधन, अभ्यास करके जो अनुभव लिखे हैं, शास्त्र लिखे हैं, उस समय के अनुसार सब ठीक है। हमारे लिये धरोहर छोड़कर गये हैं। हमारे लिये प्रमाण है। परन्तु केवल उनको पढ़ते ही रहे। यानी केवल उनका पाठ करते रहे या सत्संगों में केवल उनकी लिखी बातों को दोहराना ही सत्संग नहीं है। हम खुद अनुभव करें, जो उन्होंने लिखा है या कहा है किसी विशेष आदमी या जो उनके सामने बैठे थे और किसी विशेष समस्या में थे उनकी कठिनाई या परेशानी को सुलझाने के लिये महापुरूष ने उनको कहा था और हमने उसी बात को धर्म समझकर तोते की तरह रट लगाना या वही बात दूसरों को बताना सत्संग समझ लिया है। यह वास्तव में सत्संग नहीं है। उन दिनों की बीती बातों को ही हम दोहरा रहे हैं। सत्संग का मतलब है हम खुद उस बात का अनुभव

करें और दूसरे जो प्यारे सत्संगी भाई, बहिनों ने अनुभव किया है उस अनुभव को बांटे। जिस विषय को मैं लिख रहा हूँ, परम दयाल जी ने अपने सत्संगों में बहुत साफ लिखा है जिन्होंने उनका दर्शन किया, वचन सुना, सेवा करी और सच्चाई को समझा, अनुभव किया, उनको मेरी बात नयी नहीं मालूम होगी। जिन प्यारे प्रेमी भाई बहनों में मेरा स्वरूप प्रकट होकर उनकी मदद करता है, जो मुझे खुली आँखों से देखते हैं, स्वप्न में और साधन में देखते हैं और कहते हैं कि मैं उनकी कठिनाईयों में सहायता करता हूँ परन्तु मुझे कुछ मालूम नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता है उसकी क्या मदद मैंने की है? न मैंने किसी को नाम दिया है और न अब देता हूँ। हजूर पूज्य मानव दयाल जी की गैर हाजरी में कभी दशहरा, बैसाखी पर नाम दान देना पड़ा तो जरनैल साहब या जज साहब (के०पी० वर्मा जी) से ही नामदान दिलाया था। दूसरी नई बात कि दूसरे गुरू महाराजों के प्रेमी जो मेरा सत्संग सुनते हैं, उन लोगों में भी मेरा रूप प्रकट होकर उनकी भी मदद करता है। यह खेल सब विश्वास का है। दो साल पहले मैं बैसाखी पर होशियारपुर गया था दूसरे दिन सुबह लगभग आठ बजे एक सज्जन जो वहां किसी फैक्ट्री में जनरल मैनेजर था, मेरे कमरे में आया। मैंने पूछा कि मैं आपकी क्या सेवा करूं, यानी किस काम के लिए आये हो। उसने कहा कि आपने मुझे बुलाया है। मैंने उससे कहा कि मैंने तो आप को नहीं बुलाया है। तब उसने कहा कि आज सुबह 6 बजे मैं ध्यान सुमिरन कर रहा था, तब आपका रूप प्रकट हुआ और कहा कि मैं सुबह नौ बजे मानवता मन्दिर में सत्संग दूंगा। आप आकर उसका लाभ उठाओ। मैंने उस समय उसको समझा दिया और जब सत्संग हुआ तब इसी विषय पर सत्संग दिया कि मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं है और न मैं कहीं जाता हूँ, यह सत्संगियों का विश्वास होता है और उनके मन में बहुत शक्ति है। मेरे में कोई सिद्धि शक्ति नहीं है, मैं सिद्धि शक्तियों से आगे निकल गया हूँ, वहाँ केवल शान्ति है।

उस सज्जन ने प्रश्न किया कि मैं तो अपने गुरू जी का ध्यान कर रहा था फिर आपका रूप प्रकट क्यों हुआ, उसका क्या कारण है?

मैंने इसका कारण जैसा मेरे समझ या अनुभव में आया बता दिया।

मुख्य बात थी कि आपका मन बहुत ही पवित्र है। आप सच्चाई चाहते हैं यदि आपके गुरूजी का रूप प्रकट हो जाता तो वह आपको यह सच्चाई नहीं बता सकते थे कि उन्होंने आपके अन्दर प्रकट होकर आपको नहीं बुलाया है क्योंकि ऐसी बात साफ कहने की मर्यादा आज तक सन्तों ने साधुओं ने गुप्त रखी हुई है। सैन–बैन में तो सभी ने कही है परन्तु साफ परम दयाल जी महाराज के सिवाय किसी ने कही नहीं है। इससे फायदा भी है परन्तु जो परम शान्ति या परम आनन्द को चाहते हैं, उनको नुकसान है। जो किसी ईष्ट का ध्यान करते हैं उनके साथ चमत्कार होते रहते हैं और मन की Will power (शक्ति) बढ़ जाने से इच्छाओं की पूर्ति होती रहती है परन्तु मन के ऊपर की मंजिल जहाँ शब्द और प्रकाश की अनुभूति होती है, नहीं पहुंच सकता है। परम दयाल जी के साधन में शब्द और प्रकाश दोनों रहे परन्तु मेरे अनुभव में शुरू से ही केवल शब्द रहा है उनसे जब पूछा कि क्या यही भजन यानी नाम है तब उन्होंने कहा था कि नाम यही है। इसके बाद लगभग दो या तीन साल तक जब उनके सत्संग में बैठता था तब कुछ नजारे आते थे, उनके विषय में मौज हुई तो कभी फिर लिखूंगा।

इस शब्द, सार शब्द, निजनाम, गायत्री, सावित्री उद्गीत, प्रणव और बहुत से नामों से हमारे पिछले संत, महात्माओं ने अपने–अपने अनुभव हमको बताये हैं। उनके हम कर्जदार हैं और एहसानमन्द हैं परन्तु अब यदि किसी को परम शान्ति या परम आनन्द जो हमेशा बनी रहे उसकी चाह, इच्छा, लगन हो तो उसके लिये यह जरूरी है कि इस समय जो महापुरूष यानी वक्त गुरू हो, उसकी संगत करें, सेवा, दर्शन, प्रेमभाव से उसके सामने बैठकर और उसकी सलाह लेकर अपना काम बनाये।

इससे पहले जो भी महापुरूष हुए हैं, उनकी वाणी पढ़ने या कही हुई बातें कहने या सुनने से कोई अनुभव नहीं होगा, यदि हुआ भी तो वह मन का और माया का ही होगा। जो मैंने समझा वह यह है कि साधन के साथ–साथ सत्संग जरूरी है यदि किसी वक्त गुरू के साधन का रास्ता नसीब हो गया है तो बहुत अच्छा है, परन्तु सत्संग के बिना वह साधन या अनुभव कुंए के मेढक की ही हालत होगी। जो मैं समझा हूँ या अनुभव किया हूँ कोई दावा नहीं है कि यही सच्चाई है, हो सकता है यह गलत हो मैं चाहता हूँ कि यदि मैं किसी तरह के भ्रम में हूँ तो मुझे कपा करके मार्ग दर्शन कराया जाये।

इस बार दशहरा सत्संग मैं प्यारे जरनैल साहब का सत्संग सुनकर मुझे, बहुत खुशी हुई और यह बात मैंने पहले भी कही है कि तेरी जाते–ए–पाक से बहुत सज्जनों का कल्याण होगा।

आप यह ''महर्षि शिव वार्ता'' पत्रिका निकाल रहे हैं। सच्चाई ईमानदारी से यह काम करते रहें, इस काम से आप जहाँ पहुंचना चाहते हैं, गुरू कपा से सब काम सहज में बन जायेगा। शेष प्यारे भाई सब मौज का खेल है जिससे जो काम लेना है लेंगे।

''करे करावे आप ही आप,
मानुष के नहीं कुछ भी हाथ।।

(गुरू नानक देव)

प्यारे भाई मैंने टूटे फूटे शब्दों में अपना अनुभव तथा विचार लिखे हैं। मैं न तो कोई महात्मा, साधू या आचार्य हूँ। दया तो परम दयाल जी की थी व मानव दयाल जी की। शेष सब आचार्य, गुरूओं व प्यारे सत्संगियों का आशीर्वाद है।

आपका भाई लालचन्द

पत्र - आचार्य कम्पान लालचन्द जी

March, 2002

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैंने पहले आप की सेवा में अपना अनुभव लिखा था कि सच्चाई न तो लिखी जा सकती है और न बताई जा सकती है। यह वक्त गुरू के सत्संग या संगत में बैठ कर सचेत होकर अनुभव की जा सकती है। मैंने उस विषय में पहले जो महापुरूष हुये हैं, उन का भाव व मेरे साथ जो बीती, उस का प्रमाण लिखे थे। सच पूछो तो मेरी बात पर तो किसी को विश्वास ही नहीं आता है कि वह अनुभव जो घर–बार, बाल–बच्चों, राज–पाट छोड़कर, जंगलों में जाकर पूरी उम्र बिताने पर पहले महापुरूषों के अनुभव में आया, इतनी बड़ी बात एक मामूली गहस्थी आदमी को कैसे 10 या 15 मिनट में परम दयाल जी के पास बैठते ही कैसे आ सकती है?

प्यारे उमेश चन्द जी हम लकीर के फकीर बन गये हैं। जब कोई सतगुरू हमें बुद्धि देने इस पथ्वी पर प्रकट होता है तो हम उस को पहचानते नहीं, पिछलों की कहानी या उन के कामों की बातें करते रहते हैं और वक्त गुरू की रेडियेशन या जीवन धारा जो हम को देना चाहता है, हम और ही विचारों में बहते रहते हैं उसको नहीं पकड़ते हैं।

होशियारपुर वैसाखी के अवसर पर मैं गया हुआ था। कुछ सत्संगियों ने प्यारे जनरैल साहब (नेगी जी) को मजबूर किया कि आप जैसे दाता दयाल जी, परम दयाल जी तथा पूज्य मानव दयाल जी सत्संग देते थे, वैसा ही बोलो। जनरल साहब ने कहा भाई मैं मेरा अनुभव बताऊँगा। इस बात पर नाराजी हुई। खैर मैने जैसे तैसे बात ठीक करवा कर मामला शान्त किया।

वक्त गुरू लकीर का फकीर नहीं हो सकता है। वह समय के अनुसार अपना अनुभव बाँटता है। लोग यानी सतसंगी यहाँ चूक

जाते हैं वे वक्त गुरू को स्वीकार नहीं करते। मैंने लिखा था कि जो महापुरूष, हमारे महात्माजन जो पहले हो चुके हैं, वे धन्य हैं, हम को बहुत अध्यात्म का धन दे गये हैं। हम उन के अति आभारी हैं। परन्तु वे तो अब जलते दीप नहीं हैं। अगर अब किसी को अपना दीप जलाना हो तो जलते दीप से ही दीप जला लो। उन के समय में जो सज्जन उन को पहचान गये थे उन्होंने उनसे लाभ उठा लिया, जो चूक गये वे चूक गये। उनके जीवन काल में तो लोगों ने उन की निन्दा की, पत्थर मारे, कइयों को जान से मारा था और अब उनकी पूजा होती है। उनके गीत हम सत्संगों में गाते रहते हैं।

हजूर मानव दयाल जी महाराज ने मुझे हुक्म दिया हुआ था, कि आप सत्संग में अपना अनुभव बता दिया करें। शास्त्रों का मुझे ज्ञान नहीं था और मैं चाहता भी नहीं था कि गुरू की स्टेज पर मैं बोलने की गुस्ताखी करूं। कभी बोलना हुआ तो थोड़ा बोल देता था।

एक दिन मैंने जैसा अनुभव था, बोल दिया। कई आचार्य गुरूओं ने निन्दा की और मानव दयाल जी महाराज को कुछ शिकायत की। उन्होंने कहा कि इसको मैंने हुक्म दिया हुआ है। आप समझ गये होंगे कि लोग सत्संग केवल पिछले महापुरूषों के कहे हुए को दोहराने को ही समझते हैं। हाँ उदाहरण हम उनका दे, यदि अपने अनुभव से मेल खाता हो क्योंकि उनकी वाणी तो सत्संगी भाई बहनों ने रट रखी है अतः आसानी से समझ में आ जाती है। जो हम को कुछ मिलना है, परम आनन्द व परम शान्ति को प्राप्त करने वाली वस्तु, वह तो सतगुरू वक्त की दया दष्टि से ही होगा, पिछले महापुरूषों की वाणी पढ़ने या रटने से यह हम को प्राप्त होने वाली बात नहीं है।

कुछ करना धरना नहीं है। सतगुरू के सत्संग में होश यानी श्रद्धा, प्रेम भाव से बैठो, कोई देर लगने जैसी बात मेरे अनुभव में नहीं है। एक दफा सन्त ताराचन्द जी (राधास्वामी दिनोद वाले) ने मुझे बुलाया था भिवानी (हरियाणा) सत्संग में। पहले तो वह अपना आश्रम जो भिवानी से 8 कि.मी. दूर था, दिखाकर लाये। भिवानी आकर

मुझे कहा कि आप सत्संग दोगे। सत्संग में लगभग तीन चार लाख सत्संगी थे। मैंने कहा महाराज मैं क्या सत्संग दूँ? परन्तु उन्होंने कहा आप को ही देना है। मैंने पूछा कौन सा सत्संग दूँ? उन्होंने कहा क्या सत्संग दो होते हैं? मैंने कहा एक तो यह होता है कि पिछले सन्तों, गुरूओं, अवतारों की कही हुई कथा कहना दूसरे आप को जीवन में क्या मिला या अनुभव हुआ है?

उन्होंने कहा, आप अपना अनुभव बताओ कि आप को क्या मिला और क्या समझे हो? शाम को सत्संग के समय उन्होंने मुझे बुलाया और सत्संग देने को कहा। पूरा मुझे अब याद नहीं है परन्तु मुख्य बात यह थी कि आप जिस नाम की महिमा, भजन, शब्दों में गाते हो, वह तो मैं 1956 में परम दयाल जी (फकीर चन्द जी) महाराज के सामने उनके घर 18 रेलवे मण्डी में 10 या 15 मिनट बैठा था उसी समय अनुभव हुआ था और अब वही नाम गूंज रहा है और जहां, जब भी भीड़ में या बाहर के शोर गुल में अनुभव करता रहता हूँ। सहज में ही अनुभव करता रहता हूँ।

सहजे हो धुन होत है, हरदम घट के माहि।
सुरत शब्द मेला भया मुँह की हाजत नाहि ।।

– कबीर साहब

मैंने कहा इस नाम की अनुभूति तो मैं गुरू कपा से प्राप्त करता रहता हूँ परन्तु मेरे अन्दर कोई भी सिद्धि शक्ति नहीं है। इस का सबूत मेरे साथ कोई आदमी नहीं है। सिद्धि शक्ति सन्त ताराचन्द जी महाराज में हैं इसका सबूत आप तीन चार लाख आदमी इनके दर्शन करने अपने घर–बार, काम–धन्धा को छोड़कर यहाँ बैठे हो।

उसके बाद सन्त ताराचन्द जी महाराज ने सत्संग दिया और कहा शब्द 18 प्रकार के होते हैं। उन्होंने बहुत तप किया था और बहुत मेहनत करके नाम की कमाई जैसा राधास्वामी वाणी में लिखा है, त्रिकुटी से लेकर गुफा तक पाँच नाम का साधन और आगे की बातें की, परन्तु मैंने यह पाँच नाम का साधन ही नहीं किया। मैंने खोपड़ी के अगले भाग जहाँ बच्चों का तालवा होता है, वहाँ उस सार

शब्द या और कोई नाम रखता है, उस की अनुभूति से शुरू किया था और उस में कोई बदलाव आज तक नहीं अनुभव करता हूँ। एक रस मेरी सुरत या (Attention) खिंची रहती है। कभी–कभी भूल भी जाता हूँ, फिर वही हालत हो जाती है। यानी मैं कुछ नहीं करता, अपने आप होता रहता है। प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा, मेरे अनुभव में यह आया है कि सतगुरू वक्त ही सब कुछ है वह कपा या दया करके लोगों को सहज में ही अपनी दया की बख्सीश दे देता है – जैसा कहा है –

फैज का दर है खुला, बन्द नहीं है हरगिज।
शर्त यह है कोई मांगने साएल आये।।

या

''नानक नदरी नदर निहाल।''

एक रोज जरनैल साहब (नेगी साहब) सत्संग दे रहे थे, पतंजलि भगवान के योग की बहुत सी विधियां बता रहे थे। हर आदमी की प्रकति भिन्न–भिन्न है और योग भी उसकी प्रकति के अनुसार ही विधि साधनी होती है। यह बात ठीक है परन्तु हर आदमी इतकी ऊँची बात नहीं समझ सकता। सन्त मत में या राधास्वामी मत में यह विषय बहुत ही संक्षेप यानी छोटा कर दिया है। तीन ही बात बता दी।

1. सतगुरू वक्त जो खुद ही सब कुछ विवेकी है।
2. उस का सत्संग, पूरे ध्यान या होश से सुनना।
3. सतनाम, जो सतगुरू से अमत झर रहा है।

मैंने वहां लोगों की बातें सुनी और घर आ कर प्यारे जनरैल साहब को यह पत्र लिखा कि कपा कर सन्त मत की तीन बात ही काफी है। वैसे मुझे मालूम था कि जनरैल साहब का कोई अधिकारी बैठा था, सत्संग में उसके लिये बोल रहे थे। सतगुरू सत्संग कोई पुस्तक पढ़ कर नहीं कराता है। सहज ही उसके मुख से अधिकारियों के लिए जो जरूरी है निकलता रहता है। आप मेरा भाव समझ गये होंगे कि हर आदमी एक Radio station है। सतगुरू

बहुत Power full Radio station है। सतगुरू के घट में जो हो रहा है वह Radiation बाहर आ रही है, जो सत्संगी श्रद्धा भाव लिये हुए प्रेम से उनकी आँख और माथे को देख रहा है, और क्या कह रहा है, ध्यान से सुन रहा है, ध्यान बननें में कुछ देर नहीं लगती है। मैं इस बात का तजुर्बा करता रहता हूँ और देखता हूँ कि यह ध्यान बनने में कुछ देरी नहीं है।

प्यारे उमेश चन्द्र जी, मेरे जीवन में कठिनाई नाम की कोई घटना ही नहीं घटी है। मैं तो सहज जीवन जीया हूँ और अब भी जीवन का एक उत्सव मना रहा हूँ।

''सदा दिवाली साध के आठो पहर आनन्द''

ऐसी स्थिति में जीवन का रस ले रहा हूँ। परन्तु हर आदमी की प्रकति भिन्न होती है यानी यह अधिकार और संस्कार की बात है। सबसे संक्षेप यानी छोटी बात है कि :–

''गुरू पर डालूँ तन, मन, वार,
गुरू पर जाऊं, मैं बलिहार।''

मेरा पूरा भाव आप समझ गये हैं कि जो भी महापुरूष सत्संग करा रहे हैं, सब अति धन्य है, जो मानवता की सुख–शान्ति, समय, हालात, अधिकार और संस्कार के अनुसार सेवा कर रहे हैं। जो महापुरूष हम को ज्ञान दे कर चले गये, वे हमारे पूज्य और प्रातः स्मरणीय हैं। हम को बहुत बड़ी दौलत दे गये हैं। हमको जगाने के लिये आये थे परन्तु थोड़े लोग जाग पाये।

हम बहुत ही भाग्यशाली हैं जो इस समय में पैदा हुए हैं। आज सन्तों के दरबार खुले हैं। बिना किसी भेद भाव के हम जायें और उनकी संगत, सेवा, प्रेम भाव से दर्शनकरके भली भाँति दण्डवत प्रणाम करके विधि सीख कर अपने अन्दर डुबकी लगा कर वह हीरा जो अपने ही अन्दर हैं उस को खोजें। बस इतनी सी बात है।

सप्रेम राधास्वामी।

आपका भाई लालचन्द

पत्र आचार्य शिरोमणि कप्तान लालचन्द

April, 2002

प्यारे संपादक श्री उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैं 6 Jan. 2002 को झुझुनू Girls P.G. College होस्टल में सत्संग देने हेतु गया था। वहां की वार्डन और कुछ मुख्य व्यक्ति मेरे जानकार हैं, अतः उनके बुलाने पर मैं गया था।

मुझे सत्संग दे कर अति खुशी हुई क्योंकि यदि जवान लड़के लड़कियाँ मेरा सत्संग सुने तो उनको विशेष लाभ होगा। यही उम्र है अपनी जीवन यात्रा रसदार बनाने की। हर काम का समय होता है। मैंने जो कहा वह तो उसी समय सुनने की बात थी परन्तु मैंने सत्संग में (Sex) सैक्स पर बोला, सन्तान उत्पत्ति पर बोला, जीवन रसदार और सुन्दर कैसे बनाया जाये, शरीर के रोगों से कैसे बचा जाये, मानसिक तनावों में कैसे बचा जाये। पति–पत्नी किस तरह से रहनी बनायें कि जो शादी करके लाते हैं, उस समय जो प्यार और उत्सव, उमंग होता है वही बुढ्ढा होने तक यानी यह शरीर छोड़ने तक बना रहे। यह संसार का जीवन ही स्वर्ग की तरह कैसे बन सकता है? इन बातों का ढंग या तरीका जो मैंने अपने जीवन में अपनाया और जो गुर हाथ में आया, बताया कि ''ध्यान और प्रेम'' ही जीवन को सुन्दर, आनन्द व शांतिमय बनाने की दवा है। हमारे बड़े पूर्वज जो हुए हैं उन्होंने कहा है कि सर्व रोगों की औषधि ''नाम'' है।

मेरे जीवन में पढ़ने, लिखने या सुनने की बात तो बहुत थोड़े समय में ही वह अनुभव जिसके लिये महात्माओं को समय लगता है और मेरे साथ ऐसा हुआ कि कुछ ही मिनट परमदयाल के पास बैठने से अनुभूति हो गई और वह अनुभूति जब ही मैं चेतवान या सावधान होता हूँ, हमेशा बनी रहती है।

अब सत्संग का तरीका या ढंग ऐसा है कि जब मैं सत्संग देता हूँ तब विचारों से ऊपर निकल जाता हूँ। जहाँ कोई विचार नहीं

रहता केवल वह एक नाम और दूसरा मैं सुनने वाला होता हूँ। अब जो सामने बैठे होते हैं सत्संग के लिए उनके विचार जिसमें वे खास तरह से होते हैं, उनकी Radiations, भाव विचार आकर मेरे मन पर पड़ते हैं और मेरे मुंह से उनका उत्तर जिस विचार से उनको अधिक कष्ट है या लगाव है, वही बात निकलती है। यानी उनके सवालों का उत्तर मेरे सत्संग में मिल जाता है। शर्त यह है कि कोई ध्यान से मुझे देखता रहे तो उन के सब उत्तर सत्संग में ही मिल जाने चाहिए।

यही कारण है कि झुंझुनू गर्ल्स पी.जी. कॉलेज होस्टल में मुझे सैक्स (Sex) पर बोलना पड़ा क्योंकि 20 से 28 साल की उम्र वाली बेटियां वहां थी और उनकी यह समस्या थी तथा उन के विचारों में यह भाव विशेष था और उनकी समस्या का सहज समाधान जो मेरी समझ में आया, कह गया। इसी ही तरह विवाह शादी की समस्या का भी सहज जो समाधान मेरी समझ में आया अपने आप कह गया।

आप समझ गये होंगे कि उन बेटियों को न तो भगवान बुद्ध, राम, कष्ण, सन्तों की, मोहम्मद साहब या जीसस की कथा सुनने या कोई और धार्मिक कथा सुनने में रूचि थी। जो विषय उन के लिये जरूरी था, जो उनके जीवन में समस्या थी, जिस का वह सहज समाधान चाहती थी वह उनको चाहिए था।

1962 के लगभग की बात है परमदयाल जी चन्डीगढ़ डाक्टर जोड़ा साहब के बुलाने पर गये थे उन्होंने युनिवर्सिटी में सत्संग देना था। मैं उनके दर्शन करने होशियारपुर सेना से छुट्टी लेकर गया था। मेरे को भी साथ ले गये थे सत्संग में। उन्होंने जोड़ा साहब को कहा कि पहले यूनिर्वसिटी के Student लड़के और लड़कियों को सत्संग देंगे, उसके बाद Staff का तथा अन्य लोगों का सत्संग होगा।

मैं उनके साथ था। पहले उन्होंने Students को ब्रह्मचर्य पर तथा लव मैरेज पर सत्संग दिया। उसके बाद Staff व दूसरों को सत्संग दिया परमदयाल जी ने जब हम वापिस होशियारपुर आ रहे थे तब मुझे कहा तुम समझे कि लड़के, लड़कियों को सत्संग की बाकी बातों की आज जरूरत नहीं है। इनको ब्रह्मचर्य का पालन

और लव मैरिज की बात अब समझाना ही जरूरी था। प्यारे उमेशचन्द्र जी सतगुरू वक्त को यदि किसी सज्जन ने पहचान लिया तो कुछ करना धरना शेष नहीं रह जाता है। उनकी आज्ञा मानना उनसे प्रेम, उनकी सेवा बस बाकी किसके लिए क्या जरूरत है वह बात सहज में ही उनके मुख से निकलती रहती है।

''साधु बोले सहज सुभाय।
साधु का बोला व्यर्थ न जाय।।''

दाता दयाल जी ने कुछ लिखने में कभी कमी नहीं रखी है। हर विषय, हर धर्म पर जो लिखा है, कमाल किया है। परन्तु जो असल वस्तु दाता देना चाहते थे, उसके लिये लोग तैयार नहीं थे। उनका साहित्य कमाल का है परन्तु आज का आदमी तो और ही समस्याओं में उलझा हुआ है। दूसरी बात, लोग इतनी भागदौड़ में हैं कि वह साहित्य एक बहुत गहरा समुन्दर है इसको समझना तो वक्त गुरू की कपा हो, तब ही इसकी समझ आ सकती है। बुद्धि बहुत तेज है। इस समय में यह बात है कि भाव, प्रेम और ध्यान के बिना सतगुरू वक्त के ध्यान की समझ नहीं आ सकती। ज्यादा से ज्यादा लोग विश्वास तक ही सीमित रह जाते हैं। जैसा मैं लिखा करता हूं कि भाई कुछ परमदयाल के, मानव दयाल के, ताराचन्द के तथा दूसरे सन्तों के शिष्य मेरा ध्यान बनाकर अपनी मनोकामना पूरी कर लेते हैं। यानी उनकी सहायता होती है और मैं बार–बार कानों को हाथ लगाता हूँ कि भाइयों, मुझे इस घटना का कुछ मालूम नहीं होता। यह केवल उनका विश्वास है। इससे सिद्धि यानी मनोकामना पूरी होती है चाहे मेरा विश्वास बनाकर मेरा ध्यान करो चाहे किसी दूसरे सन्त का करो या देवी, देवता या राम, कष्ण जहाँ भी विश्वास हो करो, यह विश्वास से ध्यान बन जाता है कभी विश्वास टूट भी सकता है, तब आपका ध्यान नहीं बनेगा और सिद्धि खत्म हो सकती है।

यदि किसी वक्त गुरू का ध्यान आप बना लोगे तो वक्त गुरू कपा करके आप का ध्यान गुरू स्वरूप से हटाकर आगे का अनुभव करा देगा, जिससे कभी भी विश्वास नहीं टूटेगा और परम सुख और

परम शान्ति तक आप को पहुंचा देगा।

वक्त गुरू को आप के धन, मान, इज्जत की जरूरत नहीं है वह पूर्ण काम योगी है। यानी उनका कोई काम इस संसार में शेष नहीं है वह तो यह कहता है –

इस चाह की मुझको चाह नहीं।
इस चाह को चाह में डाल दो।।

चाह का अर्थ इच्छा भी होता है और चाह का मतलब कुआं भी होता है। भाव आप समझ गये होंगे।

जिस भाई, बहन, बेटियों में, मेरा रूप प्रकट होकर उनकी मदद करता है, जब वे मिलते हैं तब मैं उनको गुरू का वह रूप जिसके लिये कबीर साहब ने कहा है –

''साधो गुरू का रूप लखाँऊ
जो कोई आये मेरी सभा में, गुरू का रूप लखाँऊ।''
हाड मांस नाड़ी नहीं जाके, वाके रूप लखाँऊ।।

मैं चाहता हूँ मेरी बात समझ कर वे आगे बढ़े परन्तु वे सुनना ही नहीं चाहते। वे तो इसी में मगन हैं कि उनके काम हो जाते हैं। यह तो होने ही होते हैं। काम उनके विश्वास का खेल है और यह तो होना ही होता है। पहले से ही बात पक्की है कई बार जो बात होने वाली है, मुंह से ऐसे ही निकल जाती है और वह काम हो जाता है। अब सत्संगी समझता है कि वह काम मेरे कहने से हुआ है। यह उसके विश्वास का खेल है।

यह तो ''अहमद की टोपी, मोहम्मद के सर'' वाली बात है। विश्वास सत्संगी का है जो काम करता है वह समझता है कि गुरू जी ने कहा था इसलिए मेरा यह काम हुआ है।

प्यारे उमेश चन्द्र जी यह बहुत अच्छी बात है विश्वास वाली। पूरी दुनियां इस विश्वास पर खड़ी है परन्तुं मैं तो समझा हूँ, यह रहस्य मेरी समझ में परमदयाल जी महाराज की कपा और सत्संगी भाई बहनों के अनुभव का नतीजा है, जो मेरे भ्रम खत्म हो गये हैं।

यह मेरा अनुभव है। हो सकता है दूसरे सन्त या आचार्य गुरू कुछ सिद्धि शक्ति रखते हों परन्तु मेरे में कोई सिद्धि शक्ति नहीं है, सत्संगियों में जरूर है, यह मेरा अनुभव है।

आपका भाई लालचन्द

पत्र - आचार्य शिरोमणि कप्तान लाल चन्द जी

May, 2002

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा, सप्रेम राधास्वामी।

मैंने आपकी सेवा में अपना अनुभव व समझ लिखा है कि यह अब इक्कसवीं शताब्दी है। इस समय के मानव के लिये परम शान्ति व परम आनन्द को प्राप्त करने या अनुभव के लिये ढंग, तरीका तथा साधन अभ्यास की विधि उसकी प्रकति और हालात के अनुसार वक्त गुरू ही मार्गदर्शन कर सकता है। पिछले महापुरूषों ने जो कहा या बताया था वे सब बातें अब के मानव पर लागू नहीं हो सकती हैं।

महापुरूषों ने त्याग और भोग के लिये कहा था, वो भी हालात और प्रकति के अनुसार बदल जाता है। विषय बहुत सूक्ष्म है अतः कुछ उदाहरण देकर बताऊँगा। मैं यह बात अपने ही गुरू पीरों पर आप को उदाहरण से समझाने का यत्न करूंगा, यदि दूसरों के विषय में लिखूंगा तो लोग उंगली उठायेंगे।

प्यारे भाई, यह लोक विचारों का है, जैसा किसी के विचार होते हैं, वैसा ही जीवन बन जाता है। दाता दयाल जी महाराज पिछले जीवन में पूरी त्याग की अवस्था में चले गये थे। उनका जैसा शब्द है इससे ही साफ मालूम होता है :–

''न अपना नाम रखना तुम, न दुनियां में निशा रखना।
नहीं की जब गई आदत, जबां पर तब न हाँ रखना।।''

इस शब्द को देख लो। शेष उन्होंने बहुत लिखा है, अपना नाम लिखना भी छोड़ दिये। इस तरह से त्यागी हो गये थे। इस

विचार या त्याग की भावना का अन्त में यह हाल हुआ कि उनके बहुत शिष्य थे परन्तु आखिरी उम्र में उन को ठीक, सही भोजन तक नसीब नहीं होता था।

एक बार पण्डित माम चन्द और उन का एक साथी जो रेलवे में नौकर थे, दाता दयाल जी के पास गये। जहां अब समाधि बनी है, वहीं जंगल था। जब माम चन्द और उनका साथी सुबह चलने लगे तो दाता दयाल जी ने रसोई में सेवा करने वाली बहन जी को कहा कि इनको कुछ खाने–पीने को नाश्ता दो। तब वह बोली, ''महाराज कुछ भी नहीं है क्या दूँ''। तब दाता ने कहा, ''मेरा एक पाव दूध रखा है उस में से आधा– आधा दोनों को दे दो। यह हालात उन के रसोई घर की थी। आप कारण समझ गये होंगे कि यह सब विचारों का लोक है और जो महापुरूष पूर्ण रूप से त्यागी वैरागी हो जाते हैं उनका आश्रम चमक नहीं सकता। किसी आश्रम को खुशहाल रखना और गहस्थी को खुशहाल रखना एक ही बात है। सब जगह विचार या संकल्प ही काम करता है।

अब गहस्थ में रहते हुये किसी भाई, बहन, बेटी ने साधना करनी हो तो करो, कोई बात नहीं, बहुत आसान है और भोग में जोग का आनन्द है परन्तु वक्त गुरू के सतसंग में बैठ कर, 'संकल्प की बात समझ लो। गहस्थी को 'शिवसंकल्प' होना जरूरी है। जब साधना अभ्यास करे तब संकल्प विकल्प छोड़ जाये और जब शरीर में या मन में चेतनता आये हमेशा सुन्दर संकल्प रखे। जैसा संकल्प होगा वैसा ही जीवन बनता जायेगा।

जब इस दुनिया का जीवन हर तरह से खुशहाल बन जाये तो बात को ठीक समझकर 'निष्काम कर्मयोग' का साधन या 'समत्व बुद्धियोग' का साधन कर सकता है। जिससे क्रियामान कर्म ही न बने परन्तु बिना वक्त गुरू से यह 'संकल्प' की बात समझे या समय से पहले जो पुरानी लकीर 'त्याग' की है उसमें कोई उलझेगा तो यह संसार का जीवन दुख का बन जायेगा।

दूसरा उदाहरण हम अपने ही गुरू पूज्य मानव दयाल जी

महाराज का लेते हैं। उन्होंने भोग में जोग या योग को पूरी तरह अपने गुरू परम दयाल जी से नहीं समझा, क्योंकि उनको परम दयाल जी की संगत का बहुत कम समय मिला। इस भोग और त्याग को पूरा नहीं समझा। इसलिये जो उन के साथ गुजरी, लगभग सभी को मालूम है। उनके जो खास अन्धविश्वासी भक्त थे उनकी बात भी बहुत विवेक और समझ, ज्ञान देने जैसी है। उनमें एक मेरे प्यारे भाई मंगल देव शर्मा हैं जो गुरू भक्ति की जीती–जागती मिसाल हैं। उन्होंने कभी सोचा ही नहीं कि गुरू भी बीमार होता है या बीमार है। अन्त समय तक मानव दयाल जी की बहुत सेवा की और उनकी आज्ञा का पालन किया और पूरी सेवा की जैसा राधास्वामी वाणी में गुरू के तन, मन, और धन की सेवा बताई है।

प्यारे मंगल देव शर्मा को इस भक्ति का फल मिलेगा और मिलता रहा है परन्तु उन को परम शान्ति और परम आनन्द का अनुभव इस भक्ति से नहीं मिलेगा। इस भक्ति में समझ, विवेक और अनुभूति व ज्ञान नहीं है, सिद्धि है, जैसे कोई मूर्ति की भक्ति करता है, ऐसी ही यह अज्ञान की भक्ति है। अगर किसी और भाई या बहन ने भी मंगल देव शर्मा जी की तरह पूज्य महाराज मानव दयाल जी की सेवा की हो तो, मुझे मालूम नहीं है,क्षमा करना। उनको भी उस विश्वास का फल ऐसा ही मिलेगा।

मैं आप को अपनी समझ या अनुभव गुरूओं के उदाहरण देकर यह बताना चाहता था कि हम गहस्थी हैं, हम त्याग और भोग की बात समझ कर सहज में 'भोग में जोग' की बात वक्त गुरू से समझकर फिर चले। बीच का मार्ग अपनाकर इस जीवन का रस लें और लोक और परलोक दोनों बनायें। इस 21वीं शदी के अनुसार विज्ञान की सुविधाओं का लाभ लेते हुए 'भोग में जोग' कमाते हुए सहज ही परम आनन्द और परम शान्ति की अनुभूति अभी इसी ही जीवन में कर सकें।

प्यारे भाई, कल का मुझे मालूम नहीं मेरे साथ क्या गुजरे, अब मेरी उम्र 78 साल की चल रही है गुरू कपा और सन्तों की दया तथा

शेष प्रेमी भाई–बहिनों के आशीर्वाद से रोज दीवाली व तीजों का पर्व मानते हुये जीवन चल रहा है। कहा है, **''सदा दिवाली साध के और आठों पहर आनन्द।''**

परम दयाल जी कहा करते थे कि आखिरी उम्र में पूज्य बाबा सावन सिंह जी महाराज (ब्यास वाले) ने दो वर्ष बीमार रहकर यह भौतिक शरीर त्यागा था। बाबा जी महाराज अपने एक सेवक लाभ सिंह को कहा करते थे कि लाभ सिंह ''मैंने जो करना सी वह नहीं कीता'' उन्होंने बहुत लोगों को राधास्वामी पंथ में शामिल किया था। उनका कहना था कि भाई वह परम शान्ति और परम आनन्द की हालत यानी उस समाधि की हालत की कमाई नहीं हो सकी। यह हमारे लिये एक शिक्षा है कि भाई हम दूसरों को ज्ञान समझा दें, परन्तु पहले अपनी हालत बना लें। ताकि आखिर में हम को पछताना न पड़े।

परम दयाल जी महाराज का पूरा जोर साधन अभ्यास तथा मन की शान्ति के लिये शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य पर था। उनके ध्यान और समाधि में यही रूकावट थी और बात भी यही है। हमारे लोक और परलोक के जीवन में यह शक्ति है जिसका सही उपयोग होने पर सफलता और दुरूपयोग से असफलता मिलती है। हमारे ऋषि मुनियों व सन्तों ने तो जीवन के चार आश्रम बना दिये हैं। 1. ब्रह्मचर्य, 2.गहस्थ, 3.वानप्रस्थ, और 4. सन्यास/तान्त्रिक, जिन में 1.तान्त्रिक गुरू 2. डाक्टर 3. वैज्ञानिक आदि लोगों को समझो। इनका कहना है कि शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य नहीं हो सकता। काम ऊर्जा कभी रूकती नहीं है। इसको भोगो। तान्त्रिक सन्त रजनीश का कहना है कि काम को दबाओ नहीं, यह एक ऊर्जा है। लम्बी चौड़ी बात लिखते हैं परन्तु है सही। हमारे महापुरूषों ने पहले ही कहा है कि गहस्थ जीवन में सन्तान उत्पन्न करो और बात समझ लो यह भी काम को दबाते नहीं हैं परन्तु बहुत पुरानी बात है, एक दिन का भोजन ठीक हजम हो गया तो एक बूँद खून की बनती है। 30 दिन में 30 बूंद खून बनता है और 30 बूंद खून से एक बूंद शक्ति, ऊर्जा या चर्बी बनती है। 30 बूंद ऊर्जा से एक बूंद वीर्य की

बनती है, जिससे आदमी पैदा होता है। यह महाशक्ति की वस्तु है यदि इससे सन्तान का विचार कर जैसी चाहें वैसी सन्तान पैदा कर सकते हैं परन्तु इस ऊर्जा को स्वाद के लिये यदि नष्ट करें तो कई प्रकार के रोग और कष्ट पैदा हो जाते हैं। मुझे अपने जीवन में ऐसी कोई समस्या नहीं हुई। शुरू से ही शब्द अभ्यास के सहज साधान से समता बन गई और काम ऊर्जा का जो बाहर बहाव होता है अन्तर में साधन में परम आनन्द जैसी अनुभूति होती रही यानी काम अंग अपने आप शान्त हो गया। यही हालत क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की हुई। यानी समता आ गई। दूसरे, महापुरूषों ने इन बातों को रोचक और भयानक ढंग से बताया है यह अपने अपने तर्जे बयान या शैली या ढंग से बताया है। मेरे ऊपर परम दयाल जी की अपार कपा हुई। जीवन का रस लिया है। कुछ यत्न या मेहनत नहीं की, सहज जीवन जीया है और सहज ही योग अपने आप बन रहा है। मैंने कुछ किया नहीं है। जो किया गुरू ने किया है।

आपका भाई लालचन्द

पत्र - आचार्य शिरोमणि कप्तान लालचन्द जी

July, 2002

प्यारे सम्पादक

ई० उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैंने दाता दयाल जी का साहित्य शिव पत्रिका जो स्वर्गीय देवी चरण जी मित्तल द्वारा प्रकाशित होती थी पढ़ा था। उन्होंने अपने समय के अनुसार अध्यात्म ज्ञान को ऋषि–मुनियों ने, अवतारों, सन्तों व तांत्रिकों ने जो शिक्षा दी, सब कुछ पर लिखा था।

जहाँ तक अनुभव की बात है वह मैंने आप से कई बार लिखा है कि मैं परम दयाल जी (फकीरचन्द जी) महाराज के दर्शन करने

उनके घर गया था और 10 या 15 मिनट में ही बिना पूछे और बताये सहज ही अन्दर का पट खुल गया था। यानी मुझे स्थान, अभ्यास या समाधि लगाने में कोई मेहनत या कष्ट नहीं करना पड़ा परन्तु उस समय न तो मुझे समझ थी, न विवेक था और न ज्ञान। बाद में सत्संगों व गुरू कपा से सहज में होता गया और अभी भी नई – नई बात प्यारे सत्संगी भाई–बहिन, बेटियों से सुनता हूँ और उनके नये–नये अनुभव जो मुझे नहीं और उनको होते हैं, सहज ही अलख–अगम को छोड़ कर अनाम तक सफर हो जाता है।

मैंने पहले भी साफ लिखा है कि मेरा स्वरूप प्रकट होकर प्यारे सत्संगियों की साधन–अभ्यास, सांसारिक जरूरतों में उनकी मदद करता है परन्तु मुझे इसका कुछ पता नहीं होता। दूसरी बात, मैं सत्संग में अपने साधन अभ्यास में उनको मार्ग दर्शन करता हूँ मेरा स्वरूप और नई–नई बातें लिखते हैं, जिनका मुझे कुछ मालूम नहीं होता। मेरे से पूछते हैं तो मैं उनकी हाँ में हाँ करता रहता हूँ और जहाँ समझता हूँ, प्रेरणा देता रहता हूँ।

मैंने जो भी सत्संगियों के साधन अभ्यास में होने वाले अनुभव, और उनके साथ जो भी चमत्कार होते हैं उनको ऐसा समझा है कि हर आदमी के मन में बहुत बड़ी शक्ति है और जैसे ख्याल, संस्कार उनके मन पर पढ़ने, सुनने तथा देखने से पड़े हुए हैं, वे ही प्रकट होते हैं। जब मन भयवश या प्रेमवश एकाग्र होता है, तो साधक प्रेमी,विश्वासी उनका अनुभव करता है। यदि उनको यह सच्चाई बता दी जाये कि यह सब आप का विश्वास, संस्कार है और बाहर से कुछ आता जाता नहीं है। यदि कोई अपने निज घर जाना जाता है यानी कि वो मोक्ष चाहता है तो उन्हें इन साधन अभ्यास में प्रकट होने वाले रंग, रूप, रेखा से आगे आना पड़ेगा। और इन चमत्कारों से तथा रंग, रूप, रेखा से आगे शब्द और प्रकाश है परन्तु मेरे अनुभव में शब्द आया है। न तो मैंने कभी प्रकाश का विचार किया और न अनुभव। केवल शब्द, वह भी एक ही शब्द जो शुरू से प्रकट हुआ था। आज तक एक रस है।

आजकल लगभग एक महीने से एक बेटी का फोन सुबह 6 बजे आता है कि आप (मैं) बहुत लम्बे चौड़े प्रकाश में उसे तैराता हूँ और मेरे बाप ने भी कभी प्रकाश नहीं देखा। यह सब खेल साधन अभ्यास का संस्कारों का है और रेडियशन (Radiation) काम करती है। यह बात परद दयाल जी ने भी अपने सत्संगों में बहुत साफ कही है। मैं उनकी बात को अपने अनुभव से दोहरा रहा हूँ क्योंकि परम दयाल जी की संगत बहुत कम आदमियों ने की थी और किसी ने की भी होगी वे होश में या चेतना में नहीं हैं। क्योंकि गुरूओं के सत्संगों में, जो वे देते हैं लेने नहीं जाते हैं। दुनिया तो धन, सन्तान, सांसारिक मामलों की उलझन में होती है। संतों का मार्ग विशेष लोगों के लिये है।

एक बार मैं सेना से छुट्टी लेकर परम दयाल जी के दर्शन करने होशियारपुर गया था। संगत कम थी। मानव मन्दिर बना नहीं था। महाराज जी घर से आते और पंडित नारायण दास जी की टाल में, जो लकड़ी कोयले की थी, वहाँ बैठते थे। दो दिन तो मुझे कुछ नहीं कहा सिर्फ पूछा आप का साधन अभ्यास कैसा है? और नौकरी में कोई कठिनाई या घर परिवार में कोई दिक्कत तो नहीं? मुझे किसी तरह की कोई शिकायत नहीं थी। तब उन्होंने कहा घर क्यों नहीं गये हो?

उन्होंने कहा जिस काम के लिये गुरूओं के पास आते हैं वह आपको प्राप्त है। अब आप मुझे बेमतलब तंग करोगे तो मैं आपको गुरू बना दूंगा। मैंने कहा महाराज गुरू तो बहुत बड़ा आदमी होता है। तब उन्होंने फरमाया कि जिसके खोटे कर्म होते हैं, उसे गुरूवाई मिलती है। बात बहुत ऊंची थी, मैं उस समय इस भाव को समझ नहीं सका, परन्तु उन्होंने दया करके मुझे इस गुरूवाई पर एक छोटा सा सत्संग दे दिया था। मैं भाव समझ गया और आगे निकल गया यानी गुरूवाई मेरे लिए बहुत छोटी पड़ गई। कभी स्वप्न में भी इसका विचार नहीं आया।

एक बार परम दयाल जी ने कहा था कि आप पेंशन लेकर यहाँ मानव–मन्दिर में ही आजाना। मैंने प्रार्थना की कि महाराज मैं

तो अपने घर पर रह कर ही जो सेवा दोगे करता रहूँगा। उन्होंने कहा बिलकुल ठीक है। मेरे को यानी (परम दयाल जी) को उनके गुरू दाता दयाल जी ने कहा था फकीर धाम में आ जाना मेरे बाद, तो उन्होंने भी अपने गुरू को यही कहा था कि सब की जगह आप ही का धाम है। और वह अपने घर में रह कर ही उनका काम करते रहे।

आप मेरा भाव समझ गये होंगे कि परम सुख और परम शान्ति का गुरूवाई में कोई जोड़ नहीं है यह तो मनुष्य के अपने ही शुभ कर्मो का फल होता है कोई गुरू बनकर पूजा जाता है, कोई राजा – महाराजा बनकर, कोई वैज्ञानिक बनकर तो कोई – कोई कुछ बनकर जिस परम सुख और शान्ति की चर्चा धर्म में की गई है, यह तो एक सम अवस्था की हालत है। एक राजा को भी मिल सकती है। एक गरीब को भी मिल सकती है। असल में समस्थिति का नाम ही सन्त गति है। कोई बहुत तेज होना या बहुत आसान होना या वेष–भूषाइससे कोई मतलब नहीं है। यह बहुत ही सहज अवस्था है। लोग जिसको कठिन समझ रहे हैं यह उनके अशुभ कर्म की बात है। जब गुरू कर्मो का जोड़ हो जाता है तब कोई वक्त गुरू से मिलना हो जाता है और बहुत ही कम समय में काम बन जाता है मेरा यह विचार है और मेरे साथ ऐसा हुआ है।

आप जो काम कर रहे हैं, करते जाये, आप जो कुछ सच्चे मन से चाहेगे, सब कुछ प्राप्त होगा। प्यारे भाई, अपने अन्दर शान्त भाव से बैठ कर गोता लगाते रहें। सहज ही सब काम बन जायेगा, ऐसा मेरा विचार है।

आप की सेवा में मैंने पहले भी लिखा है कि मैं कोई सन्त – महात्मा नहीं हूँ और न किसी प्रकार की सिद्धि मेरे पास है। मैं एक आनन्द–खुशी का जीवन परम दयाल जी की अपार कपा से जीया हूँ और आज तक जी रहा हूँ। कल का दावा नहीं करता हूँ। मैं जो मेरे साथ गुजरी यानी बीती और मैंने जीवन में जो अनुभव किया, वह

टूटे–फूटे शब्दों में आप को लिख रहा हूँ। यह भी इच्छा नहीं है कि आप मेरे विचार छपवाये। यदि उचित समझें और सत्संगियों को लाभ मिले तो छपा दें, नहीं तो यह आप समझ लें, कोई लाभ की बात हो आपके लिये।

मैंने तो अपने जीवन में जो रस, आनन्द, खुशी का अनुभव किया है और हंसते, खेलते, भोग में जोग का अनुभव किया है। यह दुनियां भी मुझे बहुत सुन्दर और प्यारी लग रही है। हो सकता है हमारे पहले महापुरूषों को इस में रस नहीं आया होगा उनके संस्कार ओर तरह के रहे होंगे। या वह समय कुछ ओर होगा, यह विशेष – विशेष व्यक्ति के अपने संस्कार, अधिकार भिन्न–भिन्न होते हैं। हर समय और परिस्थिति की बात है। मेरे सामने कोई ऐसी समस्या ही नहीं आयी जिसके कारण मैं संसार के जीवन में उब गया हूँ या निराशा हुई हो। जो वैराग्य कहते हैं वह भी बहुत ही सहज हैं। जिसे न तो मुँह से कहने की जरूरत हुई है और न मेरे परिवार, सम्बन्धों पर उसको प्रकट ही किया है। आप समझ गये होंगे कि सहज–साधन, सहज–वैराग्य, सब कुछ सहज अवस्था में भोगते हुऐ एक परम सुख का, परम शान्ति का अनुभव करते हुये अब तक इस मानव जीवन का रस ले रहा हूँ। भाई कल की कोई खबर नहीं है। पंजाबी में एक गीत है :–

''हंसदीयां रात गुजरी पता नसवेर दा।
जग वाला मेला यार हैगा दिन चार दा।''

तो यह जीवन एक अति सुन्दर लीला है यानी खेल है परन्तु कोई बड़े भाग्य से वक्त गुरू मिल जाये। साधन, 'ध्यान और प्रेम', तो सीखा जा सकता है, जो मेरे साथ गुजरी वह बात अलग है। परन्तु जो चाहे ऐसा जीवन जीना उनके लिये ध्यान, प्रेम सीखा जा सकता है।

आपका भाई लालचन्द

पत्र आचार्य शिरोमणि कप्तान लाल चन्द जी

August, 2002

प्यारे सम्पादक

ई० उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

जैसा मैंने आपकी सेवा में लिखा है कि समय के साथ सब कुछ बदलता रहता है। यह बात यदि हम गौर से देखें तो हर जगह यह बदलाव नजर आने लगता है।

मैंने आप की सेवा में लिखा था कि दाता दयाल जी ने जीवन के हर क्षेत्र में, धर्म की लगभग सभी विधियों पर प्रकाश डाला हैं। मंत्र और तंत्र दोनो मार्गों पर प्रकाश डाला है।

हमारे देश में और दुनियां के बाकी देशों में भी बहुत तांत्रिक, संत व महापुरूष हुए हैं, परन्तु यह ज्ञान गुरू शिष्यों के बीच में ही ज्यादा रहा है जैसे तन्त्र का मार्ग या गुरू मत है, ऐसे खुला नहीं रहा था परन्तु 20वीं शताब्दी में सन्त या महापुरूष रजनीश ने इस तन्त्र के मार्ग को बहुत ही खोल कर बताया है यह महापुरूष समय से पहले आ गये जो तन्त्र विद्या हमारे देश की गुप्त थी, उसको सबके लिए खोल दिया। बहुत रहस्य खुला बताया, हमारे अपने देश में और विदेशों में हलचल मच गयी और पिछले महापुरूषों को सूली देकर जैसा जीसस को, सुकरात, मंसूर और भी महापुरूषों को मार डाला था, वैसे ही इस महा तांत्रिक संत को ज़हर देकर मार डाला था अब उसी ही महापुरूष के साहित्य का प्रचार और बुद्धिमान लोग उसकी चर्चा कर रहे हैं और बहुत बड़ाई कर रहे हैं।

इस उदाहरण से मैं आप को यह बताना चाहता हूँ कि जिस समय कोई महापुरूष हमारे जीवन को सुन्दर बनाने का समाचार या पैगाम लेकर आता है तब लोग उसको मारने दौड़ते हैं, क्योंकि वह समय के अनुसार ज्ञान लाता है। असल में वह मालिक खुद ही मनुष्य

का रूप धारण करके पिछली लकीर और पिछले समय की बात छुड़ा कर हमको सही ज्ञान जो समय का होता है हमको देने आता है। यह बात सदा से रही है। जब महापुरूष यहां प्रकट होकर ज्ञान देने आये तो उनको मारा, और उनकी बात नहीं सुनी। जब वे चले गये, तब उनके स्थान, यादगार और ज्ञान का प्रचार किया गया। यानी सच्चाई को महापुरूष के जाने के बाद लोग समझते हैं।

मैंने आप को पहले ही लिखा है कि मुझे इस नाम या भजन या परम शान्ति व परम आनन्द को पाने वाले ज्ञान के लिए कुछ कष्ट नहीं हुआ और तन्त्र के मार्ग की जरूरत ही नहीं हुई। मुझे यह मालूम ही नहीं था कि तन्त्र और मन्त्र दो मार्ग हैं, आत्मज्ञान या अध्यात्म के। मुझे तो वक्त (समय) के गुरू मिले और सहज ही काम बन गया। दाता दयाल जी का एक सत्संग देखा था तन्त्र पर वहाँ भी इशारा था परन्तु एक दिन प्यारे तांत्रिक समय के गुरू पूज्य रजनीश जी महाराज की तन्त्र पर एक पत्रिका देखी और उससे बात समझ में आयी कि यह महापुरूष अपने समय से बहुत पहले प्रकट हो कर सच्चाई तन्त्र के द्वारा समझा गये हैं। जो भी उन्होंने तन्त्र के विषय में कहा, मैं समझ गया। तन्त्र का मतलब तन है और तन में ही मन व आत्मा रहते हैं जैसे दूध में घी रहता है। उसकी अनुभूति भी तन में ही की जाती है। अब रही विधि अनुभव की, जो पतंजलि भगवान ने 112 विधि योग की बताई है, आदमी की प्रकति के अनुसार। परन्तु संतों ने बहुत आसान कर दिया। मेरा अनुभव कुछ और ही रहा। मैं कभी–कभी यह बात कहता भी रहा कि मुझे इस ज्ञान की अनुभूति 10 या 15 मिनट में परम दयाल जी के पास बैठने से ही हो गयी थी जो अभी भी 78 साल की उम्र में अनुभव कर रहा हूँ। पहली बात तो यह कि मेरी बात किसी ने सुनी ही नहीं और सुनी होगी तो किसी को विश्वास नहीं आया होगा। मेरे गुरू सनातनी थे। राधास्वामी पंथ में आने से पहले राम और कष्ण की मूर्ति उनके आगे–आगे साथ चलती थी। किसी कारण से उनका

विश्वास टूट गया और उन्होंने निराकार से पुकार की और उनको दर्शन हुए तब उन्होंने राधास्वामी पंथ में दाता दयाल जी से दीक्षा लेकर, अपनी साधना अभ्यास की कमाई करके परम शान्ति व परम आनन्द का अनुभव किया था।

इस बार दशहरा, सत्संग में प्यारे, जरनैल (नेगी साहब) ने सत्संग में मेरे विषय में कहा कि वह जो कैप्टन साहब अनुभव की घटना अपने गुरू के दर्शन से हुई बताते हैं वह खास–खास प्रेमियों के साथ होती है। यह पहली बार मैंने प्यारे जरनैल साहब के मुख से सुना है। वक्त गुरू की यह महिमा है कि वह जानता है कि सतगुरू की कपा से सबकुछ हो सकता है।

''फैजा का दर है खुला, बन्द नहीं हरगिज़।
शर्त यह है, कोई मांगने सायल आये।।''

आगे कहा है –

''सितारों से आगे जहाँ और भी हैं।''
अभी इश्क के इम्तिहां और भी हैं।।

मेरा भरम शंका सदा गुरू कपा से दूर हो गया और इस जीवन का रस लेते हुए सहज में ही भोग में ही जोग बन गया यह सब गुरू कपा समझ रहा हूँ।

मैं आपको अपना विचार प्यारे संत रजनीश जी तांत्रिक, समय के गुरू के विषय में लिख रहा था कि उन्होंने इस तन्त्र के ज्ञान को आज के आदमी को परम सुख और शान्ति तक पहुँचाने के विषय में कोई नयी बात नहीं कही है यह बात मेरे गुरू परम दयाल जी हमेशा सत्संगों में बताते थे कि पहले ये दुनियां बनाओं और जब यहां से मन भर जाये तब आप को वैराग्य हो जायेगा। रजनीश जी महाराज का तर्जे ब्यान ही अलग है बाकी बहुत सही और प्यारी बात कही है कि तुम लकीर मत पीटो, अनुभव करो और वक्त गुरू से लाभ उठाओ।

उनके शब्द बहुत ही प्यारे और सच्चे हैं परन्तु इस दुनियां ने उलटा समझा एक समय के महापुरूष को मार डाला। अब तो उनकी जानकारी ही मिल सकेगी कि एक महापुरूष ने भारत की

तन्त्र विद्या को खोलकर जैसा बताया है आज तक इस दुनियां के किसी महापुरूष ने ऐसा नहीं बताया था। तांत्रिक संत बहुत हुए हैं परन्तु यह तो मालिक का ही रूप थे जो धरती पर एक नयी रोशनी डाल गये हैं। यह बात मैं इसलिये कह रहा हूँ, कि मेरी परम दयाल जी ने आँखें खोल दी थी और बात समझ गया हूँ। जहाँ तक विश्वास की बात है वह अपने भक्तों की रक्षा करते रहेंगें जैसे राम, कष्ण, बुद्ध करते आये हैं। जहां तक परम शान्ति और परम आनन्द की बात है, जिसने उनकी हाजरी में अनुभव कर लिए वह ठीक है, अपना साधन अभ्यास करते रहे। जो उनके समय में अनुभूति नहीं कर सके उनको प्रतीक्षा करनी होगी। जो नहीं जाग सके, वे लेट हो गये परन्तु चलते रहो, फिर समय मिलेगा। यही बात सब गुरूओं के भक्तों की है, जो गुरू के समय में जाग गया, चेत गया, काम बना नहीं तो बाद में लकीर पीटने वालों में शामिल होने की बात होगी परन्तु विश्वास वालों के दुनियां के काम बनते रहेंगे और सहारा बना रहेगा। जैसा राम, कष्ण देवी–देवता को मान कर काम चलता है। वक्त गुरू का फल तो उनकी हाजरी में ही होगा।

यह मैं आप को लिख रहा हूँ, यही बात हमारे पिछले महापुरूषों ने कही है परन्तु उनकी शैली या ढंग समय के अनुसार थी। बात वही है। शैली या ढंग समय के अनुसार है। इस समय में आत्म ज्ञान की अनुभूति बहुत ही आसान हो गयी है। शर्त यह है कि किसी को लगन हो और कोई पूरा अनुभवी वक्त गुरू मिल जाये बस फिर तो इस जीवन को सहज ही बड़े आनन्द का अनुभव करते हुए, जीवन का विशेष रस लेते हुए, सहज ही परम शान्ति और परम आनन्द का अनुभव करते हुए जीया जा सकता है। असल में वर्तमान में जीने का नाम ही मुक्ति है। विचारों के ख्याल से ये भूत, भविष्य के विचारों में उलझे रहना बन्धन है और जिस समय हम वर्तमान में ठहरे होते हैं, मुक्त हैं। इस मुक्ति का आनन्द लेते हुये मैं बहुत सालों से जी रहा हूँ।

यह तो जीवन की समस्या है, जीव ने अज्ञान से खुद पैदा की हुई है ध्यान और प्रेम जीवन के समस्याओं की दवाई है, जो वक्त (यानी समय) का गुरू बताता है। जैसा अधिकारी होता है, जैसी लगन और उसकी प्रकति होती है, यह सब बात समझा कर, उसको विधि बता दी जाती है। पहला काम सतगुरू के सामने बैठ कर उसके दर्शन करो, वचन सुनो, सेवा करो। उसके काफी सत्संग सुन कर उससे ध्यान की विधि समझो। विश्वास और प्रेम अलग बात है। इनमें कुछ करना नहीं पड़ता, बहुत आसान और गजब का रास्ता है यह, परन्तु हर आदमी की प्रकति और वातावरण, हालात अलग–अलग होते हैं अतः गुरू उसकी हालात समझ कर उसको जिस रास्ते या विधि से वह चल सकता है, जैसा – कुछ, ज्ञान, कर्म, बुद्धि, योग (सरल शब्द), ध्यान, प्रेम यानी जो भी आसान उसके लिए हो वह मार्ग बता देता है यह वक्त गुरू की महिमा है।

वह एक ही लाठी से सबको नहीं हांकता, बाकी विशेष–विशेष आदमियों के लिए कोई नियम ही नहीं होते, उनके लिए अलग ही बात हो जाती है, जिसका शास्त्रों में लिखा ही नहीं होता जैसे "The golden principle is that there is no principle" यानी ''सुनहरा सिद्धान्त वह है, जहाँ सिद्धान्त नहीं होता'' इस तरह के कोई–कोई व्यक्ति होते हैं, जिनकी चर्चा नहीं होती है।

आपका भाई - लालचन्द

पत्र - आचार्य कप्तान लाल चन्द जी

Sept.2002

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

असल में आत्म ज्ञान विषय मनुष्य की जन्म–जन्म की चाह है। मैंने आप की सेवा में, सुनी हुई, लिखी हुई तथा देखी हुई बातें

न लिख कर, मेरे साथ क्या गुजरी और क्या अनुभव किया तथा मैंने क्या समझा, वह लिखा है।

असल में मेरे साथ इस ज्ञान के अनुभव की बात बहुत ही अलग ढंग की हुई, जिसका आम आदमी विश्वास ही नहीं कर सकता है कि यह भी कोई बात हो सकती है कि परमदयाल जी के पास 10 या 15 मिनट बैठते ही वह आनन्द का सबसे ऊँचा अनुभव सन्तों या सज्जन पुरूषों को पूरा जीवन बिताने पर हो पाया, मुझे इतना सस्ता कैसे हो सकता है?

दूसरी बात, परम दयाल जी के पास एक बार मैं उनके दर्शन करने गया और दो तीन दिन होशियारपुर ठहर गया। उस समय 'मानवता मन्दिर' नहीं बना था। पंडित नारायण दास की, लकड़ी कोयले की टाल में परम दयाल जी बैठे थे और मुझे कहा आप घर क्यों नहीं गये? उसके बाद फरमाया कि यदि आप मुझे तंग करोगे तो मैं आप को गुरू बना दूंगा। मैंने कहा महाराज गुरू तो बहुत बड़ा आदमी होता है। तब उन्होंने कहा जिसके खोटे कर्म होते हैं, उसको गुरूवाई, मिलती है और एक सत्संग इस गुरूवाई पर मुझे दे दिया। प्यारे भाई उसके बाद मैं बहुत ही हल्का हो गया यानी फूल की तरह जीवन बहुत ही आनन्द मंगल का बन गया है और स्वप्न में भी इस गुरूवाई का विचार नहीं आया है। वैसे यह सत्संग का काम मैं 1962 से कर रहा हूँ यानी लोगों को चेता रहा हूँ कि भाई होश करो यहाँ सदा नहीं रहना है और जब कोई होश में आता है और नाम या दीक्षा की चाह करता है तो उसको पहले मानव दयाल जी, जरनैल साहब तथा जिसका जहाँ विश्वास बनता है वहाँ भेज देता हूँ।

यह नाम देने का जो तरीका है यह तो पंथ चलाने के लिये है या संस्कार देने की बात है, बाकी मेरे साथ तो बात ही कुछ ऐसी गुजरी की, ''नाम अपने अन्दर ही है। किसी नाम में मस्त रहने वाले की संगत या दर्शन करते ही नाम प्रकट हो जाता है बिना किसी तरह का कोई भी यत्न किये ही। परन्तु यह बात किसी – किसी के साथ होती है अतः इसकी हम सब के लिये चर्चा नहीं कर सकते हैं।

आप सत्संग सुनते आ रहे हैं। जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं वह तो खास–खास लोगों की बात होती है। जो उन्होंने खास–खास को ज्ञान दिया था। आज के आदमी को इस समय में कोई जीता जागता पुरूष हो, वह सतसंग में इच्छा या चाह लेकर बैठे हैं इस ज्ञान को पाने के लिये, तो उनको उस ज्ञान से भर सकता है जिसको पाकर परम आनन्द तथा परम शान्ति का अनुभव करके, मुक्त जीवन का आनन्द ले सकते हैं या मानव जीवन का आनन्द ले सकते हैं।

सन्तों व महापुरूषों ने मनुष्य को बहुत ही अलग–अलग ढंग से चिताया है और वही बात अब है। आज के आदमी को कुछ और प्रकार का कष्ट है। पहले जो कष्ट थे वो तो सब हैं ही, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। अब नया कष्ट है मनुष्य की बुद्धि बहुत तेज हो गयी है और मन बुद्धि का सम्पर्क नहीं रहा। आदमी अधिक समय विचार में रहता है। गम्भीर बन गया है, विचारक बन गया है। खुशी, हंसी, प्रेम, प्यार कोसों दूर चले गये हैं।

आज का आदमी इस जीवन में रस चाहता है, खुशी चाहता है। प्रेम प्यार चाहता है। उमंग उत्सव चाहता है। वह जीवन में दुखी है। हम महात्माओं ने गीता, रामायण, कुरान शरीफ, बाइबल रट रखें हैं और शास्त्र या कवितायें वही पढ़–पढ़ कर या याद करके सत्संग दे रहे हैं। अब वह ज्ञान जिससे आज के मानव का जीवन रसमय बन जाये, इन शास्त्रों में नहीं है, वह तो किसी खास के लिये बात कही गयी थी अब आप बात समझ गये होंगे कि आदमी के दर्द तो हैं टांग में और पट्टी बांधते हैं हाथ में। यानी मनुष्य को दुख तो है इस जीवन में और हम उसको ज्ञान देते हैं गीता का। न तो हम भगवान कष्ण हैं और न अर्जुन हैं। यह कारण है कि इतने महापुरूष आज सत्संग दे रहे हैं, परन्तु मानवता का क्या हाल है?

आज का जो धर्म होना चाहिये, दाता दयाल और परम दयाल जी ने पहले ही बता दिया। अब हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, राधास्वामी यह सब शब्द बहुत ही छोटे पड़ गये हैं। लोग लकीर पीट रहे हैं। आज विज्ञान का युग है और पूरी दुनियाँ एक गाँव की तरह

बन गयी है। थोड़े ही समय में इस कोने से उस कोने तक सब समाचार मिल जाते हैं। सब घटनायें, आँखों के सामने आ जाती हैं। दाता दयाल ने कहा है :–

"Be entire and whole in every thing" परम दयाल जी ने राधास्वामी नाम नहीं रखा अपने मिशन का उन्होंने ''मानवता मन्दिर'' केन्द्र बनाया और नाम रखा :–

(मनुष्य बनो) 'Be Man'

पूरी दुनियाँ के मनुष्य एक ही जैसे हैं और भाई–भाई हैं इनकी गलत समझ है कि हम हिन्दू, मुसलमान, ईसाई हैं और हमारे गुरूओं या अवतारों ने हमको ऐसा – ऐसा कहा है। उन्होंने क्या कहा था वह उस समय ठीक था परन्तु अब बात यह है कि आदमी बहुत बुद्धिमान है अतः खुद थोड़ा 'ध्यान' करके साधना करके समझ ले। आज के आम आदमी को जरूरी है कि जहाँ भी वह है, जो भी काम कर रहा है। सब कुछ करते हुये उसको सहज ध्यान या समाधि का साधन करते हुये अपने अन्दर जो परम सुख छुपा हुआ है उसके अन्दर गोता लगा कर अनुभव करे। यानी मनुष्य का अपना मन ही मन्दिर, मस्जिद, चर्च है। यह जो बाहर के मन्दिर मस्जिद, चर्च बने हैं, इस समय में झगड़े की जड़ बन गये हैं यहाँ इनमें न कोई राम है न अल्लाह या खुदा है। इन्सान के अन्दर हैं। किसी अनुभवी जीवित महापुरूष से ध्यान तथा समाधि का ढंग सीख कर अपने अन्दर गोता लगाकर जो चाहो, अन्दर की आँख से देख लो, सुन लो। यह काम इसी मनुष्य जन्म में समझ लो बाद में समझने व देखने की बात छोड़ो।

आप मेरी बात को समझते हैं कि मैं दाता दयाल जी के हुक्म से ही यह लिख रहा हूँ – उन्होंने परम दयाल जी को कहा था कि 'फकीर समय बदल जायेगा, मेरे तर्जे ब्यान भी लोग पसन्द नहीं करेंगे अतः चोला छोड़ने से पहले तालीम यानी शिक्षा को बदल जाना। उन्होंने बदला और कहा कि भाई मैं किसी के अन्दर नहीं जाता हूँ। यह तो आप का विश्वास है कि मेरा रूप प्रकट करके मदद

ले लिये हो। किसी और महात्मा तथा देवता का विश्वास है तो उससे मदद मिल जाती है। यह बात सैन बैन में पहले भी कही है। ''जिसकी रही भावना जैसी, प्रभु मुरति तिन देखी तैसी''। (गोस्वामी जी)

मुझे खुद के अन्दर के रूप रंगों से कोई वास्ता नहीं पड़ा। शुरू से ही साधन है ''सहजे ही धुन होत है, हर दम घट के माहि।

सुरत शब्द मेला भया, मुंह की हाजत नाहिं।''

सत्संगी भाई, बहन, बेटियां जो मेरा विश्वास करते हैं उनके अन्दर मेरा रूप प्रगट होकर, उनकी मदद करता है और मुझे कुछ मालूम नहीं ! प्रेमवश या भयवश जब मन इकट्ठा होता है, मेरा रूप प्रगट होकर उनकी मदद करता है यह बात पहले पत्रों में भी आप को लिखी है। यह खेल विश्वास का है और विज्ञान के ढंग से (Law of radiation) हर आदमी एक Radio station है। अपने विचार भाव बाहर भेजता है और दूसरों का लेता रहता है।

आपका भाई - लाल चन्द

पत्र आचार्य शिरोमणि कप्तान लाल चन्द

Oct.2002

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी। आपकी सेवा में इससे पहले जो भी पत्र लिखे हैं, वह अधिकतर मेरा निज अनुभव है, जो मैंने पूज्य परमदयाल जी की कपा से प्राप्त किया और जो सत्संगी भाई–बहन मेरे सम्पर्क में आए उनके अनुभव से सम्बन्धित थे। हर आदमी का अनुभव उसकी प्रकति, अधिकार और संस्कार के अनुसार होता है। हम पिछले महापुरूषों का जो साहित्य पढते हैं और सुनते हैं वे अनुभव केवल उनके ही थे। यदि हम उस वाणी को पढ़कर अपना अनुभव उसी की तरह बनाने का यत्न करेंगे तो वह ठीक नहीं हो सकता। आप ने

मेरा अनुभव पढ़ा है, ये तो मेरा ही अनुभव है। दूसरे सज्जन इनको पढ़कर यदि इनकी नकल भी करना चाहें तो सम्भव नहीं है। वक्त गुरू ने हर आदमी को प्रकति, अधिकार और संस्कार के अनुसार साधन की विधि या ढंग ही बताना है फिर साधन करके जो उसका अनुभव होगा, वही ठीक होगा। इसकी सच्चाई भी वक्त गुरू से मिलकर जानी जा सकती है कि क्या मेरा अनुभव सही है या नहीं। ये जितने भी साधन, अभ्यास, सत्संग वक्त गुरू की सेवा, उनका प्रेम जो भी हम उस नाम की प्राप्ति के लिये यत्न कर रहे हैं, उन सबका उद्धेश्य ज्ञान प्राप्त करना है और ज्ञान प्राप्ति का मतलब परम शान्ति की अनुभूति करना है, और यह अनुभूति इसी मनुष्य के जीवन में, शरीर में रहते हुए ही प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा जो भी कुछ कहा गया है, शास्त्रों में लिखा गया है, वह बिल्कुल सत्य है, उस समय के अनुसार जिनके लिये कहा गया था, जो कुछ कहा गया था, वो उस वक्त के हालात, परिस्थिति, मनुष्य की प्रकति के अनुसार कहा गया था। अब यदि सत्संगों मे जैसा हो रहा है कि पुरानी कथाएं, रामायण, गीता, महाभारत और सभी दूसरे ग्रन्थों में लिखा है, उनको ही दोहरना एक लकीर पीटने वाली बात है। इससे तो किसी को शान्ति नहीं मिलती है। जिस परम शान्ति की मैंने ऊपर चर्चा की है, वह तो किसी वीतराग या पूर्ण विवेकी पुरूष की संगत, दर्शन, सेवा, आज्ञा का पालन करके ही हासिल की जा सकती है।

इस समय के अनुसार ज्ञान या परम शान्ति प्राप्त करने का तरीका और विधि भी समय के अनुसार बदल गई है यानी इस समय में यह ज्ञान जहाँ भी आदमी खड़ा हुआ है, जो भी काम वह कर रहा है, जिस हालत में वह जी रहा है, उसी हालत में प्राप्त किया जा सकता है। इसका यह मतलब नहीं कि पहले यह व्यवस्था नहीं थी। पहले भी यही बात थी। जैसे उदाहरण के लिए बुद्ध का शान्ति प्राप्त करने का तरीका ओर था, महाबीर का ओर था, राम–कष्ण के समय और बात थी नाथ–पन्थ वालों के लिये ओर बात थी। सभी सन्तों के लिए भिन्न–भिन्न हालातें थी।

अब इस समय में बहुत ही सहज तरीका है जो मेरे अनुभव में आया है। मैं यह समझता हूँ कि एक वक्त–गुरू और जो वह आज्ञा दे, उसकी आज्ञा में रहकर एक धनी आदमी, व्यापारी, अधिकारी, किसान, मजदूर अपने जीवन निर्वाह के लिए चाहे कुछ भी काम करता हो, वह सहज में इस दुनियाँ में रहते हुए सभी चुनौतियों का सामना करते हुये शोरगुल में रहते हुए उस शान्ति को प्राप्त करने वाले मार्ग पर चलकर परम शान्ति और परम आनन्द की अनुभूति कर सकता है। क्योंकि मेरे साथ यह घटना घटी हुई है और इससे पहले भी यह प्रमाण मिलते हैं कि राजा जनक को राज करते हुए और अर्जुन को युद्ध करते हुये यही उपदेश गीता में दिया गया है सन्त कबीर को कपड़े बुनते हुए और रैदास जी को जूते गांठते हुये इस परम शान्ति की प्राप्ति का विवरण मिलता है। इस समय में यह हालत आम आदमी के लिये खुला दरबार है कि वक्त गुरू की संगत करके चाहे काम I.A.S., I.P.S. यानी बड़े अधिकारी पद पर हो या चपरासी, चौकीदार हो या किसान मजदूर हो, जीवन–निर्वाह का कोई भी साधन अपने प्रारब्ध के अनुसार करते हुए, सहज में साधन करते हुए, सन्त गति की स्थिति को प्राप्त कर सकता है। सन्त का मतलब कोई वेशभूषा से नहीं है, न ही कोई पद या अधिकार से है, केवल सम स्थिति यानी जीवन में सम अवस्था सम हालात में बने रहने का नाम सन्त है। किसी हालत में न घबराना सम भाव में बने रहने का नाम सन्त है। मैंने अपने जीवन मे ंऐसा अनुभव किया है और लगभग दिन रात के अधिक समय में इस हालत का अनुभव करता रहता हूँ। कभी–कभी कुछ समय के लिये जब इस अनुभव से या नाम से मेरी सुरत अलग हो जाती है यानी भूल जाता हूँ, तब मैं असमता में आ जाता हूँ और फिर गुरू कपा से होश में आ जाता हूँ, या चेतवान हो जाता हूँ, और सुरत उस परम शान्ति वाले नाम के साथ जुड़ जाती है। आगे क्या होगा? मरने के बाद कहाँ जाऊँगा? वह उस परम तत्व की मौज का खेल है। न तो इस बात का पहले वाले पुरूषों ने कही साफ कहा है और न कोई अब कह सकता है

कि मरने वाला कहाँ गया है? और अब कहाँ है?

तो आज मैंने आपको मेरा अपना अनुभव और विचार लिखा है, क्योंकि मुझे बहुत से भाई–बहन कहते हैं कि आप हमारे अन्दर प्रगट होकर हमारी सहायता करते हैं और मैं जीवित इस शरीर में रहते हुए यह नहीं जानता हूँ कि किसने मेरा ध्यान किया है और मैंने उसकी क्या सहायता की है? अब आप समझ गये होंगे कि जिन भाई–बहनों के अन्दर उनके गुरू, पीर या इष्ट जो वह मानते हैं, प्रकट होकर उनकी सहायता करते हैं, वो उनका अपना ही विश्वास होता है, जो प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, बाहर से न कोई गुरू आता है, न देवता न कोई भूत–प्रेत। केवल सब मन का खेल है और तरह–तरह के भ्रम पड़े हुए हैं। जो वक्त गुरू की कपा से जीव मन के चक्कर से निकल सकता है।

आपका भाई - लालचन्द

पत्र आचार्य शिरोमणि कप्तान लाल चन्द जी

Nov. 2002

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

दाता दयाल जी ने अपने समय में तत्व ज्ञान या आत्म ज्ञान को बहुत ही सरल तरीके से समझाने की हर तरह से कोशिश की थी। हमारे देश में यह तत्व ज्ञान मंत्र और तंत्र दो तरीकों से महापुरूषों ने प्राप्त किया है। यानी 1. मन मत 2. गुरू मत! गुरूमत के विषय में दाता दयाल ने बहुत ही खुलकर बताया है और इसका महत्व भी समझाने का यत्न किया है। तंत्र के विषय में भी जिसको मनमत कहते हैं इसके विषय में भी संक्षेप में बताया है। और उसका महत्व भी समझाने का यत्न किया हैं। परन्तु उन्होंने लिखा है कि यह बहुत बड़ा जाल है यदि इसके साधन में कोई उलझ जाता

है तो निकल नहीं सकता और उसका जीवन बर्बाद भी हो सकता है।

मेरा अपना अनुभव विशेष प्रकार का है। यानी जिस तरह से मुझे इस ज्ञान की अनुभूति हुई है, आज का आदमी मानने को तैयार नहीं है कि 10-15 मिनटों में किसी महात्मा के पास बैठने से सहज ही बिना वार्तालाप के इस ज्ञान की अनुभूति हो जाना, एक नई और विशेष बात है और आम आदमी के लिये इसकी चर्चा भी कोई महत्व नहीं रखती है। आम आदमी के लिये गुरूमत का सीधा तरीका है, जिससे ग्रन्थ भरे हुए हैं। भक्ति के द्वारा वहाँ तक पहुँचना, निष्काम कर्म के द्वारा सांख्य–ज्ञान के द्वारा तथा बुद्धि–योग का समत्व बुद्धि योग तथा सुरत–शब्द योग जो गुरूमत में प्रचलित है और इससे ग्रन्थ भरे हुए हैं। ऋषि, मुनि, अवतार और संतों ने आज के युग में इस विषय पर बहुत ही सहज साधन के ढंग व तरीके बताये हुये हैं। पतंजलि योग में मंत्र और तंत्र दोनों के लगभग 112 या 114 विधि साधन अभ्यास की बताई गई हैं।

जिसमें तांत्रिक महात्माओं ने अपने साधन और ढंगों को बहुत ही गुप्त रखा था। इस समय में इस तंत्र की विद्या को अध्ययन करके आचार्य रजनीश ने तंत्र की विधियों को बहुत ही साफ तरीके से सर्वसाधारण को साधन करके इस जीवन को आनन्दमय बिताते हुए अंत में परम शान्ति व परम आनन्द को प्राप्त करने की भिन्न–भिन्न विधियों का वर्णन किया है। परन्तु यह लम्बा कोर्स है, कोई नई बात नहीं है। इससे पहले ही महापुरूषों ने इस ज्ञान को यानि तंत्र को जिसका मतलब होता है ''तन'' आप जानते हैं इस तन में ही मन और आत्मा रहती हैं 'तन' और मन स्वस्थ हों तभी हमको आत्मिक अनुभूति हो सकती है तंत्र से ज्ञान प्राप्त करने के लिये दो तरीके बताये हैं – जो एक तो है – ध्यान का तरीका। इस राह पर चलने वाले महापुरूष जैसे तिलोपा और चीन के महात्मा लाओत्से तथा और भी महापुरूष हुए हैं। दूसरा है – प्रेम के मार्ग पर चलने वाले। यह 1. विज्ञान भैरवी तंत्र, 2. मालिनी विजय तंत्र। यह प्रेम का मार्ग है। इसमें शिव–पार्वती संवाद है। पार्वती प्रश्न करती है कि हे शिव!

आपको मैं समझ नहीं सकती कि आप क्या हैं? जो शिव पार्वती को प्रेम मार्ग बताते हैं कि जहाँ प्रेम उत्कर्ष (उच्च) अवस्था में होता है समाप्त होता है उसमें मैं शून्य या शान्ति हूँ। कहने का मतलब यह है प्रेम मार्ग पर चलने वाले भी इस अवस्था को सहज ही प्राप्त कर जाते हैं। असली बात है आदमी की प्रकति, परिस्थिति और हालात भिन्न–भिन्न है। इसलिये परम शान्ति को प्राप्त करने का ढंग, तरीका और विधि भी उसकी प्रकति के अनुसार होती है। एक ही लाठी से जैसा कि आजकल महापुरूष लोग हाँक रहे हैं इस तरह से उस परम शान्ति या परम आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती परन्तु बेकार नहीं है। संस्कार दिये नहीं जाते हैं। और संस्कारों के इकट्ठा होने पर सत्संग की बलिहारी से आदमी को होश आता है अर्थात् चेत हो जाता है। और उसकी जिज्ञासा बढ़ जाती है। तब वो किसी वक्त गुरू के पास जाता है और वक्त गुरू आदमी के संस्कार, अधिकार देखकर उसको विधि या तरीका बताता है, जिससे वो सहज ही साधन–अभ्यास करते अपने जीवन को आनन्द मय बना लेता है। तो जरूरत है समय के वक्त गुरू की।

इस विषय में गुरू नानक देव ने कहा है –

''पूरा सतगुरू खोजिए, पूरी होये जुगत।
हसंदिया, खेलदियां, पीवंदिया, वीचे होय मुक्त।।''

इसका भाव यह है कि सब तरह के भोग भोगते हुऐ लोग कमाकर जीते ही मुक्ति का अनुभव करना। यह भाव दूसरे महात्माओं ने भी व्यक्त किये हैं। जैसे – कबीर साहब ने कहा –

''कहा कहें अनकही भली है, वहाँ तो वेद शास्त्र कछु नहीं है।
वहाँ अकथ यहाँ कथा चली है, कहें कबीर सुनो भाई साधो, सोहं हंसा सर्व मयी है।।''

यानी भाव यह है कि उस अनुभव में केवल परम आनन्द या परम शान्ति की अनुभूति अपने अन्दर ही होती है। और ये जो सत्संग देते हैं, कथा कहते हैं, ऐसी कोई बात वहाँ नहीं है। आजकल सुबह सवेरे टेलीविजन पर महात्माओं की जो लाइन देखते हैं वह महात्मा

किस दर्जे के हैं और क्या ज्ञान दे रहे हैं इसकी आम आदमी को समझ नहीं है। कुछ महात्मा है जैसे आशाराम, मुरारी बापू, सुधांशु जी महाराज ये कथाकार है। और बहुत ही सुन्दर संस्कार लोगों को देते हैं जिससे उनका जीवन बदलता जाता है। परन्तु अंत में इन जीवों को वक्त गुरू के सामने जाना पड़ेगा और वहाँ से परम शान्ति और परम आनन्द प्राप्त करने वाले ज्ञान की विधि मिलेगी। परन्तु यह महात्मा धन्य हैं जो जीवों को सुन्दर संस्कार देते हैं, बिना संस्कार के आत्म ज्ञान की अनुभूति नहीं हो सकती। दूसरे कुछ महात्मा तांत्रिक हैं जो यह भी जीव को सुन्दर संस्कार देकर अपने ढंग से यानी तंत्र की विधि से उस ज्ञान के लिये तैयार करते हैं। जिसमें जो विधियाँ बताते हैं ये सब पतंजलि योग में लिखी हुई हैं परन्तु जिस महापुरूष ने जिस साधन के द्वारा सफलता प्राप्त की हो, वो बताता है। परन्तु ये बात भी हर जीव पर लागू नहीं होती। आदमी की प्रकति, परिस्थिति, स्वभाव और संस्कार के अनुसार ही साधन बताया जाये तभी उसको परम शान्ति और परम आनन्द की अनुभूति होगी।

मैंने आपको पहले भी कई पत्रों में लिखा है कि मेरे साथ जो घटना हुई वह अलग ही तरह की है, जो शायद हजारों, लाखों, साधान करने वाले सज्जनों में एक–दो के साथ घटती है। क्योंकि मैं न तो कोई साधन करता हूँ, न जीवन में किसी तरह की कठिनाई हुई है। जीवन सहज, प्राकतिक ढंग से सुख, आनन्द का अनुभव करते हुए चल रहा है और संसारिक चीजों का कोई अभाव जीवन में अनुभव नहीं करता हूँ। अभी मेरी 78 साल की उम्र है। आज तक जो जीवन जीया हूँ बहुत ही आनन्द, रस, प्रेम, खुशी, उमंग यानी ''सदा दिवाली साध के आठों पहर आनन्द'' रहा है। मैं अपने जीवन को एक पर्व, त्यौहार या व्यवहार मानता हूँ। लोग मुझे यह जान ही नहीं सकते कि मैं अध्यात्म में ओत प्रोत रहते हुए जीवन जी रहा हूँ। क्योंकि सहज का साधन मैं करता नहीं हूँ, अपने आप ही हो रहा है। जैसे कबीर साहब ने कहा :–

''सहजे ही धुन होत है, हरदम घट के माहिं।।
सुरत शब्द मेला भया, मुँह की हाजत नाहिं।।''

परन्तु यह जो आप को ऊपर लिखा यह सब ज्ञान और अनुभव सुरत शब्द अभ्यासी को सहज ही मालूम होता है क्योंकि वह अधिक समय समता में रहता है। समता के लिये सुरत शब्द योग की आवश्यकता है। बिना इसके जीव समता में रह नहीं सकता। मैंने जो अनुभव किया या समझ टूटे–फूटे शब्दों में आपकी सेवा में लिखा है। हो सकता है मेरा अनुभव गलत हो। मेरा कोई दावा नहीं। अपना अनुभव है।

आपका फकीरमय लाल चन्द

पत्र आचार्य शिरोमणि कप्तान लाल चन्द्र

Dec.2002

प्यारे सम्पादक

श्री ई० उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैंने आपको बहुत से सत्संग सुना दिये हैं, जिसमें लगभग जीवन की सभी समस्याओं पर कुछ कहा है। आज मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि मनुष्य जीवन बहुत ही बहुमूल्य है परन्तु हमें जीना नहीं आता। इसके कारण बजाय जीवन सुखमय होने के, अति चिंता, डर, भय, के कारण यह जीवन नरक हो रहा है। यह बात किसी एक आदमी की नहीं है जहाँ तक मेरा अनुभव है पूरे विश्व के मनुष्यों में से शायद ही कोई ऐसा हो जो यह कह सके कि मुझे किसी प्रकार का कोई दुःख नहीं है। अब विश्व की बात तो बड़ी है हम ज्यादा परिवार में जी रहे हैं। परिवार में आजकल पति, पत्नी और उसके बच्चे हैं। आजकल बड़े परिवार का समय नहीं रहा है। अब पारिवारिक जीवन को देखता हूँ तो पहले पति–पत्नी का जीवन और

उनकी समस्या यह की बजाय प्रेम के कलह और अनबन का जीवन है। जिस घर में पति–पत्नी का प्रेम नहीं है वो घर नरक समझें, और जो उनके संतान होगी वो भी पति–पत्नी की डुप्लीकेट होगी। क्योंकि आज माँ–बाप अपने बच्चों या संतान से शिकायते हैं।

मैंने यह अनुभव किया है कि पति–पत्नी का आपस में प्रेम हो तो उनकी संतान प्रेम वाली होगी और सबसे बड़ी बात यह है कि माँ जैसा चाहे वैसी संतान पैदा कर सकती है। जब से मुझे ये बात समझ में आयी है मैंने बहुत लोगों पर प्रयोग किया है और उनको बताया है कि तुम यह इच्छा रख कर पैदा करो कि हे परमात्मा मुझे ऐसी संतान दो जो मुझे सुख दे, मेरे परिवार को सुख दे, मेरे गाँव को सुख दे, मेरे देश को सुख दे और जहाँ–जहाँ मनुष्य जाति रह रही है, उन सभी मनुष्यों को सुख दे ऐसी संतान आप मुझे दें।

अब आप समझ सकते हैं कि यदि माँ के ऐसे विचार हैं संतान के लिये तो कोई भी मनुष्य सबको सुख दे ही नहीं सकता इसलिए माँ क्या चाहती है? वो चाहती है कि हे प्रभु तू मेरे घर बच्चा बन कर आओ, मैं आप का लालन पालन करूँगी, शिक्षा–दीक्षा दूँगी और आप ऐसे आदमी बनो कि मेरे से लेकर पूरी मनुष्य जाति को सुख दो, क्योंकि मनुष्य जाति दुःखी है। ऐसे विचार वाली माँ के घर वो परमात्मा या तो कोई अवतार बन कर पैदा होगा या कोई ऐसा वैज्ञानिक पैदा होगा जो ऊपर के ग्रह से रोशनी लेकर मनुष्य जाति को सुख देने वाली चीज पैदा कर देगा।

कारण यह है कि यह संसार संकल्पमय है। जिसके जैसे संकल्प होंगे वैसा ही जीवन बनता जायेगा। कुछ उदाहरण है पिछले जमाने की माताओं के जैसे – अभिमन्यु ने चक्रव्यूह बिंधने का ज्ञान माँ के पेट में ही प्राप्त किया। अकबर दी ग्रेट माँ के संकल्प के अनुसार ही सम्राट बना। यानी पहले तो माँ की इच्छा कि मैं कैसी संतान पैदा करूं? दूसरा जब बच्चा माँ के पेट में हो और माँ चोरी करती हो तो उसे चोरी के संस्कार मिल जायेंगे। माँ, पति या सास की आज्ञा नहीं मानती तो बच्चा भी आज्ञा नहीं मानेगा। जब बच्चा

पेट में होता है और माँ पति के साथ सहयोग करती है यानी Sex भोगती है तो बच्चा समय से पहले ही कामी बन जायेगा। मेरा भाव यह है कि देश का सुधार नेता या महात्मा नहीं कर सकते। केवल माताएँ कर सकती हैं। तो जो मैं बता रहा हूँ घर–घर में कलह है इसका कारण हमें संतान पैदा करने का ढंग मालूम नहीं। आज के विज्ञान ने सब चीजों में सुधार किया है। अन्न में, सब्जियों में, जानवरों में परन्तु मनुष्य कैसे पैदा करे? जो सबको सुख दे, प्रेम भाव से जीये। इस जीवन को या इस जमीन को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है, इस पर कोई विचार नहीं किया गया। लोग नशा करते हैं, घरों में झगड़ा होता है, हेरा–फेरी करते हैं। उनके दिमागों में तरह–तरह के गलत विचार होते हैं और इसी समय पति–पत्नी के सहयोग से संतान गर्भ में आ जाती है। तो बीज रूप में उस बच्चे में कमजोर विचार होते हैं। दूसरा माँ के पेट में बच्चा पलता है जब तक बच्चा माँ के पेट में रहता है तब तक जो–जो विचार, जो–जो भाव, जो–जो काम माँ करती है वे बच्चे के रग–रग में होता है। उसके बाद जैसे बाहर की उसकी संगत होती है, जो कुछ देखता है, जो कुछ सुनता है, जो कुछ पढ़ता है वैसे ही विचार उसके बनते जाते हैं। तो आज जो हम अपने घरों में, देश में या अपनी इस दुनियां में उपद्रव देख रहे हैं चोरी, डाका बलात्कार ये सब बच्चे के बीज रूप में या संगत से लिये हुए संस्कारों का फल है। सुधार का ढंग मेरी छोटी बुद्धि है, परन्तु मैं समझता हूँ यदि इस समय के युवा लोग सन्तानोत्पत्ति से पहिले ये मेरी बात समझ लें और इन पर अमल करके सन्तानोत्पत्ति करें तो उनको ये समस्याऐं नहीं होंगी, जो आज हो रही हैं।

मनुष्य की अगली चीज है, यह शरीर भोजन से बनता है। जैसा अन्न वैसा मन। एक दिन ठीक भोजन हजम हो जाये तो एक बूँद खून की किसी उम्र तक बनती है। तीस बूँद खून की होने पर एक बूँद ऊर्जा की बनती है, और तीस बून्द ऊर्जा से एक बून्द वीर्य की बनती है, जिससे मनुष्य पैदा होता है। जो मनुष्य का जीवन है

वो ऊर्जा और वीर्य पर है। यदि इसी शक्ति को यानी वीर्य को स्वाद के लिए हम खो देते हैं तो हमारा माथा थोथा हो जाता है। यदि इसी वीर्य को अच्छी संतान के लिये संभोग करें तो हमारे जैसा आदर्श मनुष्य पैदा हो सकता है। आजकल जो Media है वो सब आदमी को कामातुर बना रही है। या तो मानसिक भोग या शारीरिक भोग। इससे शक्ति मनुष्य की समाप्त हो जाती है। जिससे कई प्रकार के रोग जैसे – चिन्ता, डर, भय, क्रोध, गलत काम में रूचि, घटिया विचार ये सब उर्जा की कमी के कारण होते हैं, जिससे B.P., Heart और कई तरह के नये–नये रोग पैदा हो जाते हैं।

तो आज मैंने संतान की जो कलह है उसको सदा के लिये दूर करने का ढंग लिखा है। जिसको मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है कि माँ चाहे तो अपने घरों में देवता स्वरूप सुख देने वाले, आज्ञाकारी, दुनियां का भला करने वाले पुत्र पैदा कर सकती है। उनके विचार में बहुत शक्ति है। जैसे बच्चा पेट में होता है और टी०वी० देखती हे तो जो–जो संस्कार ग्रहण करेगी, वैसा ही बच्चे पर प्रभाव होगा। मेरी सलाह है यदि बच्चा पेट में हो तो माँ को टी०वी० के ज्ञान से परहेज करना चाहिये और ऐसे हालात से जिससे उसके मनपर बुरा प्रभाव पड़े या घटिया विचार पैदा हों ऐसी हालत से बचना चाहिये।

मनुष्यों को शरीर से और मन से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये कहा गया है ब्रह्मचर्य ही जीवन है, वीर्यनाश ही मत्यु। लोगों ने Sex को ''खीर खाँड'' समझा हुआ है और इसी कारण से हर तरह की अशांति उनके जीवन की समस्या बनी हुई है। ये मेरा विचार है और अनुभव है। हो सकता है और भी करण हो अशांति के परन्तु सबसे बड़ा कारण Sex है। जो जीवन पर बहुत ही गहरा प्रभाव रखता है यानी 'अति' हर चीज की खराब है।

आपका फकीरमय लालचन्द

पत्र आचार्य प्रवर कप्तान लाल चंद जी

Jan. 2003

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

मैंने परम दयाल जी की संगत सेवा, दर्शन कर के जो अपने जीवन में अनुभव किया, समझा, वही बात आप की सेवा में पत्रों द्वारा लिखता रहा हूँ। आज कल हरियाणा से एक बेटी जो सन्त सतगुरू ताराचन्द जी महाराज की शिष्या है, उसका लगभग रोज सुबह फोन आता है और वह अपना अनुभव लिखती है कि कभी तो ताराचन्द जी महाराज प्रकट होते हैं और कभी मैं कैप्टिन लालचन्द प्रकट होकर उसकी समाधि लगवा कर उसको आसमान पर बहुत गहरे प्रकाश में तैरने को कहता हूँ। वह बहुत आनन्द लेती है, प्रकाश को देख कर उसमें तैरती है और भी बहुत चमत्कार की बातें बताती है।

अब मैं तो वहाँ जाता नहीं और न मुझे यह ज्ञान है कि कब वह मेरा ध्यान करती है। यह सब उसके विश्वास का फल है और मन की शक्ति है, जो वह रूप प्रकट कर के उससे अपनी इच्छा पूरी करती है। यदि सन्त तारा चन्द जी महाराज शरीर में होते तो मैं उनसे भी जरूर पूछता कि महाराज जी मैं तो जाता नहीं और न मुझे कुछ मालूम है क्या आप उसमें प्रकट होते हो? इस तरह की बातें बहुत सज्जन बताते हैं परन्तु मैंने आपको पहले भी लिखा है कि यह तो आदमी के मन की शक्ति है जो श्रद्धा विश्वास से रूप बना कर उसीसे अपनी सहायता कराता है। इसी को सन्त मत में काल और माया कहा है। यह मानसिक योग है, जो इस लोक में सफलता मिलती है, सिद्धि शक्ति होती है। इस लोक का जीवन सफलता, प्रेम, विश्वास, आश से सुन्दर बनता रहता है परन्तु साथ ही किसी पूर्ण विवेकी, अनुभवी पुरूष का सत्संग जरूरी है, नहीं तो ऐसे साधन करने वाले सज्जन जिनको संकल्प का ज्ञान न हो तो बुरी तरह गिर सकते हैं अतः साधन के साथ–साथ किसी पूरे गुरू का सत्संग

बहुत जरूरी है। अब सवाल यह है कि पूरा गुरू कैसा है और उसकी पहचान क्या है? इसका उत्तर राधास्वामी वाणी के अनुसार समझें –

''गुरू वही जो शब्द स्नेही, शब्द बिना दूसर नहीं होई।
शब्द कमावे वह गुरू पूरा, उन चरनन की बनजा धूरा।।
शब्द भेद लेकर तुम उनसे, शब्द कमाओ तुम तन मन से।।

योग में यह सबसे उत्तम साधन है। इससे मन समता में रहने लगता है। इसी को पतंजलि भगवान ने वीतराग पुरूष कहा है। ऐसा महापुरूष साधक के साधन की हालत देख कर उसको सही सलाह देता है, जिससे गिरने का भय नहीं रहता और न वह अन्तर के नजारे देख कर किसी तरह से भटकेगा।

आप बुद्धिमान हैं यह समय पहला नहीं रहा बहुत कुछ बदल गया है। आज हमारे गुरू, पीर और धार्मिक आचार्य अपने सतसंगों में पुरानी कथा या पहले महापुरूषों ने जो कहा और लिखा है, उन्हीं बातों को दोहराने को ही सत्संग समझते हैं। यदि किसी को कुछ अनुभव भी है तो उसे गुप्त या रहस्य में रखा जाता है यही कारण है कि सत्संगों में बहुत भीड़ है। बात या समझ किसी के पल्ले नहीं पड़ती है।

यह काल समझ, विवेक, अनुभूति और ज्ञान देने का नाम ही गुरू है। कोई भी धार्मिक ग्रंथ यह काम नहीं कर सकते केवल जीवित अनुभवी महापुरूष अपने सत्संगों में मनुष्य के भरम शंकाओं का समाधान करके उसको सही मार्ग दर्शन कर सकते हैं।

जैसा मैं कहता हूँ कि लोग मेरा रूप अपने श्रद्धा विश्वास से प्रकट करके उससे सहायता लेते हैं परन्तु मुझे कुछ मालूम नहीं होता कि किसने मेरा ध्यान करके लाभ उठाया। जो जाहिर है कि मेरे में कोई शक्ति नहीं है शक्ति जिसने विश्वास किया और भयवश या प्रेम वश जब उसका मन एकाग्र हुआ, उस मनुष्य के मन में शक्ति है। बात असली यह है।

यदि गुरू महाराज यह सच्चाई अपने सत्संगों में बता दें तो जीव के बहुत से भरम दूर हो सकते हैं और जो सदा रहने वाली

शान्ति चाहता है या परम आनन्द चाहता है वह इन रंग रूप रेखा से आगे, समझ कर जीव उस परम शन्ति को पा सकता है।

जब तक यह सच्चाई सत्संगों में नहीं बताई जायेगी जीव पूरी उमर अपने अन्दर गुरू के स्वरूप में ही उलझा रहेगा और नये–नये चमत्कारों में ही अटका रहेगा। आगे का गुरू शब्द है। जैसा कहा है :–

''गुरू शब्द को कीजिए, बहुतक गुरू लबार।
अपने-अपने स्वाद में ठौर-ठौर बटमार।। (कबीर साहब)

परन्तु इस लोक का जीवन सुन्दर बनाने के लिये गुरू स्वरूप का ध्यान और शिव संकल्प जरूरी है। जब यह लोक बन जाये तब आगे का रास्ता शब्द का है।

वैसे मेरे खुद के साथ यह बात नहीं घटी। मेरा तो लोक अपने आप परम दयाल जी के अपार दया से बनता गया और लोक, परलोक अपने आप बनते गये यानी कुछ भी करना धरना या परलोक के लिये नहीं करना पड़ा, परन्तु यह बात सब के लिये नहीं कही जा सकती। पहले हम अपना लोक बनाये क्योंकि हम गहस्थी हैं और गहस्थी के पास सब कुछ चाहिये। इसीलिये सन्यासियों वाली बात गहस्थी के लिये लागू नहीं होती।

आपका फकीरमय कप्तान लालचन्द

पत्र आचार्य प्रवर कप्तान लाल चन्द जी

Feb. 2003

प्यारे आचार्य उमेश चन्द्र जी वर्मा,

सप्रेम राधास्वामी।

अभी दो चार दिन पहले एक सज्जन का पत्र आया है। वह लिखते हैं कि उन्होंने आप द्वारा भेजी हुई पत्रिका में मेरा पत्र पढ़ा और जानना चाहते हैं कि आप ने भोग में जोग की बात लिखी है, वह

ठीक समझ में नहीं आयी। मैं मानता हूँ कि उनका सवाल या प्रश्न बिलकुल ठीक है।

मैं अपना अनुभव जो पत्रों में आपकी सेवा में लिखता हूँ यह मेरा कर्म समझो या सनातन धर्म, राधास्वामी धर्म या दुनियाँ के जितने भी धर्म या पन्थ हैं सब ने जो भी अपना अनुभव इस लाइन पर चलने से हुआ, उसको लिखकर या सत्संग देकर, आने वाले सज्जनों के लिये बता दिया कि उसके साथ क्या बीती।

असल में जिनको पुस्तकों में लिखी सच्चाई का अनुभव इसी ही जीवन में करना है वो किसी जीवित अनुभवी महापुरूष की संगत करके इस सच्चाई का अनुभव खुद कर लें। मैंने एक अनुभव किया है और यह समझा है। आप मेरे भाव को समझ गये होंगे कि :–

''सच्चाई न तो लिखी जा सकती है न ही बताई जा सकती है, जो लिखा जाता है और बताया जाता है वह सच्चाई नहीं हो सकती है।'' तो फिर वह तत्व या अध्यात्म क्या है और कैसे जाना जाये? इसके लिए जो मैंने अनुभव किया या समझा है :– किसी जीवित पूर्ण विवेकी या अनुभवी महापुरूष की संगत, दर्शन सेवा करके खुद अनुभव कर लो। साधना अभ्यास भी उसकी सलाह या राय लेकर करते जाओ। इसी ही को ''गुरू मत'' कहते हैं।

अब आप का प्रश्न हो सकता है कि यह जितने भी ग्रंथ लिखे गये हैं या सत्संग दिये जा रहे हैं इनका फिर क्या लाभ हुआ? यह सब बहुत लाभ की बाते हैं, सच्चाई, परमसुख, परमआनन्द के खोजियों के लिए, परन्तु केवल इनके पढ़ने से और केवल सत्संग को सुनने से यदि वह परम सुख और परम शान्ति प्राप्ति होती तो फिर आज जो मानव जाति की दशा है वह नहीं होती। यह हमारी दुनियाँ स्वर्ग बन जाती। मेरा भाव है यह बहुत जरूरी है और हमारे पास पहले जो इस रास्ते पर चले हैं, जो सिद्धियाँ, सफलता उनको मिली थी, उसका लेखा जोखा है और प्रमाण है। जहाँ तक इस अनुभव की बात है उसके लिए यह समझो कि ''दिल बहलाने को गालिब ख्याल अच्छा है''।

मैं भी आपको यह पत्र लिख रहा हूँ यह भी उसी की तरह

समझ लेना कि ''दिल बहलाने को गालिब ख्याल अच्छा है'' इसके पढ़ने से सच्चाई के खोजी के भरम, शंका दूर हो सकते हैं परन्तु परम सुख व परम शान्ति की अनुभूति इन पत्रों को पढ़ने से होने वाली बात नहीं है। आप मेरा भाव समझ गये होंगे कि ''पुस्तकों में राजे खुदा नहीं है''

जैसे यह पत्र लिखना मेरी मजबूरी है न चाहते हुए कोई शक्ति जबरन लिखवा रही है, इसी ही तरह धर्म ग्रन्थ लिखने वालों और सत्संग देने वालों को भी उनके कर्म या किसी शक्ति ने मज़बूर किया लिखने या सत्संग देने को। पहले महापुरूषों ने सुन्दर शब्दों में ऐसा कह दिया :–

''होई है वही, जो राम रचि राखा, को कर तर्क बढ़ावै शाखा''

(गोस्वामी तुलसीदास जी)

प्यारे सम्पादक साहब, अब मैं 79 वर्ष में चल रहा हूँ अति प्रसन्नता, आनन्द, मंगल का जीवन जी रहा हूँ यानी मेरे लिए भोग और जोग या योग दो अलग रास्ते नहीं रहे। एक ही बात है। जैसे दुःख और सुख दोनों जीवन का अंग हैं। मन के अनुकूल हो गया तो सुख और मन के प्रतिकूल हो जाये तो दुःख। हम अनुभव करते हैं यही बात हमारे समझ में आ जाए कि दोनो ही हालतें जीवन का अंग हैं तो हम दोनों को समझ विवेक से स्वीकार करें, फिर कोई समस्या नहीं रहती है। जीवन की कुछ मूल आवश्यकतायें हैं जैसे – खाना, पीना, पढ़ना, रहने को मकान आदि और कुछ इच्छाएं हैं दोनों हालतों को भोगते हुए यदि एकाग्रता बनी रहती है तो भोग में जोग या योग का आनन्द लेते रहते हैं। आप जो भी काम कर रहे हैं और मन एकाग्र है तो योग है यह कोई नई बात नहीं है जैसे गीता में कर्म योग, की चर्चा है यही बात यहाँ कही गयी है। हम जो भी काम कर रहे हैं एकाग्र मन से करें, यह कर्म योग है। संतमत में इसको गुरू की मौज का नाम दिया है। सनातन में प्रभु इच्छा पर रहना कहा है। बात एक है सिर्फ शब्दों और तर्जेब्यान का फर्क है।

प्यारे सम्पादक जी मुझे लिखना नहीं आता है, आप मेरा भाव समझे कि गुरू कपा से जब उस साधन या तत्व की अनुभूति हो जाये तब वही और जिस स्थिति में आप साधना करना चाहें, चाहे भीड़ हो चाहे सफर बस का हो चाहे रेल का किसी भी जहाज का हो, चाहे भोजन करते यानी जब और जहां जिस हालत में आप हो और काम आप अपने जीवन निर्वाह के लिए करते हैं, सहज में उस आनन्द का या शान्ति का साधन कर सकते हैं। वास्तव में कुछ करना धरना नहीं होगा सहज में अपने आप होता रहेगा। मैंने ऐसा अनुभव किया है और अब कर रहा हूँ। कल की गुरू जाने क्या हो। 1956 से यह अनुभव कर रहा हूँ। दूसरे महापुरूषों ने भी इसका इशारा किया है:–

''सहजे ही धुन होत है, हर दम घट के माहिं।
सुरत शब्द मेला भया मुंह की हाजत नाहि।''

(कबीर साहब)

''शब्द बिना सारा जग अन्धा।
काटे कौन मोह का फंदा।।''

(राधास्वामी दयाल)

किसी प्यारे भाई ने भोग और जोग की बात पूछी थी अतः मेरे अनुभव में भोग और जोग कोई अलग नहीं है। दो शब्द हैं उस अनुभव को करने के लिये। एक भोग और दूसरा त्याग या इस को जोग या योग कहो। भाई मैं तो कोई सन्त महात्मा नहीं हूँ साधारण आदमी हूँ। आप का जहाँ विश्वास बने किसी अनुभवी महापुरूष जो जीवित हो और हमारी ही तरह गहस्थी हो उस का सत्संग सुनो, उसके दर्शन करो आप साफ मन करके अपने आप में सच्चे बन कर इस तरफ चलो, आप जो भी चाहते हो सहज में मिल जायेगा। अब आप अपने आप में अच्छे बन कर जिस चीज की चाह या इच्छा कर उस की तलाश करेंगे, तब उसका दरवाजा आपके लिये खुल जायेगा। मेरा यह अनुभव है। मेरे साथ एक घटना घटी हुई है, इस लिये लिखने का साहस कर रहा हूँ।

''फैज का दर है खुला, बन्द नहीं हरगिज।
शर्त यह है कोई मांगने सायल आये।।''

इस जीवन का रस लेते हुए जो सदा रहने वाला परम आनन्द और सदा रहने वाली शान्ति है, उसका इसी ही जीवन में खुद अनुभव कर लो। गुरू नाम किसी आदमी या मूर्ति का नहीं है। गुरू नाम सही समझ, विवेक, अनुभूति और ज्ञान का है। यह कोई आदमी जो हमारी तरह का जीवन जी रहा है, हमारी तरह गहस्थी हो, वही गहस्थी को सही समझ, विवेक, अनुभूति और ज्ञान दे सकता है। जहाँ से और जिस महापुरूष से हम को यह वस्तु मिले, ले लो।

आप यदि मेरे भाव समझ रहे हैं तो खुद सोच समझ कर देख लो और करना धरना भी कुछ नहीं है, अपने आप सच्चे बन कर जो चाहत हो उसकी लगन, तड़प, चाह, उमंग मन में कर के अंतर्मुख प्रार्थना करो और यत्न करो, आप का काम बन जायेगा और जीवन का आनन्द लेते हुए, सब जो चाहोगे मिलेगा।

प्यारे उमेश चन्द्र जी वर्मा मैंने जो अपने जीवन में आज तक का अनुभव किया या समझा आप को साफ लिख दिया है। हो सकता है मैं गलती या भ्रम में हूँ तो आप परम दयाल जी, दाता दयाल जी के तथा आचार्य दूसरे संत गुरूओं से प्रार्थना है कि मेरे को मार्ग दर्शन करें।

अब जब सत्संगी लोग जो मेरे में विश्वास करते हैं मेरा रूप प्रकट हो कर उनकी मदद करता परन्तु मुझे कुछ मालूम नहीं है। यह सब उनका विश्वास काम करता है। उनके मन में बहुत शक्ति है और यह सब विश्वास का खेल है।

''जिसकी रही भावना जैसी हरि मूरत देखी तिन तैसी''।

(गोस्वामी जी)

आपका फकीरमय मानवमय
कप्तान लालचन्द

के पश्चात् मैं अपनी जिज्ञासा के समाधान हेतु हजूर महाराज कप्तान लालचन्द जी के पीछे–२ एक छोटे से जनसमूह के साथ–२ चल पड़ी। अचानक उस महान विभूति ने रूक कर पीछे मुड़ कर देखा और मेरे बोलने से पहले ही मेरा परिचय पूछा तथा कहा कि जो तूं चाहती है, वो यहां नहीं मिल सकता। ज्यादा विस्तार से न कह कर इतना ही कहूंगी कि जिस वस्तु की मुझे तलाश थी, जरूरत थी, वह वस्तु मुझे उन महानुभाव परम सन्त हजूर महाराज लालचन्द जी की अपार अनुकम्पा, संग व आर्शीवाद से प्राप्त हुई।

हजूर महाराज जी के द्वारा लिखे गए ये पत्र मेरे जीवन के लिए अमूल्य कोष व अनमोल उपहार स्वरूप हैं, जो कि बहुत ही सारगर्भित, सच्चाई से परिपूर्ण एवं रहस्य को उद्घाटित करने वाले हैं। ये मनुष्य के अज्ञान को नष्ट कर आन्तरिक सच्चाई को प्रदर्शित करने वाले हैं। इनका अध्ययन करने से धर्म से सम्बन्धित मनुष्य के काफी भ्रम व शंकाए दूर हो सकती हैं। यहां अल्प शब्दों में बहुत कुछ कह दिया गया है या यूं कहिए कि गागर में सागर भर दिया है। मुझे पूरी आशा है कि ये छोटे–२ पत्र रूपी सत्संग मनुष्य के जीवन में सुख शान्ति लाने एवं उसे आत्म ज्ञान की ओर प्रेरित करने में काफी सहायक सिद्ध होंगे।

इन पत्रों को पुस्तक के रूप में जनहित के लिए प्रकाशित करवाने में वकील साहब जयमल जी का योगदान सराहनीय है, जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया है। इनके प्रति मैं हृदय से कतज्ञ व अत्यन्त आभारी हूँ। इसके साथ ही मैं कार्यकारी अभियन्ता जिले सिंह जी के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस शुभ कार्य में अपना आर्थिक योगदान देकर इस पुस्तक को छपवाने में मेरी सहायता की है। आशा है सभी पाठक इस पुस्तक से लाभान्वित होंगे।

धन्यवाद।

डा० कमला देवी

लाल कमल

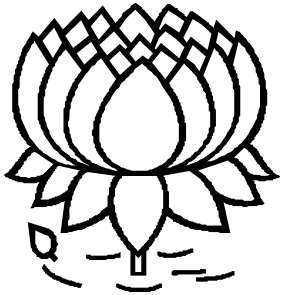

आत्म ज्ञान–पत्र

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	
2.	आत्म ज्ञान–पत्र	1-53
3.	आत्म ज्ञान–पत्र	54-118

द्वितीय संस्करण, वर्ष 2005

संकलनकर्त्री : डा० कमला
प्राध्यापिका,एम०एम०कॉलेज,फतेहाबाद

पता:

जयमल सिंह, एडवोकेट
कोठी नं० 332, सैक्टर 15-A
हिसार 125001 (हरियाणा)
✆ 01662-244725

सर्वाधिकार सुरक्षित

अप्रैल २००३

(यह पुस्तक कैप्टन लाल चन्द जी के आध्यात्मिक पत्रों पर आधारित है)

।। राधास्वामी ।।

प्राक्कथन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर के परम स्नेही हजूर महाराज परम सन्त कप्तान लाल चन्द जी महाराज द्वारा भेजे गए अलौकिक ज्ञान से भरपूर, दुर्लभ परमार्थी पत्र, जो समय–२ पर मुझको सन्त मत पथ पर चलने को प्रेरित करने के लिए भेजते रहे और जिनके द्वारा मुझे अध्यात्म की सीढ़ी चढ़ने में अपूर्व सहायता मिली, उन पत्रों को हजूर महराज जी की अनुमति से अध्यात्म ज्ञान की तरफ रूचि रखने वाले जीवों के कल्याण के लिए प्रकाशित करवाने का प्रयास किया है। इसके साथ ही इस पुस्तक में उन पत्रों का संकलन भी किया गया है, जो ''महर्षि शिव वार्ता'' नामक मासिक पत्रिका में सम्पादक आचार्य उमेश चन्द्र वर्मा को लक्ष्य करके लिखे गए हैं। ये पत्र व्यक्तिगत नाम से अवश्य हैं, परन्तु इन पत्रों के माध्यम से इसमें समस्त ज्ञान गंगा प्रवाहित कर दी गई है, जिसमें स्नान कर मनुष्य के समस्त कष्टों का निवारण हो सकता है और जीवन सुखमय बन सकता है।

वैसे तो आज गुरूओं की भरमार है। परन्तु देखना यह है कि सत्य क्या है? मैं कौन हूँ। कहाँ से आया हूँ और मेरे जीवन का प्रयोजन क्या है? ये सब बातें ऐसी हैं, जिनको मनुष्य किसी न किसी स्थिति में सोचने को, जानने को मजबूर होता है और इधर उधर गुरू की तलाश करना शुरू कर देता है, इसी जिज्ञासा ने मुझको बारह वर्ष तक भटकाया। आखिरकार मानवदयाल जी महाराज, होशियारपुर के सान्निध्य में पहुंची, जिनकी दया से मेरे सभी दुनियावी (संसारी) कार्य सम्पन्न हुए। परन्तु जिस वस्तु की मुझे खोज थी, उसका भ्रम बना रहा। साल में हर वार्षिक सत्संग में मानव–मन्दिर होशियारपुर में जाती रही, जिज्ञासा बढ़ती गई परन्तु सार तत्व का ज्ञान न हुआ। इसी प्रकार वर्ष 1991 में मैं वार्षिक सत्संग में गई हुई थी। सत्संग